राष्ट्रीय दैनिक

प्रातःकिरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

11 पीसीबी ने ड्रॉट शेड्यूल में भारत के सभी मैच लाहौर में ...

राफा में नरसंहार रोकने की कोशिश; नेतन्याहू को मनाने में जुटा ... 12

वर्ष : 14 | अंक : 348 | नई दिल्ली, शुक्रवार, 03 मई, 2024 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

मौसम

अधिकतम तापमान 31°C

न्यूनतम तापमान 25.0°C

हां	30%
नहीं	50%
कह नहीं सकते	10%

बाजार

सोना	59,340
चांदी	55,350
सेंसेक्स	63,327
निफ्टी	18,816

संक्षिप्त खबरें

यूएससीआईआरएफ राजनीतिक एजेंडा वाला पक्षपाती संगठन : भारत

नई दिल्ली। भारत ने बृहस्पतिवार को अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता संबंधी अमेरिकी आयोग पर तीखा हमला करते हुए कहा कि वार्षिक रिपोर्ट के नाम पर भारत को लेकर उसका दुष्प्रचार प्रकाशित करना जारी है। धार्मिक स्वतंत्रता के कथित उल्लंघन को लेकर भारत की आलोचना करने वाली यूएससीआईआरएफ रिपोर्ट पर असामान्य रूप से तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने कहा कि उसे राजनीतिक एजेंडे वाले पक्षपाती संगठन के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा, हमें यह उम्मीद नहीं है कि अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता पर अमेरिकी आयोग भारत के विविधतापूर्ण, बहुलवादी और लोकतांत्रिक लोकाचार को समझने की कोशिश भी करेगा। जायसवाल ने अपनी साप्ताहिक मीडिया ब्रीफिंग में कहा, दुनिया की सबसे बड़ी चुनावी प्रक्रिया में हस्तक्षेप करने की उनकी कोशिश कभी सफल नहीं होगी। अपनी नई वार्षिक रिपोर्ट में, यूएससीआईआरएफ ने धार्मिक स्वतंत्रता के कथित उल्लंघन के साथ ही कुछ अन्य मुद्दों पर भारत की आलोचना की है।

भाजपा में शामिल हुईं अभिनेत्री रूपाली गांगुली

नई दिल्ली। लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान से पहले मशहूर अभिनेत्री और चर्चित टेलीविजन सीरियल अनुपमा में मुख्य किरदार निभाने वाली रुपाली गांगुली बुधवार को भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गईं। भाजपा महासचिव विनोद तावड़े, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी अनिल बलूनी और सह-प्रभारी संजय मयूख की मौजूदगी में उन्होंने यहां भाजपा मुख्यालय में पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। तावड़े ने गांगुली का पार्टी में स्वागत किया और इस अवसर का इस्तेमाल सपा नेता मारिया आलम की वोट जिहाद की अपील को लेकर विपक्षी दलों पर हमला करने के लिए किया। आलम ने फरुखाबाद लोकसभा सीट से विपक्षी इंडिया गठबंधन के उम्मीदवार के लिए वोट मांगते हुए वोट जिहाद का आह्वान किया था और कहा था कि मौजूदा हालात में अल्पसंख्यक समुदाय के लिए भाजपा को सत्ता से बेदखल करना जरूरी है।

रसोई गैस सिलेंडर फटने से महिला और तीन बच्चों की जलकर मौत

किशनगंज-पटना। बिहार के किशनगंज जिले के पौआखाली इलाके में एक घर में रसोई गैस के एक सिलेंडर के अचानक फटने के बाद लगी आग में 30 वर्षीय एक महिला और उसके तीन बच्चों की जलकर बुधवार सुबह मौत हो गई जबकि दो अन्य घायल हो गए। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने किशनगंज जिले के पौआखाली इलाके के ननकार गांव में एक घर में खाना बनाने के दौरान रसोई गैस सिलेंडर के अचानक फटने से हुए हादसे में चार लोगों की जान जाने पर शोक संवेदना व्यक्त की है। मुख्यमंत्री कार्यालय से जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार, नीतीश ने इस हादसे को अत्यंत दुखद बताते हुए घटना में घायल हुए लोगों के समुचित इलाज का निर्देश दिया और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। मुख्यमंत्री ने ईश्वर से मृतक के परिजनों को दुख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है। किशनगंज के जिलाधिकारी तुषार सिंगला ने बताया, मैंने मामले की जांच के आदेश दिए हैं। वरिष्ठ अधिकारी विस्फोट के कारण का पता लगाने के लिए घटना स्थल पर पहुंच गए हैं।

मुख्यमंत्री ने मधेपुरा व सुपौल लोस सीट के लिए चुनावी सभा को किया संबोधित

हमारे लिए पूरा बिहार ही हमारा परिवार है : नीतीश

- सीएम का तंज -उनके लिए तो परिवार ही सबकुछ है
- विपक्ष वाला खाली क्रेडिट लेने में जुटा रहता है

प्रात : किरण

पटना/सुपौल/ मधेपुरा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार मुख्य विपक्षी दल राजद पर एक बार फिर हमला बोला है। मुख्यमंत्री ने गुरुवार को सुपौल के राघोपुर प्रखंड स्थित लखीचंद साहू उच्च विद्यालय मैदान में आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि 2005 के पहले वह लोग 15 साल शासन किए। तब कोई काम होता था? कहीं बिजली थी? सड़क था? अपने जब कुर्सी छोड़ना पड़ा तो पत्नी को मुख्यमंत्री बनाया। अब बेटा बेटी, सबको चुनाव मैदान में उतार दिया है। उनके लिए तो परिवार ही सबकुछ है। हम 2005 में आए तो सारा काम कराए और अभी भी हो ही रहा है।

हर घर बिजली पहुंचाए, सड़क से लेकर अस्पताल और शिक्षण संस्थान बनवाए। पैसा नहीं था तो विश्व बैंक से कर्जा लिए। क्योंकि हमारे लिए पूरा बिहार ही हमारा परिवार है। मंच पर जितने लोग बैठे हैं, किसी का परिवार राजनीति में नहीं है। जाति जनगणना हम करवाए और आरक्षण को 50 फीसदी से बढा कर 65 फीसदी कर दिए। लेकिन विपक्ष वाला खाली क्रेडिट लेने में जुटा रहता है। केंद्र सरकार के तरफ से गरीब सवर्ण के लिए भी 10 फीसदी आरक्षण लागू है। नगर निकाय और पंचायत चुनाव में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिए हुए हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि 2005 के पहले हम केंद्र सरकार में भी मंत्री थे। तब देखते थे कि विभिन्न राज्यों में स्वयं सहायता समूह चल रहा है। जब बिहार में हमको मौका मिला तो विश्व बैंक से कर्जा लेकर महिलाओं का स्वयं सहायता समूह बनाए और उसका नाम रखे जीविका। बाद में उस समय के केंद्र के सरकार ने हमारा ही मॉडल देखकर पूरे देश में आजीविका नाम से स्वयं सहायता समूह बनाया। आज बिहार में 10 लाख से ज्यादा जीविका समूह है, जिसमें एक करोड़ से ज्यादा महिला शामिल है और सबको हम जीविका दीदी बुलाते हैं।

अब तो शहर में भी दीदियों का समूह बन रहा है। सीएम ने कहा कि हर पंचायत में पंचायत सरकार भवन बनवा रहे हैं और अगले साल तक सबका काम पूरा हो जाएगा। पहले लोग केंद्र और राज्य सरकार को ही सरकार समझते थे। हम अब पंचायत को भी अपना सरकार दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि 2005 से पहले सरकारी अस्पताल में महीना में 39 मरीज जाता था इलाज कराने और अब यह स्थिति है कि प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में महीना में 11000 से ज्यादा मरीज का इलाज होता है। हर जिला में इंजीनियरिंग कॉलेज और पॉलिटेक्निक कॉलेज खुल गया है। हर अनुमंडल में एएनएम और जीएनएम कॉलेज खोले हैं। कृषि फीडर से किसानों को बिजली दे रहे हैं।

सीएम ने कहा कि 2020 के चुनाव में हम लोग बोले थे कि 10 लाख नौकरी और 10 लाख रोजगार देंगे। अभी तक 3 लाख लोगों को नौकरी और 5 लाख को रोजगार दे चुके हैं। एक लाख नौकरी पाइपलाइन में है, वह भी जल्दी पूरा हो जाएगा। इस साल के अंत तक जो 10 लाख नौकरी का वादा किए हैं, वह पूरा करेंगे, और जरूरत पड़ेगा तो उससे ज्यादा भी बहाली करेंगे। लेकिन जिस पार्टी को 15 साल जनता ने मौका दिया और कुछ काम नहीं किया वह लोग झूठ बोलकर वोट मांगने आता है। वोट डालते समय इस बात को याद रखिएगा। सीएम ने कहा कि 2008 में जब कोशिका बांध टूटा था तब सहरसा सुपौल और मधेपुरा के लोग कुशहा त्रासदी में परेशान थे। तब भी हम लोग यहां लगातार काम में जुटे रहे। बहुत काम कर चुके हैं, और जो बाकी बचा है, उस पर भी काम चल ही रहा है। सुपौल में 605 करोड़ की लागत से लोहिया मेडिकल कॉलेज का निर्माण हो रहा है। सीएम ने अन्य कई उपलब्धियां भी गिनाई और लोगों से निवर्तमान जदयू सांसद दिलेश्वर कामैत के पक्ष में मतदान की अपील की। इस दौरान मंत्री विजेंद्र प्रसाद यादव, विधायक अनिरुद्ध प्रसाद यादव, विधान परिषद के पूर्व कार्यकारी सभापति हारून रशीद सहित अन्य नेता और बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

राजद शासनकाल में भय एवं भ्रष्टाचार का माहौल था : उदाकिशुनगंज में नीतीश कुमार ने पार्टी प्रत्याशी के पक्ष में चुनावी सभा करते राजद और कांग्रेस पर जोरदार हमला किया।उन्होंने कहा कि मेरे लिए पूरा बिहार एक परिवार की तरह है। कुछ लोग अपना परिवार पत्नी, बेटा, बेटी को मानते हैं। जदयू और बीजेपी का कोई परिवार है क्या। एनडीए प्रत्याशी दिनेश चंद्र यादव के समर्थन में गुरुवार को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उदाकिशुनगंज अनुमंडल मुख्यालय स्थित हरिहर साहा महाविद्यालय मैदान में एक जनसभा को संबोधित करते यह बातें कही।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने साल 2005 के पूर्व के बिहार की याद दिलाते हुए कहा कि बिहार में भय एवं भ्रष्टाचार का माहौल था। उस समय बिहार का सालाना बजट 24 हजार करोड़ रूपया था, लेकिन अभी बिहार का सालाना बजट दो लाख 72 हजार करोड़ रूपया है। कहा कि स्वास्थ्य, शिक्षा, सड़क सहित अन्य क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि बिहार के सभी मदरसा को मान्यता भी दे दी गई है। जिसे अन्य सरकारी स्कूलों की तरह लाभ भी दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि बिहार में चार लाख से ज्यादा लोगों को रोजगार दिया गया है और बहुत जल्द एक लाख और लोगों को रोजगार दिया जाएगा। इसलिए आप लोग दायें बाएं मत देखिए और एनडीए प्रत्याशी को भारी मतों से चुनाव जिताइये। उन्होने कहा कि लालू परिवार सिर्फ अपने ही परिवार के बारे में सोचता है और हम पूरे बिहार के बारे में सोचते हैं। इस दौरान मंच पर मंत्री विजय कुमार चौधरी के साथ एनडीए घटक दल के कई नेता मौजूद रहे।

केन्द्रीय रक्षामंत्री ने चुनावी सभा को किया संबोधित

लोकतंत्र बिना लोकलाज के नहीं चल सकता : राजनाथ

बोलें-जनता को प्रधानमंत्री मोदी की गारंटी पर भरोसा है

प्रात : किरण

छपरा/एजेंसी। केंद्रीय रक्षामंत्री एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता राजनाथ सिंह ने कांग्रेस और राष्ट्रीय जनता दल पर आरोप लगाते हुए कहा कि भ्रष्टाचार मामलों में आरोपित होने के बावजूद ये दोनों दल लोगों के बीच जाकर वोट मांग रहे हैं, इनमें थोड़ी तो लोक-लाज होनी चाहिए। श्री सिंह ने गुरुवार को सारण संसदीय क्षेत्र से राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन उम्मीदवार राजीव प्रताप रूडी के नामांकन पत्र दाखिल करने के बाद यहां आयोजित जनसभा को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस-राजद पर भ्रष्टाचार का आरोप है। ये लोग बिना भ्रष्टाचार के चल ही नहीं सकते हैं। उसके बाद भी लोगों के बीच जाकर वोट मांगते हैं। थोड़ी तो लोक-लाज होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र बिना लोकलाज के नहीं चल सकता है। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि केंद्र सरकार से चला 100 पैसा पूरा का पूरा ही आपके क्षेत्र में चला आता है जबकि पूर्व की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन (संप्रग) सरकार में 100 में से 85 पैसे ऊपर ही ऊपर खत्म हो जाते थे और मात्र 15 पैसे ही आपके पास आते थे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आधार कार्ड, जनधन और मोबाइल की त्रिमूर्ति के कारण ही यह काम सम्भव हो सका है। श्री सिंह ने कहा, आप एक सांसद नहीं बल्कि एक बड़ी हस्ती को चुनने जा रहे हैं। राजीव प्रताप रूडी सांसद हैं और दिल्ली में कम समय देते हैं। पूछे जाने पर बताते हैं कि जिस जनता ने मुझे चुनकर भेजा है उनके बीच रहने की कोशिश करता हूं। उन्होंने कहा, राजीव प्रताप रूडी एक कुशल पायलट हैं और मुझे भरोसा है कि वे बाकी सभी को हवा में उड़ा देंगे। केंद्रीय रक्षा मंत्री ने कहा कि सारण की जनता को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी पर भरोसा है। अब मुझे यह भी भरोसा है कि बिहार में लालटेन युग की वापसी नहीं होगी। इस मौके पर श्री रूडी ने सारण से राजद उम्मीदवार और पार्टी अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव की पुत्री रोहिणी आचार्य पर जमकर निशाना साधा और कहा, रोहिणी ने वोट के लिए खून का हवाला दिया, इसका क्या मतलब है।

चुनाव के दौरान प्रस्तावित योजनाओं के लाभार्थियों के सर्वे पर कार्रवाई करेगा आयोग

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। चुनाव आयोग ने चुनाव के दौरान राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों द्वारा अपनी प्रस्तावित योजनाओं के लिए संभावित लाभार्थीयों के सर्वेक्षण और लोगों से विवरण की अपील जारी न करने के निर्देश दिए हैं। आयोग ने अधिकारियों से इसका उल्लंघन करने वालों के विरुद्ध कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए हैं। आयोग ने गुरुवार को कहा कि उसने इस तरह के सर्वे और अपील को गंभीरता से लिया है और इसे जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 (1) के तहत मतदाताओं को रिश्वत देने जैसा भ्रष्टाचार मानता है। आयोग की एक विज्ञप्ति में कहा गया है, कुछ राजनीतिक दल और उम्मीदवार ऐसी गतिविधियों में संलग्न रहे हैं जो किसी वैध सर्वेक्षण और चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के लिए व्यक्तियों को पंजीकृत करने के पक्षपातपूर्ण प्रयासों के बीच के अंतर को धुंधला करती हैं। आयोग ने इस समय चल रहे आम चुनाव 2024 में इस प्रकार की विभिन्न घटनाओं पर गौर करते हुए आज इस सबंध में एक परामर्श-पत्र जारी किया है।

इसमें सभी राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय राजनीतिक दलों को किसी भी विज्ञापन/सर्वेक्षण/ऐप के माध्यम से चुनाव के बाद लाभार्थी-उन्मुख योजनाओं के लिए व्यक्तियों को पंजीकृत करने वाली किसी भी गतिविधि को तुरंत बंद करने और उससे दूर रहने के लिए कहा गया है। आयोग ने कहा कि चुनाव के बाद के प्रस्तावित लाभों के लिए पंजीकरण करने के लिए व्यक्तिगत मतदाताओं को आमंत्रित करना या उनका आह्वान करना उनके बीच पारस्परिक लेन-देन के सौदे का आभास उत्पन्न कर सकता है।

यह एक विशेष तरीके से एकतरफा मतदान के प्रलोभन की व्यवस्था है। आयोग ने सभी जिला निर्वाचन अधिकारियों को वैधानिक प्रावधानों के तहत ऐसे किसी भी विज्ञापन के खिलाफ उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया है, जैसे कि लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 127 ए, लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 123 (1), और भारतीय दंड संहिता की धारा 171 (बी) के तहत कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं।

राजग शासन में ही बिहार का हुआ है विकास : नड्डा

कहा- भारत 2027 तक तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था भी बनेगा

प्रात : किरण

अररिया/एजेंसी । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा ने बृहस्पतिवार को विपक्षी गठबंधन इंडिया पर निशाना साधते हुए इसे भ्रष्ट लोगों और राजनीति में परिवारवाद को बढ़ावा देने वालों का कुनबा बताया। नड्डा ने अररिया में भाजपा प्रत्याशी प्रदीप कुमार सिंह के समर्थन में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए आरोप लगाया कि विपक्षी गठबंधन भ्रष्ट लोगों की रक्षा कर रहा है जबकि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश में भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

उन्होंने कहा, मोदी जी के 10 साल सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण के रहे। एक तरफ सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण है, तो दूसरी तरफ राष्ट्रीय जनता दल (राजद)-कांग्रेस के शासन की लूट, कुशासन और उनके परिवार का कल्याण। नड्डा ने कहा कि राजग शासन में ही बिहार का विकास हुआ है। उन्होंने कहा कि वाराणसी से कोलकाता तक छह लेन का कॉरिडोर भी बनाया जा रहा है जो बिहार से होकर गुजरेगा। नड्डा ने कहा, जब मोदी जी सत्ता में आए तो हम अर्थव्यवस्था के मामले में दुनिया में 11वें स्थान पर थे और अब हम ब्रिटेन और अन्य मजबूत देशों को पीछे छोड़कर पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गये हैं। मोदी जी के नेतृत्व में भारत 2027 तक तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था भी बनेगा। इंडिया पर निशाना साधते हुए कहा, मैंने जे पी आंदोलन के समय के लालू प्रसाद को भी देखा है जो अब राहुल गांधी (कांग्रेस नेता) को मटन बनाना सिखा रहे हैं। यह कैसी जुगलबंदी हो रही है। जिस लालू प्रसाद ने जयप्रकाश नारायण (जेपी) आंदोलन के समय परिवारवाद, भाई-भतीजावाद, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठायी थी, आज वही आकंठ भ्रष्टाचार में डूबकर उन कांग्रेसियों के साथ हाथ मिलाकर खड़े हो गए जिनके खिलाफ आपातकाल के दौरान आपने लड़ाई लड़ी थी। उन्होंने कहा, आज आरजेडी का मतलब रिश्वतखोरी, जंगलराज और दलदल है। आर का मतलब रिश्वतखोरी, जे का मतलब जंगलराज और डी का मतलब दलदल है। नड्डा ने कहा कि इंडिया गठबंधन के ज्यादातर नेता या तो जेल में हैं या जमानत पर हैं। उन्होंने कहा कि मोदी भ्रष्टाचार खत्म करना चाहते हैं लेकिन इंडिया गठबंधन के नेता भ्रष्ट लोगों को बचाने का आह्वान करते हैं। उन्होंने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि इस पार्टी ने कोयला घोटाला, पनडुब्बी घोटाला, हेलीकॉप्टर घोटाला, 2जी घोटाला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला किया। नड्डा ने कहा कि मोदी सरकार ने कोविड महामारी का बेहतरीन ढंग से मुकाबला किया। उन्होंने कहा, कोरोना का टीका देश को नौ महीने में ही मिल गया था। सौ देशों को टीका भेजा गया और 48 देशों को हमने मुफ्त में टीका दिया। मोदी जी के नेतृत्व में भारत, मांगने वाला भारत नहीं, देने वाला भारत बन गया है। उन्होंने दावा किया आज गरीब, वंचित, पीड़ित, दलित, बच्चे, युवा, महिला और किसान प्रधानमंत्री मोदी की नीतियों के कारण ताकतवर हो गये हैं।

17 महीनों में 5 लाख लोगों को नौकरियां दी : तेजस्वी

प्रात : किरण

पटना। नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव भाजपा पर लगातार हमलावर हैं। तेजस्वी अपने चुनावी सभाओं में लगातार नौकरी, रोजगार को लेकर पीएम मोदी पर निशाना साध रहे हैं। अब तेजस्वी यादव ने दुनिया में चार चीजों का जिक्र किया है। उन्होंने अपने सोशल एकाउंट एक्स पर लिखा है कि यह कभी संभव नहीं हो सकता है। जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के लिए लिखा है कि उनके लिए यह काम कर पाना असंभव है। जिन चार चीजों का होना तेजस्वी यादव ने असंभव बताया है। उनमें सूरज का पश्चिम से उगना, रेगिस्तान में मछली पकड़ना, आसमान में पेड़ लगाना शामिल है। इसके अलावा जिस चौथी चीज को तेजस्वी यादव ने असंभव बताया है। वह है नौकरी, रोजगार, प्रेम अमन व भाईचारे की बात पीएम मोदी से सुनना। तेजस्वी यादव अपनी कई सभाओं में अपने 17 महीने के कार्यकाल में बिहार में चार लाख नौकरी का जिक्र करते हुए नजर आते हैं। साथ ही वह लगातार पीएम मोदी पर यह आरोप लगाते रहे हैं कि वह कभी भी नौकरी , रोजगार, प्रेम अमन व भाईचारे की बात नहीं करते हैं। वहीं, गुरूवार को मीडिया से बातचीत करते हुए तेजस्वी ने कहा है कि सर्वप्रथम देश-प्रदेश में हमने 10 लाख नौकरियों की बात की तो मुख्यमंत्री कहते थे कि यह असंभव है, बजट में पैसा कहाँ से आएगा? केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण को पटना बुलाकर भाजपा ने घोषणा पत्र जारी किया और कहा कि भाजपा 19 लाख रोजगार देगी। ये लोग 17 वर्षो तक सरकार में रहे कभी नौकरी-रोजगार नहीं दिया। 17 महीनों में हमने उपमुख्यमंत्री की हैसियत से ही 5 लाख नौकरियां दी और 3 लाख प्रक्रियाधीन करवाई।

राहुल ने भाजपा पर लगाया प्रज्वल रेवन्ना का समर्थन करने का आरोप

प्रात : किरण

शिवमोग्गा/एजेंसी। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने गुरुवार को हासन के सांसद एवं जद (एस) नेता प्रज्वल रेवन्ना पर जोरदार हमला करते हुए हालिया सेक्स स्कैंडल को सामूहिक दुष्कर्म बताया और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा के पोते को समर्थन देने का आरोप लगाया। श्री गांधी ने यहां एक चुनावी रैली के दौरान जोर देकर कहा, प्रत्येक भाजपा नेता अच्छी तरह से जानता था कि प्रज्वल रेवन्ना एक सामूहिक दुष्कर्मी है, फिर भी उन्होंने जेडीएस के साथ गठबंधन करके उसका समर्थन करने का फैसला किया। उन्होंने प्रज्वल रेवन्ना पर जघन्य अपराधों का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, प्रज्वल रेवन्ना ने 400 महिलाओं के साथ बलात्कार किया और वीडियो रिकॉर्ड किया। प्रधानमंत्री मोदी ने मंच पर एक सामूहिक बलात्कारी का खुले तौर पर समर्थन किया। उन्होंने श्री मोदी से महिलाओं से माफी मांगने की मांग की।इस बीच, कर्नाटक के गृह मंत्री डॉ. जी परमेश्वर ने आज घोषणा की कि प्रज्वल की गिरफ्तारी के लिए लुकआउट नोटिस जारी किया गया है, क्योंकि उस पर महिलाओं के यौन शोषण के आरोप हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि अपनी विदेश यात्रा के कारण विशेष जांच दल के सामने पेश होने के लिए सात दिन की मोहलत की प्रज्वल की याचिका के बावजूद, 24 घंटे से अधिक समय देने का कोई प्रावधान मौजूद नहीं है। डॉ. परमेश्वर ने कहा, जैसे ही पता चला कि प्रज्वल विदेश चला गया है, लुकआउट नोटिस जारी कर दिया गया है। हमने लुकआउट नोटिस के बारे में सभी बंदरगाहों और हवाई अड्डों को सूचित कर दिया है।

चुनाव | **पीएम मोदी ने चुनावी जनसभा को किया संबोधित, विपक्ष पर कसा तंज**

यह चुनाव मोदी के मिशन के लिए है न कि निजी महत्वाकांक्षा के लिए: प्रधानमंत्री

प्रात : किरण

जूनागढ़/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बृहस्पतिवार को कहा कि मौजूदा लोकसभा चुनाव उनकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए नहीं, बल्कि उनके मिशन को पूरा करने के लिए है। उन्होंने गुजरात के जूनागढ़ में एक चुनावी रैली में कहा कि एक मजबूत और स्थिर सरकार न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, ये चुनाव मेरी महत्वाकांक्षा के लिए नहीं हैं, क्योंकि लोगों ने 2014 में उस महत्वाकांक्षा को पूरा किया है। 2024 का चुनाव मोदी के मिशन के लिए है। विपक्षी कांग्रेस पर खतरनाक मानसिकता रखने का आरोप लगाते हुए मोदी ने कहा कि इसका घोषणापत्र मुस्लिम लीग की भाषा में लिखा गया है। प्रधानमंत्री ने दावा किया कि कांग्रेस के लिए यह चुनाव अपना अस्तित्व बचाने के लिए है और इसके वास्ते वह अपने मजहबी वोट बैंक की मदद ले रही है। अपने संबोधन में उन्होंने कांग्रेस को जम्मू एवं कशमीर में अनुच्छेद 370 बहाल करने, संशोधित नागरिकता कानून हटाने और तीन तलाक को प्रतिबंधित करने वाले कानून को खत्म करने की चुनौती दी। उन्होंने कहा, मैंने अनुच्छेद 370 को दफन कर दिया है। यह अब चला गया है। मैं कांग्रेस के शाही परिवार और उसके शहजादे को चुनौती देना चाहता हूं कि अगर आपका छिपा हुआ एजेंडा है तो खुले में आइए और लोगों को बताएं कि आप अनुच्छेद 370 बहाल करने की कोशिश करेंगे। मोदी ने कहा, मैं देखना चाहता हूं कि बाबा साहेब आंबेडकर द्वारा लिखे गए संविधान का अपमान करने का उनमें कितना साहस है। आप (कांग्रेस) असफल होंगे क्योंकि यह मोदी (आपके रास्ते में खड़ा) है। कच्चातिवु द्वीप विवाद का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि कांग्रेस शासन के दौरान, केंद्र सरकार को भारत के पास द्वीपों की सटीक संख्या के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने कहा, मैंने फिर उपग्रह से सर्वेक्षण कराया और पाया कि हमारे पास 1,300 द्वीप हैं। उनमें से कुछ सिंगापुर जितने बड़े हैं। हम उनमें से कुछ को पर्यटन उद्देश्यों के लिए विकसित करेंगे। उन्होंने कहा कि हाल ही में कांग्रेस के एक नेता ने दक्षिण भारत को अलग करने और एक नया राष्ट्र बनाने की बात कही थी जबकि विपक्षी ह्यइंडियाह्व गठबंधन के सदस्य भी इसी तरह के बयान देते हैं। मोदी ने कहा, कांग्रेस नेताओं को विभाजन की यह मानसिकता विरासत में मिली है। यह कांग्रेस ही थी जिसने सत्ता के लिए देश के विभाजन को स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने करीब 30 साल पहले श्रीलंका को कच्चातिवु द्वीप उपहार में दिया था मानो यह उनकी निजी संपत्ति थी। उन्होंने कहा, यदि सरदार पटेल मौजूद नहीं होते तो जूनागढ़ पाकिस्तान चला गया होता। अगर कांग्रेस सत्ता में आती है तो देश के लिए खतरनाक स्थिति पैदा करेगी। वे कच्छ के रेगिस्तान को यह कहकर छोड़ सकते हैं कि वहां कोई नहीं रहता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस को इसकी परवाह नहीं है और उसने कई निर्जन द्वीप दिए हैं। उन्होंने कहा कि अगर खुली छूट दी गई तो वह पार्टी हिमालय की चोटियों को बेच देगी। भगवान राम और भगवान शिव से संबंधित एक हालिया टिप्पणी के लिए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे पर हमला करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि विपक्षी दल ने ऐलान किया है कि यह चुनाव भगवान राम के खिलाफ लड़ाई है। उन्होंने कहा, कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा कि उनका उद्देश्य भगवान राम को हराना है और भगवान शिव भगवान राम को हराएंगे।

वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन बने नौसेना के वाइस चीफ, कार्यभार संभाला

प्रात : किरण

नई दिल्ली/एजेंसी। केंद्र सरकार ने वाइस एडमिरल कृष्णा स्वामीनाथन को नौसेना का अगला उप प्रमुख नियुक्त किया है। उन्होंने बुधवार को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक पर पुष्पचक्र चढ़ाकर देश की सेवा में सर्वोच्च बलिदान देने वाले बहादुरों को याद करके पदभार ग्रहण किया। उन्हें साउथ ब्लॉक में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। वर्तमान कार्यभार से पहले वे नौसेना मुख्यालय में कार्मिक प्रमुख के पद पर तैनात थे। फ्लैग ऑफिसर को 01 जुलाई, 1987 को भारतीय नौसेना में नियुक्त किया गया था और वह संचार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में विशेषज्ञ हैं। वह राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला, संयुक्त सेवा कमान और स्टाफ कॉलेज श्रीवेनहम, यूनाइटेड किंगडम, कॉलेज ऑफ नेवल वारफेयर, करंजा और यूनाइटेड स्टेट्स नेवल वॉर कॉलेज, न्यूपोर्ट, रोड आइलैंड, यूएसए के पूर्व छात्र हैं। अति विशिष्ट सेवा मेडल और विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित वाइस एडमिरल ने अपने नौसैनिक करियर में कई प्रमुख परिचालन स्टाफ और प्रशिक्षण नियुक्तियों पर काम किया है। उन्होंने विमानवाहक पोत आईएनएस विक्रमादित्य के अलावा मिसाइल जहाजों आईएनएस विद्युत, आईएनएस विनाश, मिसाइल कार्वेट आईएनएस कुलिश, निर्देशित मिसाइल विध्वंसक आईएनएस मैसूर और आईएनएस मैसूर की कमान संभाली है। रियर एडमिरल के पद पर पदोन्नति पर उन्होंने दक्षिणी नौसेना कमान मुख्यालय में मुख्य कर्मचारी अधिकारी (प्रशिक्षण) के रूप में कार्य किया और भारतीय नौसेना में प्रशिक्षण के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने भारतीय नौसेना सुरक्षा टीम के गठन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो नौसेना के सभी क्षेत्रों में परिचालन सुरक्षा की देखरेख करती है।

संक्षिप्त समाचार

समूह की महिलाओं के स्वावलंबन में मददगार बनेगी मनरेगा

रुद्रपुर, एजेंसी। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के समूह की महिलाओं को मनरेगा से जोड़ने की पहल की गई है। स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए अब मनरेगा से जोड़ा जा रहा है। ग्रामीण महिलाओं को अधिक से अधिक कार्य देने के लिए इसका दायरा बढ़ाया जा रहा है। जिले में मनरेगा के तहत अभी तक 71 अमृत सरोवर तैयार किए गए हैं। यह सरोवर जहां जल संचयन के एक बड़े माध्यम साबित हो रहे हैं, वहीं महिलाओं के आय के स्रोत भी बन रहे हैं। अब इन सरोवरों की संचालन की जिम्मेदारी समूह की महिलाओं को सौंपी जाएगी। इनका रख-रखाव के साथ ही इसमें मत्स्यपालन भी करेंगी। इससे सरोवर तो जीवित रहेंगे ही, महिलाओं को भी रोजगार मिलता रहेगा। समूह की महिलाओं को पशुबाड़ा, बकरी बाड़ा आदि का लाभ भी दिया जा रहा है। इस वित्तीय वर्ष में ऐसी महिलाओं को चिह्नित कर उन्हें व्यक्तिगत लाभ दिया जाएगा। समूह की महिलाओं के आर्थिक उन्नयन के लिए विभिन्न प्रयास किए जा रहे हैं। कृषि से लेकर उद्यानीकरण तक अब महिलाएं करेंगी। इसमें बाजपुर में महिलाओं के लिए उद्यान विभाग के प्रयास से ड्रैगन फूट की खेती की जाएगी। इसका देखरेख महिलाएं ही करेंगी।

ढांग के नीचे दबने से मजदूर की मौत

सुल्तानपुर पट्टी, एजेंसी। खेत में काम करने गया एक मजदूर मिट्टी की ढांग के नीचे दबने से घायल हो गया। इस दौरान आसपास खड़े लोगों ने घायल को मिट्टी से निकलकर काशीपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर उसे मुरादाबाद हायर सेंटर रेफर कर दिया गया, जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। सुल्तानपुर पट्टी के रतन कॉलोनी निवासी नाजिर हुसैन (55) सहित चार लोग बक्शी घाट पर खेतों में मजदूरी करने गए थे । तेज गर्मी के चलते नाजिर हुसैन सहित चार लोग बराबर में बने मिट्टी की ढांग किनारे बैठे थे। अचानक ढांग गिरने से नाजिर हुसैन दब गया, जबकि तीन लोगो ने भाग कर अपनी जान बचाई। मौके पर खड़े लोगो ने नाजिर हुसैन को मिट्टी से बाहर निकालकर काशीपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया। हालत गंभीर होने पर उसे मुरादाबाद हायर सेंटर रेफर कर दिया । जहां डॉक्टर ने नाजिर हुसैन को मृत घोषित कर दिया।

हीट वेव को लेकर स्वास्थ्य विभाग का अलर्ट

हल्द्वानी, एजेंसी। तापमान लगातार 38-39 डिग्री के बीच चल रहा है। मौसम विभाग के अनुसार, गर्मी अभी और ज्यादा होने के आसार हैं। स्वास्थ्य निदेशालय ने स्वास्थ्य विभाग को अलर्ट मोड पर रखा है। इस बार गर्मी प्रभावित जिलों में लू लगने वाले वाले व्यक्ति के लिए अस्पताल में एसी रूम में रखे जाने को कहा गया है। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग की टीम ऐसे मरीजों पर निगरानी भी रखेगी। निदेशालय ने पर्याप्त मात्रा में औषधियों का भंडारण करने को भी कहा है। जिला और उपजिला अस्पतालों, सीएचसी, पीएचसी सेंटरों को भेजे गए निर्देश में अत्यधिक गर्मी व लू लगने की संभावना को देखते हुए अस्पतालों में पर्याप्त मात्रा में आईस पैक रखने को कहा गया है। लू प्रभावित मरीज को एसी युक्त कमरे में भर्ती करने के साथ ही उसे ओआरएस पैकेट मुहैया कराए जाएंगे। निदेशालय ने आशा कार्यकर्ताओं को भी ओआरएस पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। अस्पताल पहुंचने वाले मरीजों और उनके तीमारदारों के लिए परिसर में बैठने की व्यवस्था करने, साफ ठंडा पानी उपलब्ध कराने और वार्डों में मरीजों के लिए कूलर और पंखे की व्यवस्था करने को कहा गया है। निदेशालय ने अत्यधिक गर्मी में होने वाली स्वास्थ्य समस्याओं की जानकारी देने के साथ ही प्रचार-प्रसार करने को भी कहा है।

सड़क दुर्घटना में बाइक सवार की मौत, दो घायल

पंतनगर/किच्छा, एजेंसी। किच्छा बाईपास पर अज्ञात ट्रक की टक्कर में बाइक सवार युवक की मौत हो गई। जबकि बाइक सवार दो अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने सभी को सीएचसी किच्छा पहुंचाया। जहां डॉक्टरों ने एक युवक को मृत घोषित कर दिया। जबकि दो गंभीर घायलों का इलाज चल रहा है। मंगलवार देर रात किच्छा के खुरपिया फार्म वार्ड नंबर एक निवासी संजू सिंह (25) पुत्र पूरन सिंह, बादल पुत्र धर्मराज और विकास दुबे पुत्र जगदीश चंद दुबे बाइक पर सवार होकर खुरपिया से किच्छा आ रहे थे।

वन विभाग का एक्शन मोड, जंगल जलाने वालों पर ड्रोन की नजर; लोगों को किया जा रहा जागरूक

बागेश्वर, एजेंसी। बागेश्वर में अराजक तत्वों से वनों को बचाने के लिए वन विभाग एक्शन मोड में आ चुका है। जंगल जलाने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, वहीं दूसरी ओर अराजक तत्वों को पकड़ने के लिए ड्रोन कैमरे का सहारा लिया जा रहा है।

बागेश्वर में अराजक तत्वों से वनों को बचाने के लिए वन विभाग एक्शन मोड में आ चुका है। जंगल जलाने वालों की पहचान कर उनके खिलाफ कार्रवाई की जा रही है, वहीं दूसरी ओर अराजक तत्वों को पकड़ने के लिए ड्रोन कैमरे का सहारा लिया जा रहा है। विभागीय अधिकारी संवेदनशील क्षेत्रों में वाहनों से नियमित गश्त कर लोगों को वनों को आग से बचाने के लिए जागरूक भी कर रहे हैं।

प्रदेश में वनाग्नि की बढ़ती घटनाओं को देखते हुए सीएम पुष्कर सिंह धामी ने अधिकारियों से फील्ड में उतरने और जंगलों को बचाने के लिए वृहद कार्ययोजना तैयार करने के निर्देश दिए थे। जिले में इसका असर दिख रहा है। वन विभाग के रेंजर गश्ती वाहन से नियमित जागरूकता अभियान चला रहे हैं। अधिक वनाग्नि वाले क्षेत्रों में वाहन पर लगे लाउडस्पीकर की

मदद से लोगों को आग न लगाने और आग लगाते पकड़े जाने पर होने वाली कानूनी कार्रवाई के बारे में बताया जा रहा है। रेंजर श्याम सिंह करायत ने बताया कि बागेश्वर रेंज के पंद्रहपाली, हड़बाड़, आरे, पंतक्वैराली, जौलकांडे आदि क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम किए जा चुके हैं। अन्य रेंजों में भी रेंजर नियमित लोगों को वनाग्नि नियंत्रण में सहयोग के लिए प्रेरित कर रहे हैं।

वहीं, आग लगाते हुए चार लोगों के पकड़े जाने के बाद अब अराजक तत्वों की पहचान के ड्रोन कैमरा भी उपयोग में लाया जा रहा है।

संसाधनों की कमी से जूझ रहे वन विभाग को आपदा प्रबंधन की ओर से 10 वाहन उपलब्ध कराए गए हैं। पहले विभाग के पास केवल चार वाहन थे। वाहनों की संख्या बढ़ने से अधिकारियों और कर्मचारियों को गश्त और आग बुझाने में काफी मदद मिल रही है।

बिजली की दरें बढ़ाने का कांग्रेस ने विरोध किया

ऋषिकेश, एजेंसी। बिजली की दरों में वृद्धि किए जाने पर महानगर कांग्रेस ने विरोध में जताते हुए राज्यपाल को ज्ञापन भेजा है। कार्यकर्ताओं ने एसडीएम ऋषिकेश कुमकुम जोशी के माध्यम से ज्ञापन भेजते हुए जनहित में बढ़ी हुई दरें वापस लिए जाने की मांग की है।

मंगलवार को कांग्रेस जिलाध्यक्ष मोहित उनियाल और महानगर अध्यक्ष राकेश सिंह के नेतृत्व में कार्यकर्ता तहसील परिसर पहुंचे। कार्यकर्ताओं ने कहा कि लोकसभा चुनाव के तुरंत बाद उत्तराखंड में विद्युत दरों में करीब सात प्रतिशत की बढ़ोतरी की है। ऊर्जा प्रदेश के गरीब और मध्यम वर्गीय जनता पर यह आर्थिक बोझ बढ़ाएगी। पूर्व पालिकाध्यक्ष दीप शर्मा और मदन मोहन शर्मा ने कहा कि सरकार का यह निर्णय प्रदेश की जनता के साथ धोखा और छलावा है।

कहा कि प्रदेश की जनता ने विकास और सुशासन के लिए भाजपा की ट्रिपल इंजन की सरकार को मौका दिया है। लेकिन भाजपा सरकार प्रदेश की जनता पर लगातार महंगाई का बोझ लाद रही है। कार्यकर्ता ने विरोध करते हुए बिजली दरों की दृद्धि को वापस लेने की मांग की। इस मौके पर बैसाख सिंह पयाल, ऋषि सिंघल, राहुल रावत, रुकम पोखरियाल, कमल बनर्जी, प्रवीण गर्ग, रविंद्र भारद्वाज, राजेश शाह आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

फेल या पास होना जिंदगी का एक हिस्सा

ऋषिकेश, एजेंसी। उत्तराखंड शिक्षा परिषद बोर्ड के हाईस्कूल और इंटरमीडिएट के परीक्षा परिणाम घोषित हो गए हैं। अच्छे अंकों से परीक्षा पास करने वाले छात्र उत्साहित हैं तो कम अंक प्राप्त करने या फेल होने वाले मायूस हैं। एम्स के कम्युनिटी एंड फैमिली मेडिसिन यूथ वेलनेस एक्सपर्ट एडिशनल प्रो. संतोष कुमार ने कम अंक आने से तनाव ग्रस्त छात्रों के लिए सुझाव दिए हैं।

प्रो. संतोष कुमार ने कहा कि जीवन जीने की कला ही असली सफलता है। सुख और दुख तो केवल जिंदगी के दो पहलू हैं। तनाव में आकर छात्र जिंदगी जीने के आयाम को समझ नहीं पाते हैं। ऐसा कदम उठा लेते हैं जो कि सही मायने में असफलता है। कहा कि तनाव ग्रस्त या फिर अत्यधिक खुश होने से मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

अब योगनगरी रेलवे स्टेशन से हुबली जंक्शन तक चलेगी समर स्पेशल ट्रेन

ऋषिकेश, एजेंसी। चारधाम यात्रा को लेकर स्पेशल ट्रेन चलाई गई है। योगनगरी रेलवे स्टेशन से सिद्धारूढ़ स्वामीजी हुबली जंक्शन तक समर स्पेशल ट्रेन चलेगी।

योगनगरी रेलवे स्टेशन से सिद्धारूढ़ स्वामीजी हुबली जंक्शन तक समर स्पेशल ट्रेन का संचालन किया जाएगा। यह ट्रेन आज से सप्ताह में प्रत्येक बृहस्पतिवार को शाम 5:55 बजे संचालित होगी। यह ट्रेन मई में पांच फेरे लगाएगी। चारधाम यात्रा को लेकर रेलवे की ओर से इस ट्रेन को चलाया गया है।

योगनगरी रेलवे स्टेशन के स्टेशन प्रबंधक एसके शर्मा ने बताया कि रेलवे मुरादाबाद मंडल की ओर से योगनगरी रेलवे स्टेशन से सिद्धारूढ़ स्वामीजी हुबली जंक्शन तक स्पेशल ट्रेन चलाई जा रही है। यह ट्रेन योगनगरी ऋषिकेश से दो मई, नौ मई, 16 मई, 23 मई और 30 मई को चलेगी। इस ट्रेन में जनरल,

स्लीपर, थर्ड एसी, सेकेंड एसी होगा। ट्रेन बृहस्पतिवार शाम को योगनगरी ऋषिकेश रेलवे से हरिद्वार, टपरी, मेरठ, हजरत निजामुद्दीन, मथुरा, बीना, भोपाल, खंडवा, भुसावल, पुणे, सतारा, धारवाड़ होते हुए सिद्धारूढ़ स्वामीजी हुबली जंक्शन रेलवे स्टेशन पहुंचेगी। ट्रेन तीसरे दिन शाम 5:30 बजे पहुंचेगी। यह ट्रेन सिद्धारूढ़ स्वामीजी हुबली जंक्शन से सोमवार को 21:45 बजे चलेगी और बुधवार को 18:45 बजे योगनगरी ऋषिकेश रेलवे स्टेशन पहुंचेगी।

अग्निकांड में गोशाला जलकर हुई राख, दो गायों की मौत

लालकुआं, एजेंसी। सोमवार देर रात आए अंधड़ के दौरान बिंदुखत्ता के पटेल नगर में एक किसान की गोशाला में आग लगने से दो गायों की जलकर मौत हो गई। एक गाय गंभीर रूप से झुलस गई। पीड़ित किसान ने नुकसान का मुआवजा देने की गुहार लगाई है।

पटेलनगर बिंदुखत्ता निवासी केशर राम की गोशाला में सोमवार रात्रि लगभग एक बजे आग लग गई। अग्निकांड में बर्तन, अनाज और भूसा सहित अन्य सामान जलकर राख हो गया। गोशाला में बंधी तीन गायों में से दो की जलकर मौत हो गई। मंगलवार दोपहर मौके पर पहुंचे क्षेत्रीय विधायक डॉ. मोहन सिंह बिष्ट, तहसीलदार लालकुआं मनीषा बिष्ट और उपराजस्व निरीक्षक लक्ष्मी नारायण यादव ने पीड़ित परिवार को हरसंभव मदद का आश्वासन दिया।

फर्जी शिक्षक प्रकरण की जांच दो महीने में पूरी करे एसआईटी, उत्तराखंड हाईकोर्ट का निर्देश

नैनीताल, एजेंसी। उत्तराखंड फर्जी शिक्षक मामले में उच्च न्यायालय ने विशेष अनुसंधान दल (एसआईटी) को दो महीने में जांच पूरी करने को कहा है। साथ ही सरकार को विभिन्न न्यायालयों में लंबित वादों के बारे में भी विस्तृत रिपोर्ट पेश करने के निर्देश दिए हैं।

काठगोदाम दमुवाढूंगा की स्टूडेंट गार्जियन वेलफेयर कमेटी की ओर से दायर जनहित याचिका पर मुख्य न्यायाधीश रितु बाहरी और न्यायमूर्ति राकेश थपलियाल की युगलपीठ में सुनवाई हुई। सरकार की ओर से बुधवार को अदालत में प्रगति रिपोर्ट पेश की गई। कहा गया कि इस मामले में एसआईटी की ओर से जांच अभी जारी है। अभी तक 73 प्रतिशत जांच पूरी हो गई है। हजारों शिक्षकों के प्रमाण पत्रों की जांच पूरी कर ली गई है। अभी 27 प्रतिशत जांच नहीं हो पाई है। यह भी कहा गया कि अभी तक 69 फर्जी शिक्षक पाए गए हैं, जिन्होंने फर्जी दस्तावेज के बल पर नौकरी हथियाई है। इनमें से 49 शिक्षकों को बर्खास्त कर दिया गया है। कुछ शिक्षकों के प्रकरण

विभिन्न न्यायालयों में लंबित हैं।

वहीं याचिकाकर्ता के अधिवक्ता त्रिभुवन पांडे की ओर से अदालत को बताया गया कि अदालत ने वर्ष 2020 में सरकार को तीन महीने के अदंर सभी शिक्षकों के दस्तावेजों और डिग्रियों की जांच कर दोषियों को चिन्हित करने और उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए थे। अंत में अदालत ने एसआईटी को निर्देश दिए कि दो महीने के अदंर जांच पूरी करे। साथ ही विभिन्न न्यायालयों में लंबित वादों की सूची भी अदालत में पेश करे। इस मामले में दो महीने बाद सुनवाई होगी।

गौरतलब है कि कमेटी की ओर से दायर याचिका में कहा गया कि प्रदेश में ऐसे सैकड़ों फर्जी शिक्षक हैं, जिन्होंने फर्जी दस्तावेजों के बल पर नौकरी हथियायी है। सरकार ऐसे शिक्षकों के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं कर रही है। एसआईटी जांच के नाम पर खानापूर्ति की जा रही है।

सड़क सुधारीकरण से टूटी पेयजल लाइन, 50 परिवार परेशान

कण्वघाटी, एजेंसी। कौडिया-चिल्लरखाल मार्ग के सुधारीकरण कार्य के कारण भाबर में हल्दूखाता व कंचनपुर क्षेत्र की पेयजल लाइन क्षतिग्रस्त हो गई है। ऐसे में क्षेत्र के 50 परिवार पेयजल किल्लत से जूझ रहे हैं। उन्हें स्रोतों से पानी भरना पड़ रहा है। लोगों ने कहा कि विभाग से शिकायत के बाद भी समाधान नहीं किया जा रहा है। चेतावनी दी यदि जल्द पेयजल आपूर्ति सुचारु नहीं की गई तो कार्य रोक दिया जाएगा। भाबर क्षेत्र में 12 किमी कौडिया-चिल्लरखाल मार्ग का सुधारीकरण कार्य चल रहा है। निर्माण कार्य से हल्दूखाता व कंचनपुर क्षेत्र में पेयजल लाइन क्षतिग्रस्त हो गई है। स्थानीय प्रमोद रावत, वीरेंद्र भट्ट, अरुण गुसाईं, गीता बिष्ट, दिनेश लखेड़ा, विशंबर दत्त धुलिया, प्रेम सिंह तड़ियाल ने कहा कि मार्ग चौड़ीकरण के कार्य से पेयजल लाइन कई जगहों पर क्षतिग्रस्त हो गई है। परेशानी का सबब बनी है। ऐसे में 50 परिवार पेयजल किल्लत से जूझ रहे हैं।

खनन को लेकर बाजपुर में हुई गोलीबारी के दो अन्य आरोपियों को पुलिस ने किया गिरफ्तार

रुद्रपुर/नैनीताल, एजेंसी। उत्तराखंड के ऊधमसिंह नगर जिले के बाजपुर में खनन को लेकर हुई गोलीबारी के दो अन्य आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। विगत 28 अप्रैल को बाजपुर के बन्नाखेड़ा में खनन को लेकर दो पक्षों में मारपीट के साथ ही फायरिंग की घटना प्रकाश में आई थी। इसमें कुछ लोग घायल हो गए थे।

बाजपुर के गोबरा नई बस्ती निवासी भजन सिंह की तहरीर पर पुलिस ने धारा 14, 148, 149, 307, 323, 504 और धारा 506 के तहत अभियोग पंजीकृत कर जांच शुरू कर दी। बाजपुर के प्रभारी निरीक्षक की अगुवाई में एक टीम का गठन किया गया। पुलिस ने 29 अप्रैल को तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया था जबकि अन्य की पहचान का कार्य जारी था।

वहीं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) टीएस मंजूनाथ के अनुसार देर रात को घटना के दो और आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार आरोपियों में गुरपेज सिंह निवासी जगतपुर, कुंडेश्वरी, काशीपुर, ऊधमसिंह नगर और शुभम जोशी उर्फ अंडा निवासी बंगाली कालोनी, कुंडेश्वरी, काशीपुर, ऊधमसिंह नगर शामिल हैं। पुलिस ने एक आरोपी के पास से 32 बोर का एक तमंचा भी बरामद किया है।

बरातियों से भरी कार सड़क पर पलटी, हादसे में तीन महिलाओं की मौत; मातम में बदली खुशियां

शक्तिफार्म, एजेंसी। बैकुंठपुर शक्ति फार्म से जनपद पीलीभीत के चंदिया हाजरा में बरात में जा रही कार पलटने से तीन महिलाओं मौके पर ही मृत्यु हो गई। जबकि छह से अधिक ज्यादा लोग घायल हो गए। जिसमें एक की स्थिति गंभीर बनी हुई है।

बैकुंठपुर शक्तिफार्म नंबर एक निवासी नरोत्तम सरकार उर्फ बंटी पुत्र दीपंकर सरकार की बरात चंदिया हजारा के राहुल नगर जिला पीलीभीत में मंगलवार को गई थी। बरात में जा रही इनोवा कार अचानक बीच सड़क पर पलट गई।

चंदिया हजारा से दो किमी पीछे जंगल में हुई हादसे में तीन महिलाओं ने घटनास्थल में ही दम तोड़ दिया तो वहीं गाड़ी में सवार अन्य लोग गंभीर अवस्था में घायल हो गए। जिन्हें स्थानीय पुलिस इलाज के लिए अस्पताल ले गए। मृतक में बैकुंठपुर नंबर एक के तापस मंडल की पत्नी बिशुखा मंडल 50, आशु सरदार की पत्नी कंचन सरदार 65 और रुद्रनिवासी ज्योतिष मंडल की पत्नी रेणु मंडल 70 की घटना स्थल में ही मौत हुई। जबकि घायलों में बैकुंठपुर निवासी उमेश सरकार पुत्र दिवाकर, गोविंद पुत्र रतिकांत निवासी बैकुंठपुर, गणेश मंडल पुत्र महानंद निवासी ठाकुर नगर रुद्रपुर, गौरांग मंडल पुत्र तारक मंडल निवासी ठाकुर नगर रुद्रपुर सहित सात लोग घायल हैं।

खेत की आग सड़क तक पहुंची, बाइक और वाहन जला

कोटद्वार, एजेंसी। द्वारीखाल ब्लॉक के अंतर्गत ग्राम पंचायत दिउसा के नापखेत में असामाजिक तत्वों ने आग लगा दी। आग सड़क तक पहुंच गई और इस दौरान सड़क किनारे खड़ा पिकअप वाहन और एक बाइक भी जल गई। इसके बाद आग का रुख आबादी की ओर हो गया। सूचना पर पहुंचे भूमि संरक्षण वन प्रभाग लैंसडौन के मटियाली रेंज के वनकर्मियों ने चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद किसी तरह आग बुझाई। मामले में वन सरपंच ममता देवी ने असामाजिक तत्वों के खिलाफ राजस्व पुलिस को तहरीर दी है।

ग्राम पंचायत दिउसा की वन सरपंच ममता देवी ने बताया कि बुधवार को पूर्वाह्न 11:00 बजे असामाजिक तत्वों ने गांव के नीचे की

तरफ नापखेत में आग लगा दी। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप धारण कर लिया और आग सड़क की ओर बढ़ने लगी। तभी आग सड़क किनारे खड़े पिकअप वाहन और एक बाइक तक जा पहुंची। देखते ही देखते धनवीर सिंह की बाइक जहां आग में जल गई वहीं सड़क निर्माण करा रहे देहरादून निवासी ठेकेदार का पिकअप वाहन भी जल गया। इसके बाद आग आवासीय भवनों के नजदीक पहुंच गई। उन्होंने इसकी सूचना वन कर्मियों की दी। वन सरपंच ने मामले में राजस्व पुलिस को तहरीर दी है। पटवारी सर्किल लंगूर पल्ला-3 के पटवारी राजेश राणा ने बताया कि मामले की जांच की जा रही है। उधर, भूमि संरक्षण वन प्रभाग लैंसडौन के जयहरीखाल रेंज अधिकारी बीडी जोशी ने बताया कि सूचना पर पहुंचे वनकर्मियों ने चार घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद किसी तरह आग बुझाई। बुधवार को दोपहर में चमोली-लासी-सरतोली मार्ग के निचले क्षेत्र में आग भड़क गई। शाम होते ही आग टैक्सी स्टैंड के समीप पहुंच गई। इससे पहाड़ी से पत्थर छिटकने लगे तो पुलिस प्रशासन ने वाहनों को वहां से हटवाया। टैक्सी स्टैंड के ऊपरी हिस्से में गत वर्ष भी आग लगने से बोल्डर नीचे आ गए थे। इधर, गोपेश्वर-नेल-कुड़ाव सड़क पर आग को वन कर्मियों ने बुझा लिया जिससे यहां वाहनों की आवाजाही सुचारु हो गई है। केदारनाथ वन्यजीव प्रभाग के एसडीओ जुगल किशोर चौहान ने बताया कि जंगलों में लगी आग को बुझाने के प्रयास किए जा रहे हैं। वहीं कर्णप्रयाग के आटागाड़ रेंज के राड़खी मज्याड़ी, सिमली, कोलीपानी के जंगल भी आग में जले। ग्राम प्रधान सिमली पीताम्बरी देवी ने कहा कि जंगलों में आग लगने की सूचना वन विभाग को भी दी गई है। वहीं आटागाड़ रेंज के अधिकारी आरके निराला ने बताया कि सूचना पर वन कर्मियों की टीम मौके पर गई है। पौड़ी-श्रीनगर हाईवे पर उदल्टियूं गांव व पौड़ी-सीकू मार्ग पर मांडाखाल के समीप सिविल क्षेत्र के जंगलों में मंगलवार रात से आग लगी है।

उपराज्यपाल ने दिल्ली महिला आयोग के संविदा कर्मचारियों को हटाया

आयोग की पूर्व प्रमुख और राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल आदेश पर भड़कीं

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली के उपराज्यपाल ने आयोग में कार्यरत संविदा कर्मचारियों को हटाने का आदेश दिया है ' महिला एवं बाल विकास विभाग का आरोप है कि दिल्ली महिला आयोग ने उपराज्यपाल की मंजूरी के बिना कर्मचारियों की नियुक्ति की थी। दिल्ली महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने बिना किसी ठोस आधार के डीसीडब्ल्यू कर्मचारियों को हटाने का आदेश देने के उपराज्यपाल के फैसले की तीखी आलोचना की और इसे नकारात्मक राजनीति बताया और साथ ही एक ऐसी संस्था के खिलाफ कदम बताया, जिसने दिल्ली की महिलाओं की सेवा में महत्वपूर्ण काम किया है। उन्होंने दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष के रूप में उनके कर्यकाल के समाप्त होने के बाद आये इस आदेश के समय पर सवाल उठाया। स्वाति मालीवाल ने आदेश में इस दावे का खंडन किया की दिल्ली महिला आयोग में 223 व्यक्ति कार्यरत हैं, उन्होंने स्पष्ट किया कि वास्तविक संख्या 90 है, जिनमें से 82 संविदा पर हैं और 8 नियमित हैं। उन्होंने आगे कहा कि वास्तव में शून्य स्वीकृत पद हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि दिल्ली महिला आयोग की उपलब्धियां केवल उनके नहीं बल्कि डीसीडब्ल्यू कर्मचारियों के सामूहिक प्रयास का परिणाम हैं। पिछले 8 वर्षों में, दिल्ली महिला आयोग ने 1,70,000 से अधिक शिकायतों पर काम किया है, 181 महिला हेल्पलाइन पर 40 लाख से अधिक संकटपूर्ण कॉल प्राप्त हुई हैं, और सीआईसी के माध्यम से 60,000 से अधिक यौन हिंसा की पीड़िताओं को परामर्श प्रदान किया गया है। आयोग ने मोबाइल हेल्पलाइन कार्यक्रम के माध्यम से 2.5 लाख से अधिक जमीनी दौरे किए हैं, 50,000 से अधिक सामुदायिक बैठकें आयोजित की हैं, और 2 लाख से अधिक मामलों पर महिला पंचायतों ने काम किया है। इसके अलावा, आयोग ने आरसीसी के माध्यम से 2 लाख से अधिक अदालती मामलों में यौन हिंसा की पीड़ित महिलाओं और बच्चियों को सहायता प्रदान की है, और 500 से अधिक नीति स्तर की सिफारिशें सरकार को भेजी गई हैं। उन्होंने कहा कि आयोग की पिछली अध्यक्ष ने 8 वर्षों में केवल एक मामले को निपटाया था।

अपनी नौकरी खोने वाले कर्मचारियों के लिए चिंता व्यक्त करते हुए स्वाति मालीवाल ने इस बात पर प्रकाश डाला कि उनमें से कई महिला कर्मचारी अपराध, एसिड हमलों और घरेलू हिंसा की पीड़ित हैं, जिन्होंने देश में अन्य महिलाओं की सेवा के लिए अपना समय और ऊर्जा समर्पित की है। आदेश के कारण अपनी नौकरी खोने वाली कुछ लड़कियां आश्रय गृहों में रहने वाली अनाथ बच्चियां थीं जिनको आयोग ने रोजगार प्रदान किया था ।

उन्होंने कर्मचारियों की संख्या और किए गए कार्यों के बीच असमानता पर जोर दिया और सवाल किया कि क्या 8 लोग डीसीडब्ल्यू की जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं।

स्वाति मालीवाल ने बृज भूषण शरण सिंह और जनता दल (एस) सांसद प्रज्वल रेवन्ना जैसे व्यक्तियों के खिलाफ कार्रवाई न करने के लिए अधिकारियों की आलोचना की। उन्होंने आरोप लगाया कि एलजी के इस कदम का उद्देश्य डीसीडब्ल्यू को देश के अन्य महिला आयोगों की तरह अप्रभावी बनाना है, उन्होंने महिलाओं के अधिकारों के लिए दिल्ली महिला आयोग की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने सरकार से डीसीडब्ल्यू को धन और कर्मचारियों के आवंटन का आग्रह किया और कर्मचारियों को हटाने के आदेश को वापस लेने की मांग की।

स्वाति मालीवाल ने कहा, ह्लदिल्ली महिला आयोग के कर्मचारियों को हटाने का उपराज्यपाल का कदम दिल्ली की महिलाओं और लड़कियों के खिलाफ है। वह आयोग का मुंह बंद करने की कोशिश कर रहे हैं। यदि आदेश लागू किया जाता है, तो 181 महिला हेल्पलाइन, रेप क्राइसिस सेल, क्राइसिस इंटरवेंशन सेंटर, महिला पंचायत, एसिड अटैक एंड रिहैबिलिटेशन सेल जैसे अन्य दिल्ली महिला आयोग के कार्यक्रम बंद हो जाएंगे। अगर उनके पास मेरे खिलाफ कुछ है, तो वह मेरे पीछे ईडी, सीबीआई लगा दें, मुझे जेल में डाल दें। लेकिन मैं उन्हें राजधानी की महिलाओं और लड़कियों की सुरक्षा के साथ खिलवाड़ नहीं करने दूंगी।

बढ़ते तापमान से तप रहे एनसीआर के लोग, खूब पानी पीकर हाथ में छाता लेकर निकलें

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

सुबह सवेरे चली ठंडी हवा के बाद बृहस्पतिवार को तापमान में गिरावट दर्ज की गई, लेकिन सुबह से काफी तेज धूप रहने की वजह से गर्मी रही।

मौसम विभाग का अनुमान है कि अगले दो दिन आसमान में हल्के बादल छाए रहेंगे, लेकिन तेज धूप की वजह से गर्मी से अभी राहत नहीं मिलेगी। बीते दो दिन से रात में ठंडी हवा चल रही है। बृहस्पतिवार की सुबह सवेरे तेज ठंडी हवा में खुले आसमान के नीचे हल्की सर्दी भी महसूस हुई, लेकिन जैसे ही धूप निकली वैसे ही गर्मी बढ़ गई। दोपहर में तेज धूप में काफी ज्यादा गर्मी महसूस हुई। न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 36 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

18 डट प्रति घंटे की रफ्तार से चली हवा हवा अधिकतम 18 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चली। वातावरण में आर्द्रता 18 प्रतिशत दर्ज की गई। मौसम विभाग का अनुमान है कि शुक्रवार को भी तेज धूप व गर्म हवा का सामना करना पड़ेगा। आसमान में हल्के बादल मंडराते रहेंगे, लेकिन तेज धूप व गर्म हवा की वजह से तापमान बढ़ने के साथ गर्मी ज्यादा महसूस होगी। न्यूनतम तापमान 22 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 39 डिग्री सेल्सियस रह सकता है। हवा की रफ्तार बढ़ने के साथ अधिकतम 21 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलेगी। वातावरण में आर्द्रता 15 प्रतिशत रहने का अनुमान है। बढ़ते तापमान से तप रहे हैं लोग बढ़ते तापमान से दिल्ली-एनसीआर के लोग तप रहे हैं। गाजियाबाद के जिला एमएमजी अस्पताल की ओपीडी रिपोर्ट में पता चला है कि दो महीने में बुखार के 15618 मरीज पहुंचे है। इनमे से 356 को भर्ती कराना पड़ा। बुखार भी 103 से लेकर 105 सेल्सियस तक पहुंच रहा है। सीएमएस डॉक्टर राकेश कुमार सिंह ने बताया कि गर्मी बढ़ने के साथ ही बुखार के मरीजों को वरीयता पर भर्ती करते हुए चिकित्सकों की निगरानी में उनका इलाज किया जा रहा है। लू से बचाव को सतर्क रहें

साथ ही बुखार के प्रत्येक मरीज कि मलेरिया डेंगू और टाइफाइड जांच अनिवार्य कर दी गई है। जब किसी जगह का स्थानीय तापमान लगातार तीन दिन तक वहां के सामान्य तापमान से तीन डिग्री से अधिक बना रहे तो उसे लू कहते हैं। बढ़ जाता है हीट स्ट्रोक का खतरा जब तापमान 37 डिग्री सेल्सियस तक रहता है तो मानव शरीर पर इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ता परंतु जैसे ही यह तापमान इससे अधिक बढ़ जाए तो इससे हीट स्ट्रोक हो सकता है। इसके लिए कोई घबराने की जरूरत नही है बल्कि सावधान रहने की जरूरत है। इन बातों का रखें ध्यान संजय नगर स्थित संयुक्त अस्पताल में तैनात डॉ. गौरव पाराशर की सलाह है कि घर से बाहर निकलने से पहले पानी का सेवन अधिक से अधिक करें। पानी के अलावा हरी सब्जियां और फल का भी सेवन कर सकते हैं जैसे की तरबूज , खरबूज, आम, नारियल पानी। ज्यादा तापमान होने पर छाता व सर पर टोपी लगाकर बाहर निकलें। सीधे एसी से निकल कर बाहर ना जाएं। क्योंकि बुजुर्गो में हीटस्ट्रोक का खतरा ज्यादा रहता है,इसलिए उन्हें ज्यादा सावधानी की जरूरत है।

स्योहारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र प्रभारी ने किया टीकाकरण सत्र का निरीक्षण

प्रात: किरण संवाददाता

स्योहारा। अधीक्षक सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र स्योहारा डॉक्टर बी के स्नेही के द्वारा नियमित राष्ट्रीय टीकाकरण सत्रों का गहनता पूर्वक किया गया। बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र स्योहारा के अधीक्षक डॉक्टर बी0 के0 स्नेही के द्वारा स्योहारा ब्लॉक के अंतर्गत आने वाले समस्त 26 उपकेंद्रों पर चल रहे राष्ट्रीय टीकाकरण कार्यक्रम के अंतर्गत बुधवार को वीएचएसएनडी सत्रों का निरीक्षण किया गया। जहां पर समस्त गर्भवती माताओं की जांच कर उनको टी.डी. के टी.के. लगाए गए। इसके साथ ही जीरो से 7 वर्ष तक के बच्चों का टीकाकरण भी किया गया। साथ ही समस्त टीको को सरकार के यू विन पोर्टल पर फीड करने का निर्देश भी चिकित्सा प्रभारी के द्वारा दिया गया। कुपोषित बच्चों की जांच कर उनको 6 तरह की दवाएं उपलब्ध कराई जा रही है। इस दौरान डॉक्टर स्नेही ने कहा कि ग्राम स्वास्थ्य पोषण दिवस का मुख्य उद्देश्य समुदाय में टीकाकरण के साथ 2 गर्भवती महिलाओं की खून की जॉच , पेशाब की जॉच और पेट की जांच आदि करवाना है अधीक्षक डॉक्टर बी के स्नेही द्वारा भी स्योहारा उप केंद्र के स्योहारा , पीएचसी सहसपुर, उपकेन्द्र बगवाड़ा, स्योहारा आदि को भी चेक किया गया। साथ ही बगवाड़ा में स्थित हैल्थ वेलनेस सेंटर का निरीक्षण किया गया। सीएचओ मीनल इस दौरान अनुपस्थित पाई गई। सहसपुर उपकेंद्र के राजीपुर गांव में ए.एन.एम.साबिया परवीन द्वारा शासन के आदेशों के तहत मरीजों को नियमित रूप से ओपीडी सेवाएं, उनकी जांच आदि कर समस्त दबाएं भी उपलब्ध कराई जा रही है ।साबिया द्वारा टीकाकरण,जांचे करके मरीजों को सेवाएं दी जा रही है। साथ ही इनके द्वारा परिवार नियोजन दिवस ओर आयुष्मान भवः स्वास्थ्य मेलो,राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी भाग लिया जा रहा है ।इनके अलावा हैल्थ सुपरबिजेर राजेश कुमार, बीपीएम प्रमोद ,बी सी पी एम सुधीर ओर आर बी एस के टीमों के चिकित्सकों डॉ संजय विश्वकर्मा, डॉ राकेश कुमार के द्वारा भी सत्रों का निरीक्षण किया गया ।इस दौरान सत्रों पर ए.एन.एम.,आशा और आंगनबाड़ी उपस्थित पाए गए ।इस दौरान साथ हेल्थ सुपरवाइजर वीर सिंह , राजेश कुमार, फार्मासिस्ट देवेंद्र कुमार ,सुमित कुमार, उमेश कुमार,चित्रा और अन्य समाजसेवी भी इस दौरान उपस्थित भी रहे।

मसवासी में मनाईं गई चक्रवर्ती सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य महान की 2369 वी जयंती

प्रात: किरण संवाददाता

रामपुर/मसवासी। नगर पंचायत मसवासी के मोहल्ला भूवरा में शिव मंदिर पर चक्रवर्ती सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य की 2369 वी जयंती बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाई गई । सर्वप्रथम चंद्रगुप्त मौर्य के चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया तथा माल्यार्पण भी किया गया इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए नगर पंचायत मसवासी के निवर्तमान अध्यक्ष हरिओम मौर्य ने कहा कि सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य का जन्म मगध राज्य के पाटलिपुत्र में हुआ था विश्व में यदि कोई चक्रवर्ती सम्राट बना तो वह केवल चंद्रगुप्त मौर्य थे अखंड भारत के निमार्ता सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य को भारत के सबसे महान शासको में माना जाता है जिन्होंने अखंड भारत पर राज किया उनकी गणना महान शासको में की जाती है वे भारत के सबसे शक्तिशाली सम्राटों में से एक थे चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरु चाणक्य के मार्गदर्शन में महान मौर्य साम्राज्य की स्थापना की उन्होंने कहा कि मौर्य बड़ी संख्या में होते हुए भी आज अपेक्षित हैं इसलिए मौर्य समाज को एकजुट होकर अपनी पहचान बनानी होगी तथा हमें प्रत्येक घर में चंद्रगुप्त मौर्य की तस्वीर लगानी चाहिए तथा अपने बच्चों को चंद्रगुप्त मौर्य के पदचिन्ह पर चलने को प्रेरित करना चाहिए तथा अपना इतिहास भी पढ़ना चाहिए इस मौके पर राजेश कुमार मौर्य, विनेश मौर्य ,अतर सिंह मौर्य ,यशपाल मौर्य, अजय सिंह मौर्य, धर्मेंद्र मौर्य, धर्मेंद्र मौर्य ,संजीव कुमार वर्मा, विजय मौर्य, सुभाष मौर्य, मयंक मौर्य आदि काफी संख्या में लोग शामिल रहे।

घूंघट में रिक्शा पर महिला, बैग से 36 लाख का डायमंड किया गायब

- गुजरात से दिल्ली पुलिस ने पकड़ा, बाकी की तलाश

संवाददाता

करोल बाग थाना की पुलिस टीम ने डायमंड ज्वैलरी चोरी के मामले में एक आरोपी महिला को गिरफ्तार किया है। इसके पास 36 लाख कीमत की ज्वेलरी बरामद की गई है। डीसीपी एम हर्षवर्धन ने बताया कि 12 मार्च को चोरी की वारदात हुई थी। पीड़ित ने पुलिस को बताया कि जब वह डायमंड की ज्वेलरी बैग में रखकर ई रिक्शा से गुरुद्वारा से करोल बाग मेट्रो स्टेशन की तरफ जा रहा था। इस दौरान उसके बैग से डायमंड चोरी कर ली गई।

उस मामले में एफआईआर दर्ज करके पुलिस टीम ने छानबीन शुरू की। जिससे चोरी की वारदात की गई, उसके साथ ई रिक्शा पर एक महिला भी बैठी हुई थी। जिसके बारे में पता चला कि वह गुजरात के भावनगर की रहने वाली है। पुलिस टीम उसका पता लगाना शुरू किया और सब इंस्पेक्टर साहिल की देखरेख में पुलिस टीम ने महिला को भावनगर से पकड़ा। उसकी पहचान की गई और उसके पास से 598 कैरेट के डायमंड की जूलरी बरामद की गई। जिसकी कीमत 36 लाख रुपए बताई जा रही है। पूछताछ से पुलिस को पता चला कि वह महिला अपने और साथियों के साथ मिलकर इस तरह की वारदात को अंजाम देती है। जिसमें एक पिंकी नाम की महिला भी गैंग में शामिल है। पुलिस टीम अब उन दोनों आरोपियों के बारे में पता लग रही है।

स्कूटी पर लेकर जा रहा था अवैध शराब की पेटियां

संवाददाता

रघुवीर नगर पुलिस चौकी की टीम ने शराब तस्करी के मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। इसके पास से 200 क्वार्टर शराब का बरामद किया गया है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान बदला उर्फ.सोनकर के रूप में हुई है। यह मादीपुर, पश्चिम विहार का रहने वाला है। पहले से एक आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि इसके पास से शराब के साथ-साथ तस्करी में इस्तेमाल स्कूटी को भी पुलिस टीम ने जप्त किया है।

कांस्टेबल विक्रम को इसके बारे में एक सूचना मिली थी। उस सूचना के आधार पर चौकी इंचार्ज अमरजीत की टीम ने दोपहर में इसे ट्रैक किया। जब यह स्कूटी पर शराब की पेटियां रखकर जा रहा था। पुलिस ने चार पेटियां बरामद की जिसके अंदर से 200 क्वार्टर शराब के मिले। इसके खिलाफ दिल्ली एक्साइज एक्ट के तहत मामला दर्ज करके गिरफ्तार कर लिया गया।

स्वर्ग आश्रम रोड पर दबोचा चोरी की स्कूटी के साथ

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

हरी नगर थाना के पुलिस चौकी की टीम ने एक शातिर बदमाश को गिरफ्तार किया है। इसके पास से चोरी की स्कूटी और दो मोबाइल बरामद किए गए हैं। गिरफ्तार आरोपी की पहचान मोहन उर्फ राम उर्फ रवि के रूप में हुई है। यह रघुवीर नगर इलाके का रहने वाला है। डीसीपी विचित्र वीर ने बताया कि इसकी गिरफ्तारी से हरी नगर थाना के तीन मामलों का खुलासा किया गया है। यह पहले से 9 मामलों में शामिल रहा है। चौकी इंचार्ज अमित वर्मा की देखरेख में हेड कांस्टेबल अजय और कांस्टेबल संदीप की टीम को पेट्रोलिंग के दौरान इस संदिग्ध पर नजर पड़ी थी। पुलिस टीम ने स्वर्ग आश्रम रोड पर उसे पकड़ा, पूछताछ की गई और उसकी पहचान की गई। जिस स्कूटी से जा रहा था, वह चोरी की निकली। तलाशी में उसके पास से दो मोबाइल भी बरामद किए गए। आगे की छानबीन की गई तो पता चला कि यह पहले से 9 मामलों को अंजाम दे चुका है। पुलिस टीम ने स्कूटी और मोबाइल बरामद कर लिया, आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

नाम बदलकर रह रहा था अरोपी, गिरफ्तार

नई दिल्ली। वसंत कुंज नॉर्थ थाना पुलिस ने मंगलवार को चोरी के मामले में फरार और भगोड़ा घोषित अपराधी को दिल्ली कैंट इलाके से गिरफ्तार किया है। पुलिस उपायुक्त रोहित मीणा ने बताया कि वसंत कुंज नॉर्थ थाना पुलिस टीम जमानत के बाद फरार बदमाशों की सूची तैयार कर उन्हें पकड़ रही है। पुलिस टीम को फरार आरोपी सोनू के दिल्ली कैंट में होने की सूचना मिली। वह अपना नाम और पता बदलकर वहां रह रहा था। पुलिस ने छापा मारकर उसे दबोच लिया।

मोबाइल बेचने आए बदमाश को पकड़ा

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली जिला पुलिस की स्पेशल स्टाफ टीम ने मंगलवार को नाबालिगों का गिरोह चलाने वाले एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। आरोपी रितिक दिवाकर के पास से सात मोबाइल और एक चोरी की स्कूटी बरामद की गई है। पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान ने बताया कि स्पेशल स्टाफ की टीम नाबालिगों के गिरोह की तलाश कर रही थी। पुलिस को सूचना मिली कि गिरोह का सरगना एशियन मार्केट के पास आने वाला है। पुलिस ने उसे चोरी की स्कूटी के साथ दबोच लिया।

कोर्ट ने विगोरा नाम से दवा बेचने पर रोक लगाई

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने होम्योपैथी दवा निमार्ता कंपनी द्वारा यौन क्षमता से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए बाजार में बेची रही दवा को विगोरा नाम से बेचने पर स्थायी रूप से रोक लगा दी। उच्च न्यायालय ने यह फैसला फाइजर प्रोडक्ट्स इंक द्वारा दाखिल याचिका पर सुनाया है। फाइजर ने इसे ट्रेडमार्क नियमों का उल्लंघन बताया था। कंपनी वियाग्रा नाम से यौन क्षमता से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए अंग्रेजी दवा का उत्पादन करती है। न्यायमूर्ति संजीव नरुला की पीठ ने कहा कि दोनों नाम में समानता होने और एक तरह के वाणिज्यिक इस्तेमाल की वजह से भ्रम की बहुत अधिक आशंका है। पीठ ने रेनोविजन एक्सपोर्ट प्राइवेट लिमिटेड को निर्देश दिया कि वह विगोरा या कोई ऐसे नाम का इस्तेमाल न करे जो फाइजर के ट्रेडमार्क वियाग्रा से भ्रामक रूप से समान हो। पीठ ने आदेश दिया कि वादी, प्रतिवादी इकाई से संयुक्त रूप से और अलग-अलग तीन लाख रुपये की मामूली क्षतिपूर्ति का हकदार होगा।

पार्क के पास हथियार लेकर घूम रहा था वारदात करने

उत्तम नगर थाना की पुलिस टीम ने हथियार के साथ एक बदमाश को गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान समीर के रूप में हुई है, यह पहले से पालम गांव, रानी बाग और उत्तम नगर थाना के तीन मामलों में शामिल रहा है। इसके पास से पिस्टल, जिंदा कारतूस और स्कूटी बरामद की गई है। डीसीपी अंकित सिंह के अनुसार पेट्रोलिंग के दौरान एसएचओ राजेश कुमार की देखरेख में पुलिस टीम ने काली बस्ती 100 फुटा रोड के पास इसको पकड़ा। जब यह हथियार के साथ संदेह हालत में घूम रहा था किसी वारदात को अंजाम देने के लिए। जिस स्कूटी से यह इलाके में घूम रहा था, वह बिंदापुर थाना इलाके से चोरी की निकली। इसके पास से हथियार बरामद किए गए। इसके खिलाफ आर्म्स एक्ट का मामला दर्ज करके गिरफ्तार कर इसे जेल भेज दिया गया है।

सैलरी पर रख करवाता था दिल्ली में शराब की सप्लाई

द्वारका सेक्टर 23 पुलिस टीम ने किया खुलासा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

द्वारका सेक्टर 23 थाना की पुलिस टीम ने शराब तस्करी के एक मामले में राहुल नाम के आरोपी को गिरफ्तार किया है। पुलिस टीम ने एक गाड़ी के साथ-साथ 500 क्वार्टर से ज्यादा शराब का भी

मिली थी, कि यह बामनोली इलाके में शराब की सप्लाई करता है।

उस सूचना पर पुलिस टीम ने जानकारी इकट्ठा की और फिर सब इंस्पेक्टर दीपक फोगाट की देखरेख में पुलिस टीम ने छापा मारकर एक लाल रंग की कार को ट्रैक किया। उसे चला रहे सख्स को पकड़ा तो कार से 11 पेटी शराब की बरामद की गई। जिसके अंदर 500 से ज्यादा क्वार्टर भरे हुए थे। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया। कार के साथ शराब को जप्त कर लिया गया। आरोपी ने पूछताछ ने बताया कि कार का ओनर कोई और है। इसे सैलरी पर रखा हुआ था शराब की सप्लाई करने के लिए। पुलिस टीम अब इस मामले में और आरोपियों की तलाश कर रही है।

लावारिस कुत्तों का सर्वे करेगा नगर निगम

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

दिल्ली नगर निगम ने लावारिस कुत्तों के साथ अन्य पशुओं के सर्वे की रणनीति बनाई है। जून के बाद सर्वे का कार्य शुरू किया जाएगा। इससे पहले निगम ने वर्ष 2009 में सर्वे किया था। उस दौरान लगभग 5 लाख 60 हजार लावारिस कुत्तों की संख्या सामने आई थी। मौजूदा स्थिति को देखते हुए कई विशेषज्ञों का मानना है कि दिल्ली में लावारिस कुत्तों की संख्या में वृद्धि हुई है। निगम प्रशासन हर वर्ष कुत्तों के काटने, कुत्तों के बंध्याकरण का डाटा तैयार करता है। इसी तरह हर वर्ष कुत्तों की संख्या का ऑडिट भी होना चाहिए। अधिकारियों ने कहा कि नई एजेंसी को लावारिस कुत्तों की संख्या का पता लगाने की जिम्मेदारी दी जाएगी। इससे पहले बीते वर्ष नवंबर में सर्वे करने की योजना बनाई गई थी, लेकिन उस समय किसी एजेंसी का चयन नहीं हो पाया था।

70 हजार लावारिस कुत्तों का हुआ बंध्याकरण

अधिकारियों ने बताया कि अप्रैल 2023 से मार्च 2024 के दौरान लगभग 70 हजार लावारिस कुत्तों का बंध्याकरण हुआ है। निगम के 21 पशु जन्म नियंत्रण (एबीसी) केंद्रों में कुत्तों का बंध्याकरण किया जाता है। इसके अलावा नए वित्तीय वर्ष के लिए 90 हजार से अधिक लावारिस कुत्तों का बंध्याकरण करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। इस वर्ष अब तक 17 हजार से अधिक कुत्तों के काटने की घटनाएं भी सामने आई है।

आप ने शुरू किया जेल का जवाब वोट से हस्ताक्षर अभियान

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को जेल का जवाब वोट से हस्ताक्षर अभियान की शुरूआत की। पूर्वी दिल्ली संसदीय सीट के जंगपुरा विधानसभा क्षेत्र में आने वाले लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट से अभियान की शुरूआत की गई। पूर्वी दिल्ली से आप उम्मीदवार कुलदीप कुमार और स्थानीय विधायक प्रवीण कुमार भी इस मौके पर मौजूद रहे। हस्ताक्षर अभियान के दौरान बड़ी संख्या में लोगों ने आई लव यू केजरीवाल लिखकर अपना समर्थन दिया। इस मौके पर कुलदीप कुमार ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने दिल्लीवालों के लिए मुफ्त बिजली-पानी दिया है। अच्छे स्कूल, अस्पताल दिए हैं। महिलाओं को मुफ्त यात्रा की सुविधा दी है। ऐसे काम की राजनीति करने वाले मुख्यमंत्री को भाजपा द्वारा जेल में डाले जाने से दिल्ली की जनता में गुस्सा है।

केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल ने गुजरात में विशाल रोड शो कर की भावुक अपील, तानाशाही से देश को बचा लो

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की पत्नी ने गुरुवार को गुजरात में भरूच और भाव नगर लोकसभा क्षेत्र में विशाल रोड शो किया। इंडिया गठबंधन के तहत गुजरात में हुए उनके पहले रोड शो में ही भारी जन सैलाब उमड़ पड़ा। आप के झंडे से पूरा एरिया पट गया। कई लोग अरविंद केजरीवाल का कटआउट लेकर भी पहुंचे थे। उन्होंने जनता से भावुक अपील करते हुए कहा कि देश में तानाशाही चरम सीमा पर है। आप अपने वोट की ताकत को पहचानें और देश को तानाशाही से बचा लो। ये लोग नहीं चाहते हैं कि अरविंद केजरीवाल की आवाज जनता तक पहुंचे। इसलिए उनको जेल में डाल दिया। अरविंद केजरीवाल दिल्ली और पंजाब में मिल रही फ्री व 24 घंटे बिजली, अच्छे स्कूल और सरकारी अस्पताल समेत सारी सुविधाएं गुजरात के लोगों को भी देना चाहते हैं। गुजरात की जनता अरविंद केजरीवाल को बहुत प्यार करती है। इसलिए पहली बार में ही आम आदमी पार्टी के 5 विधायक चुना और यही बात इन लोगों को खटक रही है। सुनीता केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को इन्होंने पिछले 40 दिनों से जबरदस्ती जेल में डाला हुआ है। इन्होंने चैतर वसावा को भी जबरदस्ती जेल में डाला हुआ था। अभी तक किसी कोर्ट ने अरविंद केजरीवाल को दोषी नहीं माना है। ये लोग कह रहे हैं कि जांच चल रही है। क्या यह जांच 10 साल चलेगी तो ये लोग अरविंद केजरीवाल को 10 साल जेल में रखेंगे। इससे पहले व्यक्ति कोई तब जेल जाता था, जब अदालत उसे दोषी ठहरा देती थी। अभी इन्होंने एक नया सिस्टम निकाला है। ये कहते हैं कि जब तक जांच चलेगी, तब तक जेल में रहना पड़ेगा। यह तो इनकी सरासर गुंडगर्दी, तानाशाही है।

उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल एक सच्चे देशभक्त, ईमानदार और पढ़े-लिखे व्यक्ति हैं। उन्होंने आईआईटी से इंजीनियरिंग की, इनकम टैक्स कमिश्नर की नौकरी की। यह नौकरी इतनी आसानी से नहीं मिलती है। लेकिन उन्होंने समाज सेवा के लिए नौकरी छोड़ दी और झुग्गी-बस्तियों में जाकर काम करने लगे। जब हमारी शादी तय हुई तो उन्होंने मुझसे एक ही सवाल पूछा कि मेरे समाज सेवा करने से तुम्हें कोई दिक्कत तो नहीं होगी? ऐसे व्यक्ति को इन्होंने जेल में डाल दिया है। 2012 में एक बहुत बड़ा आंदोलन हुआ। उस दौरान उन्होंने दो बार लंबे-लंबे अनशन किया। केवल लोगों के हक के लिए 13-14 दिन तक उन्होंने कुछ नहीं खाया। अरविंद केजरीवाल को पिछले 22 साल से शुगर है और 12 साल से 50 यूनिट रोजाना इंसुलिन ले रहे हैं। डॉक्टर्स ने मना किया, लेकिन उन्होंने जनता के हक के लिए अपनी जान दांव पर लगा दी। जेल में इन्होंने अरविंद केजरीवाल की इंसुलिन बंद कर दी। उनका शुगर लेवल 300 के उपर पहुंच गया। ऐसे तो अरविंद केजरीवाल की किडनी और लीवर खराब हो जाएगी। बड़ी मुश्किल से कोर्ट जाकर हमें इजाजत मिली कि अरविंद केजरीवाल को इंसुलिन दी जाए। देश में हर जगह तानाशाही चल रही है। सुनीता केजरीवाल ने कहा कि दिल्ली की जनता ने अरविंद केजरीवाल को 3 बार दिल्ली का मुख्यमंत्री चुना है। आप सबने भी गुजरात में पहली बार में हमारे 5 विधायक चुने। यही बात इन लोगों को खटकती है कि गुजरात और दिल्ली के लोग अरविंद केजरीवाल को इतना प्यार क्यों करते हैं? अरविंद केजरीवाल का क्या कसूर है? क्या उनका यह कसूर है कि उन्होंने दिल्ली में बिजली 24 घंटे फ्री कर दी। उन्होंने दिल्ली के सरकारी स्कूल बेहतर कर दिए। अब उन बच्चों को अच्छी शिक्षा मिल रही है, सरकारी स्कूलों के बच्चे जेईई और नीट की परीक्षा पास कर रहे हैं।

दिल्ली हिंसा : घर में आग लगाने के दोषी को 10 साल की सजा

नई दिल्ली, प्रात: किरण संवाददाता

कड़कड़डूमा कोर्ट ने उत्तर पूर्वी दिल्ली में हुई हिंसा के दौरान दो घरों में आग लगाने के लिए एक दोषी को 10 साल कठोर कारावास की सजा सुनाई है। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश पुलस्त्य प्रमाचला मंगलवार को जॉनी कुमार के खिलाफ मामले की सुनवाई कर रहे थे, जिसे आईपीसी की धारा 148 और 436 के लिए दोषी ठहराया गया था। कुमार को इस साल 14 फरवरी को आईपीसी की धारा 188 के तहत भी दोषी ठहराया गया था। अभियोजन पक्ष ने कुमार पर भीड़ का हिस्सा होने का आरोप लगाया था, जिसने 25 फरवरी, 2020 को दंगों के दौरान खजूरी खास इलाके में दो घरों को आग लगा दी थी। विशेष लोक अभियोजक नरेश कुमार गौड़ ने दोषी के लिए अधिकतम सजा की मांग की। अदालत ने आरोपी को मोहम्मद सफिल और मोहम्मद दाउद के घरों में आगजनी के लिए क्रमशः 50,000 रुपये और 40,000 रुपये के जुमार्ने के साथ दोनों मामलों में पांच-पांच साल की सजा सुनाई। विशेष लोक अभियोजक ने कहा कि आगजनी की घटनाओं के लिए पांच-पांच साल की दो सजाएं लगातार चलेंगी। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों में जहां किसी आरोपी को दो या दो से अधिक आरोपों के लिए दोषी ठहराया जाता है, आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) के तहत सामान्य नियम लगातार सजाएं चलाने का प्रावधान करता है, जब तक कि अदालत यह निर्देश न दे कि ऐसी सजाएं एक साथ चलेंगी।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran
www.pratahkiran.com
नई दिल्ली, शुक्रवार, 03 मई, 2024

आप का जेल का जवाब वोट से हस्ताक्षर अभियान शुरू, लोगों ने लिखा- आई लव यू अरविंद केजरीवाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ आम आदमी पार्टी ने गुरुवार को जेल का जवाब वोट से हस्ताक्षर कैंपेन शुरू किया। पूर्वी दिल्ली लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी कुलदीप कुमार और जंगपुरा से आप विधायक प्रवीण कुमार ने कैंपेन की शुरूआत की। लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट से शुरू हुए कैंपेन में लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और आई लव यू केजरीवाल, मिस यू केजरीवाल जैसे संदेश लिखकर अपनी भावनाएं व्यक्त की। इस दौरान कुलदीप कुमार ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने दिल्लीवालों के लिए मुफ्त और 24 घंटे बिजली, पानी, अच्छे स्कूल-अस्पताल समेत ढेरों काम किया है। ऐसे मुख्यमंत्री को भाजपा द्वारा जेल में डाले जाने से दिल्ली की जनता में भारी आक्रोश है। दिल्लीवाले अपने बेटे अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े हैं और इस बार ह्यजेल का जवाब अपने वोट से देकर भाजपा का दिल्ली से सफाया करेंगे। कुलदीप कुमार ने कहा कि गुरुवार को जंगपुरा विधानसभा के लाजपत नगर सेंट्रल मार्केट से मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ जेल का जवाब वोट से हस्ताक्षर कैंपेन शुरू किया है। हम मार्केट में आने वाले लोगों को जागरूक कर रहे हैं और लोगों का अरविंद केजरीवाल को भारी समर्थन मिल रहा है। लोग बता रहे हैं कि अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली को 24 घंटे बिजली देने के सपने को पूरा किया, सरकारी स्कूलों और अस्पतालों को शानदार करने का काम किया। मोहल्ला क्लीनिक बनाया और सबको फ्री इलाज देने का काम किया। 150 से ज्यादा तरह के टैक्स फ्री करने का काम किया, दिल्ली की माताओं-बहनों को एक हजार रुपए दिया, सीसीटीवी कैमरे के मामले में दिल्ली को दुनिया में नंबर वन बनाने का काम किया। ऐसे मुख्यमंत्री को भाजपा ने षड़यंत्र करके झूठे केस में जेल में डालने का काम किया। जेल में अरविंद केजरीवाल को इंसुलिन न देकर उनकी हत्या करने का प्रयास तक किया। कुलदीप कुमार ने कहा कि दिल्ली के लोग आज अपने बेटे अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े हैं। दिल्ली के लिए अरविंद केजरीवाल ने बहुत कुछ किया है। अब दिल्ली के लोग भाजपा को जेल का जवाब अपने वोट से देंगे। दिल्ली की जनता 25 मई को भाजपा को दिल्ली से उखाड़ने का काम करेगी। अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी के खिलाफ दिल्ली की जनता विभिन्न तरह के कैंपेन चला रही है। आम आदमी पार्टी केवल जनता को एक प्लेटफार्म मुहैया करा रही है। जनता इस तरह के कैंपेन चलाकर भाजपा के खिलाफ अपनी नाराजगी व्यक्त करना चाहती है। अरविंद केजरीवाल के समर्थन जब जनता सड़क पर निकलती है तो उसके खिलाफ एफआईआर दर्ज हो जाती है, गिरफ्तारी हो जाती है। इसलिए आज जनता 25 मई को बेसब्री से इंतजार कर रही है। 25 को दिल्ली से भाजपा का सफाया होगा और दिल्ली के लोग अपने बेटे अरविंद केजरीवाल को जेल से बाहर लाने के लिए अबकी बार जेल का जवाब वोट से देंगे। विधायक प्रवीण कुमार ने कहा कि भाजपा ने अरविंद केजरीवाल को जेल में डालकर गलत किया है। दिल्ली की जनता अरविंद केजरीवाल को जेल से बाहर निकालना चाहती है और अपना गुस्सा प्रदर्शित करना चाहती है। आम जनता के अंदर भाजपा के खिलाफ माहौल बना हुआ है। हस्ताक्षर अभियान के माध्यम से लोगों द्वारा संदेश लिखा जा रहा है। लोग अपनी भावनाएं व्यक्त कर रहे हैं कि वो अरविंद केजरीवाल को कितना प्यार करते हैं। अरविंद केजरीवाल के काम को लोग सराह रहे हैं। भाजपा अरविंद केजरीवाल को जेल में रखना चाहती है, लेकिन दिल्ली की जनता उनको बाहर निकालना चाहती है। दिल्ली के लोग हस्ताक्षर कैंपेने में आई लव यू केजरीवाल, बहनों की दुआएं आपके साथ है जैसी भावनाएं लोग प्रदर्शित कर रहे हैं। अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में बिजली, पानी, स्वास्थ्य, शिक्षा, बसों में महिलाओं को फ्री यात्रा समेत बुनियादी मुद्दों पर काम किया है। हर महिला को हजार रुपए महीना देने की घोषणा भी की है।

बम की अफवाह के अगले दिन दिल्ली के स्कूलों में बच्चों की कम उपस्थिति

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

करीब 200 स्कूलों में बम होने की अफवाह वाले ईमेल मिलने के एक दिन बाद शहर के शैक्षणिक संस्थानों में बच्चों की उपस्थिति कम देखी गई, वहीं प्राचार्यों ने भविष्य में ऐसी आपात स्थितियों के लिए निकासी योजनाओं की समीक्षा की।

दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के लगभग 200 स्कूलों को बुधवार को एक समान धमकी भरा ई-मेल प्राप्त हुआ था, जिसमें दावा किया गया कि उनके परिसर में विस्फोटक रखे गए हैं। इससे बड़े स्तर पर अफरा-तफरी मच गई, कक्षाओं में पढ़ाई रोक दी गई और घबराए हुए माता-पिता अपने बच्चों को लेने के लिए स्कूलों की ओर दौड़ पड़े। माउंट आबू स्कूल की प्रधानाचार्य ज्योति अरोड़ा ने कहा कि उन्होंने प्रत्येक मंजिल पर स्कूल की निकासी योजना की पुनःसमीक्षा की और आपदा प्रबंधन अधिकारियों को उनके लिए मॉक ड्रिल और जागरूकता गतिविधियां आयोजित करने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि बृहस्पतिवार को अनुपस्थिति अधिक थी। उन्होंने कहा, ह्यमैंने माता-पिता से ऐसी स्थितियों में उनकी प्रतिक्रिया का आकलन करने का भी अनुरोध किया है। उन्होंने कहा कि कुछ माता-पिता स्कूल के द्वारों को धक्का दे रहे थे और कुछ अपने बच्चों को बाहर लाने पर जोर दे रहे थे। उन्होंने बताया, मैंने उनसे (बच्चों के परिजनों) कहा, मुझे 2,700 बच्चों की देखभाल करनी है।

अरोड़ा ने कहा कि उस स्थिति में भी उन्होंने शिक्षकों से माता-पिता की आईडी की ठीक से जांच करने और उनके हस्ताक्षर लेने के बाद ही बच्चों को सौंपने के लिए कहा और बच्चों से अपने माता-पिता की पहचान की पुष्टि करने के लिए भी कहा गया।

द्वारका में आईटीएल पब्लिक स्कूल की प्राचार्य सुधा आचार्य ने कहा कि माता-पिता अभी भी स्कूलों में अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं।

आचार्य ने कहा, आज हमारी उपस्थिति प्रतिदिन के औसतन 95 से 97 प्रतिशत से गिरकर 85 प्रतिशत हो गई है। निश्चित रूप से माता-पिता अभी भी अपने बच्चों की सुरक्षा को लेकर भयभीत और चिंतित हैं। कल ही हमने माता-पिता को आश्वस्त किया था कि चिंता की कोई बात नहीं है। हमें अपनी आधिकारिक ईमेल आईडी पर कुछ भी नहीं मिला। सुधा आचार्य कुल 250 निजी स्कूलों के निकाय नेशनल प्रोग्रेसिव स्कूल कॉन्फ्रेन्स की प्रमुख भी हैं। उन्होंने कहा कि अन्य स्कूलों के प्राचार्यों ने भी अपने यहां विद्यार्थियों की उपस्थिति कम होने की बात कही है। द्वारका स्थित जी डी गोयनका पब्लिक स्कूल की प्राचार्य अनिता खोसला ने कहा अन्य सामान्य दिनों की तुलना में आज विद्यार्थियों की उपस्थिति 15-20 प्रतिशत कम है। अभिभावकों को समझना चाहिए कि घबराने से कुछ नहीं होगा। स्थिति से हमें मिलजुलकर निपटना होगा।

दिल्ली बम धमकी मामला: दहशत फैलाना, सार्वजनिक व्यवस्था बिगाड़ना था ईमेल भेजने का मकसद

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के 100 से अधिक स्कूलों को बम से उड़ाने की धमकी संबंधी ईमेल भेजने का मकसद बड़े पैमाने पर दहशत पैदा करना और सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ना था। दिल्ली पुलिस के विशेष प्रकोष्ठ द्वारा दर्ज प्राथमिकी में यह दावा किया गया है।

प्राथमिकी तक पहुंच रखने वाले आधिकारिक सूत्र के अनुसार बुधवार को सुबह 5:47 बजे से अपराह्न 2:13 बजे के बीच कई स्कूलों की तरफ से, बम धमकी मिलने के बारे में कम से कम 125 कॉल आईं।

सूत्र ने कहा कि कॉल आने के बाद पुलिस नियंत्रण कक्ष (पीसीआर) वाहन स्कूल पहुंचे और जिला पुलिस, बम निरोधक दस्ता (बीडीएस), एमएसी, विशेष प्रकोष्ठ और अपराध नियंत्रण कक्ष, डीडीएमएस, एनडीआरएफ, फायर कैट्स व अन्य एजेंसियों को सतर्क किया गया।

सूत्र के अनुसार प्राथमिकी में कहा गया है कि स्कूलों की ओर इन इकाइयों की आवाजाही के कारण काफी असुविधा हुई। उन्होंने कहा कि अधिकारियों ने एक व्यापक अभ्यास के तहत स्कूलों को खाली कराया और पूरे शहर में जांच-पड़ताल की।

सूत्र ने कहा कि ये ईमेल स्पष्ट रूप से बड़े पैमाने पर दहशत पैदा करने और सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने के षड्यंत्रकारी इरादे से भेजे गए थे।

भारतीय दंड संहिता की धारा 505 (अफवाह फैलाना), 507 (गुमनाम संचार के माध्यम से आपराधिक धमकी) और 120 (बी) (आपराधिक षड़यंत्र के लिए सजा) के तहत विशेष प्रकोष्ठ थाने में प्राथमिकी दर्ज की गई है।

दिल्ली-एनसीआर के लगभग 200 स्कूलों को बुधवार को एक समान धमकी भरा ई-मेल मिला, जिसमें दावा किया गया था कि उनके परिसर में विस्फोटक लगा दिए गए हैं। इसके बाद बड़े पैमाने पर स्कूलों को खाली कराया गया और तलाशी ली गई जबकि घबराए हुए अभिभावक अपने बच्चों को लेने के लिए स्कूल पहुंच गए। अधिकारियों के तलाशी लेने के दौरान कुछ नहीं मिला, जिसके बाद उन्होंने इसे एक अफवाह घोषित किया।

उपराज्यपाल ने डीसीडब्ल्यू में नियुक्त 223 कर्मचारियों की बर्खास्तगी की मंजूरी दी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली के उपराज्यपाल वी के सक्सेना ने दिल्ली महिला आयोग (डीसीडब्ल्यू) के 223 संविदा कर्मचारियों को बर्खास्त करने संबंधी प्रस्ताव को मंजूरी दे दी जिसके बाद इस सिलसिले में एक आदेश जारी किया है। अधिकारियों ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। दिल्ली सरकार के महिला एवं बाल विकास (डब्ल्यूसीडी) विभाग ने डीसीडब्ल्यू को इन संविदा कर्मचारियों को बर्खास्त करने का निर्देश दिया है। उसका कहना है कि उन्हें उचित प्रक्रिया का पालन किए बिना काम पर रखा गया था।

वहीं दिल्ली महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष और आम आदमी पार्टी (आप) की राज्यसभा सदस्य स्वाति मालीवाल ने इस आदेश की आलोचना की है। सोशल मीडिया मंच एक्स पर एक पोस्ट में मालीवाल ने कहा, उपराज्यपाल साहब ने दिल्ली महिला आयोग के सारे संविदा कर्मियों को हटाने का एक तुगलकी फरमान जारी किया है। आज महिला आयोग में कुल 90 कर्मचारी हैं जिनमें से, सरकार ने केवल आठ लोग ही दिए हैं। बाकी सभी कर्मचारी तीन-तीन महीने के अनुबंध पर हैं।

उन्होंने कहा कि अगर सभी संविदा कर्मियों हटा दिया जाएगा, तो महिला आयोग में ताला लग जाएगा। ऐसा क्यों कर रहे हैं ये लोग? यह संस्था खून पसीने से बनी है। उसको स्टाफ और सरंक्षण देने की जगह आप जड़ से खत्म कर रहे हैं? मालीवाल ने कहा मेरे जीते जी मैं महिला आयोग को बंद नहीं होने दूंगी। मुझे जेल में डाल दें, महिलाओं पर जुल्म न करें। डब्ल्यूसीडी विभाग द्वारा जारी एक आधिकारिक आदेश के मुताबिक, उपराज्यपाल ने नियुक्तियां खत्म करने संबंधी विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी, जिसके बाद यह आदेश जारी किया गया है। उपराज्यपाल ने विभाग के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है कि डीसीडब्ल्यू में उचित प्रक्रियाओं का पालन किए बिना संविदा कर्मचारियों की नियुक्ति को जारी नहीं रखा जा सकता।

सिसोदिया ने जमानत के लिए दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्व उपमुख्यमंत्री और आम आदमी पार्टी (आप) के नेता मनीष सिसोदिया ने कथित आबकारी नीति घोटाले के संबंध में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार और धन शोधन के मामलों में जमानत के लिए बृहस्पतिवार को दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया।

तत्काल सुनवाई के लिए कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ के समक्ष याचिका का उल्लेख किया गया। अदालत याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई करने के लिए सहमत हो गई। पीठ ने कहा, न्यायाधीश को फाइल देखने दीजिए, इसे कल आने दें।

सिसोदिया का प्रतिनिधित्व कर रहे वकील रजत भारद्वाज और मोहम्मद इरशाद ने कहा कि याचिकाकर्ता एक विधायक है। उन्होंने अदालत से जमानत की मांग करने वाली दोनों याचिकाओं को तत्काल सुनवाई के लिए सूचीबद्ध करने का आग्रह किया। सिसोदिया ने निचली अदालत के 30 अप्रैल के आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। निचली अदालत में दो मामलों में उनकी जमानत याचिका खारिज कर दी गई थी।

निचली अदालत ने 2021-22 की आबकारी नीति के निर्माण और कार्यान्वयन में कथित अनियमितताओं के संबंध में केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) और प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दर्ज भ्रष्टाचार और धन-शोधन मामलों में सिसोदिया की जमानत याचिका खारिज कर दी है।

पहाड़ों की ठंडी हवाओं से गिरा दिल्ली का पारा, जानें आज कैसा रहनेवाला है राजधानी का मौसम

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

दिल्ली वासियों के लिए मई की शुरूआत खासी राहत भरी रही। दिन भर धूप खिली रहने के बावजूद तेज हवाओं ने तापमान बढ़ने नहीं दिया। आलम यह रहा कि पहाड़ों पर हो रही बर्फबारी और वर्षा की ठंडक से बुधवार को दिल्ली के अधिकतम तापमान में खासी कमी देखने को मिली। बुधवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से पांच डिग्री कम 33.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। मंगलवार को यह 36.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। न्यूनतम तापमान सामान्य से चार डिग्री कम 21.0 डिग्री रिकार्ड हुआ। हवा में नमी का स्तर 49 से 15 प्रतिशत रहा।

तापमान फिर से बढ़ेगा

क्षेत्रीय मौसम पूवार्नुमान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने बताया, दिल्ली की ओर आने वाली हवा उत्तर पश्चिमी या पश्चिमी दिशा से आ रही है। यह हवा अपने साथ वहां की ठंडक भी लेकर आ रही है। बृहस्पतिवार से राजधानी में तापमान फिर से बढ़ने लगेगा और 37 डिग्री तक पहुंच जाएगा। शनिवार को यह 40 डिग्री तक पहुंच जाएगा।

गुरुवार को आसमान रहेगा साफ

मौसम विभाग ने बृहस्पतिवार को आसमान साफ रहने और दिन के दौरान 35 से 45 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने का अनुमान लगाया है। न्यूनतम और अधिकतम तापमान क्रमशः 21 और 37 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है। शनिवार को आंशिक तौर पर बादल छाए रहेंगे और रात में हल्की बरसात भी हो सकती है।

दिल्ली के स्कूलों के बाद अब राष्ट्रपति भवन को बम से उड़ाने की धमकी

पूर्वी दिल्ली। दिल्ली पुलिस के कंट्रोल रूम में बम की कॉल आने से हड़कंप मच गया। कॉल करने वाले ने पुलिस से कहा कि राष्ट्रपति भवन में बम रख दिया है, 15 मिनट के अंदर फट जाएगा। यह बात कहते ही कॉलर ने फोन बंद कर लिया।

कॉल आने के बाद पुलिस विभाग में हड़कंप मच गया। इसके बाद पुलिस ने मशक्कत कर आरोपित को दबोच लिया। आरोपित की पहचान रविंद्र तिवारी के रूप में हुई है। पुलिस ने इसके पास से एक मोबाइल बरामद किया है। थाना पुलिस की कई टीमें अलर्ट

पुलिस ने बताया कि सोमवार रात को एक पीसीआर को कॉल मिली कि राष्ट्रपति भवन में बम रख दिया है। कॉल करने वाले ने अपना नंबर भी बंद कर दिया था। थाना पुलिस के अलावा कई टीमों को अलर्ट किया गया। पुलिस ने नंबर के बारे में जानकारी निकाली और लोकेशन निकाली।

शराब के नशे में शख्स ने की कॉल इसके जरिये पुलिस सादतपुर पहुंची और आरोपित को दबोच लिया। पुलिस और आईबी ने उससे लंबी पूछताछ की। पुलिस को पूछताछ में आरोपित ने बताया कि वह पेशे से मजदूर है और उसने शराब के नशे में पुलिस को कॉल की थी। बता दें, बुधवार को दिल्ली के कई स्कूलों को बम से उड़ाने का ईमेल मिला था। इसके बाद पुलिस हरकत में आई और एहतियातन सभी स्कूलों की जांच की गई। इसमें पुलिस को कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला और ईमेल को फेक बताया।

नौवीं की छात्रा ने सहपाठी को मारे ब्लेड, टिफिन के खाने को लेकर हुआ था झगड़ा

नई दिल्ली। सर्वोदय विद्यालय गुलाबी बाग की नौवीं की छात्रा ने टिफिन के खाने को लेकर हुए विवाद में अपनी ही कक्षा की छात्रा के चेहरे पर ब्लेड से हमला कर घायल कर दिया। घायल छात्रा का अस्पताल में इलाज चल रहा है। घटना से जुड़ा वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। गुलाबी बाग इलाके में 30 अप्रैल की दोपहर में सर्वोदय विद्यालय के बाहर नौवीं कक्षा की दो छात्राओं के बीच टिफिन के खाने को लेकर विवाद हो गया था। टिफिन के खाने को लेकर हो गया झगड़ा आपसी विवाद इतना बढ़ गया कि एक छात्रा ने दूसरी छात्रों को चेहरे पर ब्लेड मारकर घायल कर दिया। दोपहर में लंच ब्रेक के दौरान छात्राओं में स्कूल से बाहर आकर टिफिन के खाने को लेकर झगड़ा शुरू हो गया। आरोप है कि इस दौरान एक छात्रा ने अपना टिफिन छुपाए जाने से नाराज होकर दूसरी छात्रा को गाली देना शुरू कर दिया। दूसरी छात्रा ने गाली दिए जाने से नाराज होकर गुस्से में आकर गाली देने वाली छात्रा के चेहरे पर ब्लेड से वार दिया। ब्लेड के हमले से छात्रा का चेहरा कट गया। जख्मी छात्रा को अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया है। छात्रा के चेहरे पर कई टांके आए हैं और अभी इलाज चल रहा है। इस मामले में गुलाबी बाग पुलिस थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपित छात्रा को एसडीएम के सामने पेश कर मामले की जांच कर रही है।

एम्स होस्टल में गर्ल स्टूडेंट सुसाइड, छात्राओं द्वारा प्रोटेस्ट

- एम्स के डायरेक्टर ऑफिस के बाहर धरना, इंसाफ की मांग
- नर्सिंग 2ह्ल ईयर की स्टूडेंट ने की थी होस्टल में खुदकुशी

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

एम्स के हॉस्टल में एक छात्रा के द्वारा खुदकुशी का ममला अब तूल पकड़ता जा रहा है। इस मामले को लेकर बुधवार को एम्स डायरेक्टर ऑफिस के बाहर प्रोटेस्ट किया गया। और वी वांट जस्टिस फॉर लक्ष्मी के नारे लगाए गए। पोस्टर लेकर काफी संख्या में गर्ल्स स्टूडेंट धरने पर बैठी हुई रही। इनको सपोर्ट में और भी स्टूडेंट साथ आ गए थे। यह लोग मामले की जांच करने और मृतक लक्ष्मी को न्याय दिलाने की मांग कर रहे थे। गौरतलब है कि बिहार की रहने वाली सकेंड ईयर की स्टूडेंट लक्ष्मी की बॉडी हॉस्टल के कमरे में फंदे से लटकी हुई मिली थी। सूचना मिलते ही मौके पर पुलिस टीम पहुंची तो पता चला कि उसने दुपट्टा से पंखे में फंदा लगाया और खुदकुशी कर ली। इसकी पुष्टि डीसीपी साउथ अंकित चौहान ने की थी। बिहार की रहनेवाली लक्ष्मी एम्स में नर्सिंग स्टूडेंट की सेकंड ईयर की छात्रा थी। पुलिस ने मृतक छात्रा की परिवार वालों को सूचना दे दी। उनके आने के बाद बॉडी का पोस्ट मार्टम करवाया जाएगा। छात्रों से मिली जानकारी के अनुसार लक्ष्मी के कमरे से सुसाइड नोट भी मिला है। जिसमें वह टॉर्चर और पढ़ाई का प्रेशर देने की बात लिखी है। इसी को लेकर फिर 200 से ज्यादा गर्ल्स स्टूडेंट प्रोटेस्ट करने लगी शांति पूर्वक। आरोप है, की काफी देर तक इन्हें हॉस्टल से बाहर निकलने नहीं दिया गया था। बाद में जब दूसरे स्टूडेंट के सपोर्ट से निकली तो नारेबाजी करती हुई डायरेक्टर ऑफिस के बाहर धरने पर बैठ गई। इस मामले को लेकर एम्स प्रशासन की तरफ से कोई अधिकारिक बयान नहीं आया।

16 साल पहले मर्डर, आजीवन कारावास की सजा

- 12 साल बताया जेल में, कोविड में पेरोल, हुआ फरार
- क्राइम ब्रांच ने आखिरकार दबोचकर भेजा तिहाड़

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

16 साल पहले हुए मर्डर के मामले में आजीवन कारावास की सजा पा चुके और जेल में 12 साल रह चुके एक पैरोल जंपर को क्राइम ब्रांच की टीम ने गिरफ्तार किया है। जिसकी पहचान हेमंत उर्फ पंडित के रूप में हुई है। इसकी 1 साल से नागलोई थाना की पुलिस को तलाश थी। इसे क्राइम ब्रांच के एजीएस की टीम ने गिरफ्तार करने में कामयाबी पाई है।

डीसीपी अमित गोयल ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी हेमंत उर्फ पंडित को राजस्थान के अलवर का रहने वाला है। इसने बबलू नाम के एक शख्स की नशे में आकर 2008 में हत्या कर दी थी। यह नांगलोई थाना के आर्म्स एक्ट के मामले में भी शामिल रहा है। यह आजकल मंगोलपुरी इलाके में ई रिक्शा चला रहा था। साथ ही यह दूसरे ई रिक्शा ड्राइवर से प्रोटेक्शन मनी के रूप में पैसा लेता था।

एसीपी नरेश कुमार की देखरेख में इंस्पेक्टर किशन कुमार, एसआई सचिन, मुकेश, ब्रज और अगम की टीम ने इस वांटेड पेरोल जंपर का पता लगाने के लिए लगी हुई थी। आखिरकार लंबी छानबीन के बाद इसके बारे में जानकारी मिली की यहां बुद्ध विहार इलाके में आजकल देखा जा रहा है। पुलिस टीम ने वहीं से इसको धर दबोचा। पता चला कि में यह कोविड के दौरान पैरोल मिला था। इसके बाद से यह सरेंडर करने की बजाए फरार हो गया।

बिंदापुर में भी पकड़ा गया साइकिल चोर

संवाददाता

बिंदापुर थाना की पुलिस टीम ने एक साइकिल चोर को गिरफ्तार करके उसके पास चोरी की दो साइकिल बरामद की है। गिरफ्तार आरोपी की पहचान गौरव के रूप में हुई है। यह डीडीए फ्लैट बिंदापुर का रहने वाला है और पहले से चोरी के दो मामलों में शामिल रहा है। इसकी गिरफ्तारी से तीन मामलों का खुलासा करने का दावा पुलिस ने किया है।

डीसीपी अंकित सिंह ने बताया कि एसएचओ राजेश मलिक की देखरेख में पुलिस टीम ने सीसीटीवी फुटेज की मदद से इस आरोपी के बारे में पता लगाया और फिर उसके बारे में सही जानकारी मिलने पर डीडीए पार्क के पास पकड़ा। जब चोरी की एक साइकिल के साथ जा रहा था फिर इसकी निशानदेही पर चोरी की एक और साइकिल बरामद की गई। पूछताछ की गई तो साइकिल के बारे में कोई जानकारी नहीं दी इसे गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया।

भारत पाक बॉर्डर पर मिला खेत में चाइना का ड्रोन

बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स की टीम ने पंजाब पुलिस के साथ मिलकर भारत-पाकिस्तान बॉर्डर के खेत पर दो अलग-अलग जगह पर ड्रोन बरामद किया है। इसमें से एक ड्रोन जो डैमेज हालत में मिला है, वह चीन का बना हुआ है। दिल्ली मुख्यालय से जानकारी देते हुए बीएसएफ के प्रवक्ता ने बताया कि 30 अप्रैल की देर शाम इसकी जानकारी मिली थी। जब टीम तरण तारण जिला के एरिया में सर्च ऑपरेशन बॉर्डर एरिया में कर रही थी। इस दौरान खेत में डैमेज हालत में ड्रोन मिला। उसकी जब छानबीन की गई तो वह चीन का बना हुआ निकला। उसके बाद टीम ने आगे और भी सर्च ऑपरेशन जारी रखा। जिसके बाद एक और ड्रोन वहां से बरामद किया गया।

पश्चिमी दिल्ली में लगा कई किलोमीटर लंबा जाम, सड़क पर रेंगते रहे वाहन; लोगों का गर्मी से हुआ बुरा हाल

नई दिल्ली, प्रात : किरण संवाददाता

पश्चिमी दिल्ली। तपती गर्मी में उत्तम नगर, जनकपुरी से लेकर राजौरी गार्डन तक बृहस्पतिवार को सुबह ग्यारह बजे से कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा। साथ ही पंखा रोड पर भी वाहन रेंग-रेंगकर आगे बढ़ते हुए नजर आए। मिनटों का सफर करने में लोगों को घंटों लगे। साथ ही धूप में खड़े वाहन चालकों का गर्मी और जाम से बुरा हाल रहा।

वाहनों का दवाब अधिक होने से लोगों ने सर्विस लेन का सहारा लिया, जबकि कुछ वाहन चालक गलियों के जरिए अपने गंतव्य तक पहुंचे। हालांकि कुछ चौराहों पर पुरुष के अलावा महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी भी तैनात रहीं।

सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा

उत्तम नगर से होते हुए जनकपुरी की ओर जाने वाले रास्ते पर सुबह से ही वाहनों का अधिक दवाब रहा। वाहन चालकों को मिनटों का सफर तय करने में घंटों का समय लगा। तेज धूप के कारण वाहन चालकों के पसीने भी छूटते हुए दिखे। जनकपुरी से तिलक नगर, टैगोर गार्डन और राजौरी गार्डन की तरफ जाने वाला रास्ते पर भी कई किलोमीटर तक लंबा जाम लगा रहा, जिसकी वजह से वाहन चालकों को दिक्कत का सामना करना पड़ा।

पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू

इन रास्तों पर जाम लगा होने से वाहन चालकों ने सर्विस लेन का प्रयोग किया लेकिन वहां पर अवैध पार्किंग के वाहन खड़े होने से केवल छोटे वाहनों को ही रास्ता मिल पाया, जबकि कार या अन्य वाहन बीच में ही फंस रहे। जाम की वजह से दो पहिया वाहनों ने पंखा रोड पर अवैध कट से आवाजाही शुरू कर दी।

महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं

कई वाहन चालक अपने बच्चों को स्कूल लेने के लिए जा रहे थे, उन्हें जाम के कारण घंटों सड़क पर धूप में ही खड़ा रहना पड़ा। वहीं उत्तम नगर के अलावा जनकपुरी के चौराहे पर महिला ट्रैफिक पुलिसकर्मी तैनात रहीं। वहीं ट्रैफिक पुलिस का कहना है कि हर चौराहों पर पुलिसकर्मी तैनात हैं जाम खुलवाया जा रहा है।

अरुण वर्मा ने किया श्री साई क्लिनिक पर आयोजित निशुल्क नेत्र कैंप का शुभारंभ

प्रात : किरण संवाददाता

स्योहारा। स्योहारा रियासत के निकट स्थित श्री साई क्लिनिक पर हर माह आयोजित होने वाले निशुल्क नेत्र शिविर का वरिष्ठ भाजपा और व्यापारी नेता अरुण वर्मा और देहरादून जोलोग्रांट से आई डा.अन्नपूर्णा तथा विकास वर्मा ने सयुक्त रूप से फीता काट कर शुरू किया इस मौके पर शिविर की प्रशंसा करते हुए अरुण वर्मा ने कहा कि इस तरह के आयोजित होने शिविरों से गरीब और जरूरतमंदों को फ्री और अच्छी सेवा मिलती है और डा,विकास वर्मा द्वारा हर माह इस तरह के आयोजन कराना काबिले तारीफ है। जिसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। डॉ.विकास वर्मा ने बताया कि आज आयोजित इस शिविर में सैकड़ों लोगो ने लाभ उठाया जिनमे से कई लोग आपरेशन के लिए चिन्हित किए गए। इस मौके पर जौलीग्रांट से डा.अन्ना पूर्णा,सुबोध गुप्ता, संबोधी,विक्रम के अलावा श्री साई क्लिनिक से डा विकास वर्मा,डा मो.सालार,हैदर अली,नीरज,अनुज रानी,कृष्ण कुमार,दानिश जैदी, आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

रतनपुर में बाइक सवार दो युवक सड़क दुर्घटना मे घायल

गिद्धौर। थाना क्षेत्र के रतनपुर-गुगुलडीह मार्ग के टुल्लू ढाबा मोड़ के समीप अनियंत्रित बाइक सवार दो युवक सड़क दुर्घटना में घायल हो गया। इस घटना में बाइक सवार दोनों युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसका उपचार सदर अस्पताल जमुई में किया जा रहा है। घटना बुधवार की दोपहर रतनपुर - गुगुलडीह मार्ग के टुल्लू ढाबा के समीप हुई। बाइक सवार दोनों युवक अपने निजी काम से वापस अपने घर लौट रहे थे। बाइक तेज रफ्तार होने के कारण उक्त मार्ग में अनियंत्रित होकर सड़क के किनारे पोल से टकरा गया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी की बाइक सवार दोनों युवक बुरी तरह से घायल होकर सड़क पर गिर पड़ा। वहीं इस घटना के बाद स्थानीय लोगों के द्वारा एंबुलेंस से दोनों घायल को इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई में भर्ती कराया गया,जहां दोनों घायल युवक का इलाज चल रहा है। वहीं घायल युवक की पहचान टाउन थाना क्षेत्र के हरनारायणपुर निवासी नीतीश कुमार एवं मलयपुर निवासी राहुल कुमार के रूप में हुई। दोनों युवक दोस्त था। दोनों घायल युवक की हालत नाजुक बनी हुई है।

मुसीबत- गिद्धौर प्रखंड के आधा दर्जन गांवों में पानी के लिए हाहाकार, अधिकारियों व प्रशासन का नही है ध्यान

ग्रामीणों ने बताया कैसा होता है सात निश्चय योजना में शामिल हर घर नल का जल

- नदी खोदकर गंदा पानी पीने को विवश है मौरा के ग्रामीण
- सात गांव के ग्रामीण आज भी नदी में गढ़ा खोदकर गला तर करते हैं

प्रात: किरण, संवाददाता

जमुई/गिद्धौर :- सात निश्चय योजना के तहत हर घर नल का जल उपलब्ध कराने को लेकर भले ही बिहार सरकार के अधिकारी रोज नए-नए वायदे कर रही हो। लेकिन आजादी के 70 साल बाद भी गिद्धौर प्रखंड के कई इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों के नसीब में स्वच्छ पेयजल नसीब नहीं हो पा रहा है। प्रखंड के कई ऐसे पंचायत हैं, जहां के रहने वाले आज भी सूखी नदी में गढढ़ा खोदते हैं और फिर पानी निकालकर अपनी प्यास बुझाते हैं। गिद्धौर प्रखंड और खैरा प्रखंड के बीचो बीच बहने वाली ह्यबरनारह्न नदी जो अकसर सूखी रहती है,पानी पीने से लेकर स्नान और शौच क्रिया तक के लिए यहां के लोग इसी नदी पर आश्रित हैं। दरअसल,गिद्धौर प्रखंड मुख्यालय से सात किलोमीटर दूरी पर स्थित मौरा पंचायत में मौरा,भलुआई, लेवा,दुल्लमपुर,अलखपुरा,बंधौरा और गरमजरुआ गांव आता है,और इस गांव में रहने वाले ग्रामीणों को स्वच्छ पानी नसीब नहीं हो पा रहा है। लेकिन ना तो स्थानीये प्रशासन ना जिला प्रशासन को चिंता है कि मौरा पंचायत के ग्रामीण इस भीषण गर्मी में दिन में नही रात में ही नदी से पानी लाने को मजबूर है। ग्रामीण पेयजल आपूर्ति की स्थिति बदतर है

कहते हैं ग्रामीण

ग्रामीणों का कहना है कि आज के इस दौर में जहां सरकार की ओर से बहुचर्चित योजना ह्यहर घर नल का जलह्न चल रहा है, वहीं, ग्रामीणों को बरनार नदी में रोज कुआं खोदकर पानी पीना पड़ रहा है।मौरा पंचायत के रहने वाले अजीत झा,रोहित कुमार,सरिता देवी,खुशबू कुमारी,ज्योति कुमारी,नेहा कुमारी,बिन्दू देवी,रूबी देवी,माया देवी,भारती देवी,उर्मिला देवी,संजू देवी

समेत कई ग्रामीणों ने बताया कि पीएचईडी विभाग को सूचना देने के बावजूद भी पानी का टैंकर या अन्य साधन अभी तक उपलब्ध नही करा पाया है।वही वार्ड नंबर 4,7,11 में शादी का कार्यक्रम होने के कारण और पानी का समस्या उत्पन्न हो गया।विभाग को फोन से सूचना देने के बावजूद भी पानी नही दिया जा रहा है।वही स्थानीये ग्रामीण दिन में भीषण गर्मी होने के वजह से शाम व रात में पानी लाने को मजबूर है। यहां के लोग इसी नदी के सहारे अपनी प्यास बुझाते हैं,और अपने दिनचर्या के कामों का निष्पादन करते हैं।

कहते हैं मुखिया

वहीं, मौरा पंचायत के मुखिया धनराज यादव का कहना है कि पंचायत में नल जल योजना पूरी तरह ठप है। विभागीय उदासीनता के चलते नल जल योजना मेरे पंचायत में फेल है।उन्होंने इस बाबत पीएचईडी के कार्यपालक अभियंता शिवदयाल पर आरोप लगाते हुए कहा कि इस संदर्भ में विभाग को सूचना दी गई है, बावजूद इस ओर कोई कार्रवाई अबतक नहीं की गई है।

डिग्रीधारी रंगकर्मियों ने सीएम से मिल नाट्य शिक्षक की बहाली को ले सौंपा मांग पत्र

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिला मुख्यालय स्थित एमएलसी ललन सर्राफ आवास पर जिले के डिग्रीधारी रंगकर्मियों ने नाट्य छात्र संघ बिहार के बैनर तले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिलकर नाट्य शिक्षक की बहाली को लेकर मांग पत्र सौंपा। मौके पर जिले के डिग्रीधारी रंगकर्मी अमित आनंद, सुनीत साना, अमित कुमार अंशु, गोपाल कुमार, श्याम सुंदर साह ने कहा कि हमलोगों ने नाटय एवं रंगमंच पढ़ाई की है और स्नातकोत्तर की डिग्री भी प्राप्त की है। एनसीएफ- 2005 में लोक कलाओं एवं ललित कलाओं के अंतर्गत नाट्य विषय स्वीकृत है तथा एनसीएफ 2009 तथा नई शिक्षा नीति में प्रत्येक शिक्षण संस्थान में नाटक के माध्यम से पढ़ाई पर जोड़ दिया गया है। बिहार के ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा से नाट्यशास्त्र की पढ़ाई होती और हर वर्ष दो दर्जन से अधिक की संख्या में रंगकर्मी डिग्री लेकर बेरोजगारी की जिंदगी जीने को बेबस हैं। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार ललित कला के अंतर्गत आने वाली हर कलायें जैसे संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला आदि के अभ्यर्थियों को शिक्षक के रूप में बहाल किया जा रहा है, ठीक उसी प्रकार नाट्य विषय को एसटीईटी में शामिल कर, परीक्षा में बैठने का मौका देकर रंगमंच (नाट्यशास्त्र) में डिग्री धारक छात्र-छात्राओं को शिक्षक के रूप में बहाल किया जाए जिससे डिग्रीधारी रंगकर्मियों के भी दामन से बेरोजगारी का दाग धुल सके।

तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने ट्रेक्टर में पीछे से मारी जोरदार टक्कर, ट्रेक्टर चालक की हुई मौत

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा अज्ञात वाहन ने पीछे से ट्रैक्टर ट्रॉली में जोरदार टक्कर मार जिसमें मौके वारदात पर ट्रेक्टर चालक की घटनास्थल पर ही मौत हो गई। मामला पुरैनी थाना क्षेत्र के एसएच 58 की है जहां एमडीएम ईंट भट्ठा से ट्रेक्टर पर ईंट लेकर जा रहे ट्रेक्टर ट्राली में तेज रफ्तार अज्ञात हाइवा ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। वहीं स्थानीय लोगों ने सड़क जाम कर दिया। सूचना के बाद मौके वारदात पर पहुंची पुलिस ने समझा बुझा कर सड़क जाम हटवाया। बता दें कि पुरैनी थाना क्षेत्र के एसएच 58 पर जय दुर्गा फ्यूल सेंटर के समीप ये हादसा हुई। बहरहाल पुलिस शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु सदर अस्पताल भेज दिया है। फिलहाल अज्ञात वाहनों की धर पकड़ हेतु सभी जगह छापेमारी की जा रही है। वहीं मृतक की पहचान पुरैनी प्रखंड अंतर्गत औराय पंचायत के तालीम टोला वार्ड संख्या 18 निवासी उमेश राम के 19 वर्षीय पुत्र अरविंद कुमार के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि भटोनी गांव से ईट पहुंचा कर चिमनी भट्ठा पर लौट रहा था जैसे ही जय दुर्गा फ्यूल सेंटर से 300 मीटर उत्तर चिमनी भट्ठा के पास पहुंचा तो पीछे से आ रही अज्ञात वाहन ने ट्रैक्टर को पीछे से टक्कर मार दी जिससे ट्रैक्टर चालक की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई। ट्रेक्टर चालक की मौत की खबर सुनकर घटना स्थल पर पहुंचे परिजनों का रो रोकर बुरा हाल है वहीं स्थानीय लोग तत्काल मुवावजे की मांग कर रहे हैं। वहीं थानाध्यक्ष धर्मेंद्र कुमार ने बताया कि जांच की जा रहा है एफआईआर दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सड़क दुर्घटना में मौत

प्रात : किरण संवाददाता

चौसा (मधेपुरा) भटगामा -उदाकिशुनगंज मुख्य मार्ग एसएच -58 पर गुरुवार को सड़क दुर्घटना में एक सब्जी व्यवसाई की मौत हो गई। घटना के संबंध में बताया गया है मृतक उदाकिशुनगंज थाना क्षेत्र अंतर्गत बीड़ी रणपाल वॉर्ड नंबर 04 निवासी भगवान भगत के पुत्र मिथुन कुमार (32वर्ष) अन्य दिनों के तरह गुरुवार को भी भागलपुर से परवल लेकर वापस बीड़ी रणपाल जा रहे थे इसी दौरान चौसा थाना क्षेत्र अंतर्गत धुरिया मोड़ के समीप पीछे से ही अज्ञात वाहन चालक ने धक्का मारते हुए भाग निकला हालांकि जैसे ही घटना घटित हुई वैसे ही आसपास के लोगों उन्हे सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चौसा में भर्ती कराया जहां ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक डॉ अमित कुमार ने प्रारंभिक जांच के दौरान मिथुन को मृत घोषित कर दिया। बताया जा रहा है की मृतक अपने वृद्ध व अंधा पिता माता पत्नी और बच्चे का मात्र एकलौता कमाऊ सदस्य था जो सब्जी बेचकर परिवार का भरण पोषण करता था। वहीं घटना के बाद अवर निरीक्षक संजीव कुमार गुप्ता ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चौसा में पहुंचकर मामले का पड़ताल कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल मधेपुरा भेज दिया है।

स्कूल नहीं तो वोट नहीं को लेकर पदाधिकारी हुए जागरूक

प्रात : किरण संवाददाता

आलमनगर (मधेपुरा) बसनवाड़ा पंचायत के वार्ड नंबर 5 बच्ची वासा पहुंच कर प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार अंचलाधिकारी दिव्या कुमारी एवं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी विजय ठाकुर ने ग्रामीणों को वोट बहिष्कार समाप्त करने एवं मतदान के लिए जागरूक किया। ग्रामीणों ने बताया कि वर्ष 2016 में नव सृजित प्राथमिक विद्यालय का मंजूरी किया गया था जिसका आठ वर्ष हो गया है परन्तु आज तक विद्यालय का निर्माण नहीं हो पाया जबकि विद्यालय भवन निर्माण के लिए प्रयाप्त जमीन है। यहां से तीन किलोमीटर दूर मध्य विद्यालय तेलीहारी मे शिफ्ट है। जिस वजह से बच्चों को काफी परेसानी होती है। इस समस्या से परेशान ग्रामीणों ने मिलकर यह निर्णय लिया था कि जब तक विद्यालय निर्माण को लेकर कोई ठोस पहल नहीं उठाया जाता है तब तक हम लोग वोट बहिष्कार करेंगे। मतदान तभी करेंगे जबतक विद्यालय का निर्माण हो जाएगा। जिसको लेकर गुरुवार को प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार, अंचलाधिकारी दिव्या कुमारी, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी विजय ठाकुर, बसनवाड़ा पंचायत के वार्ड नंबर 5 बच्ची वासा पहुंच कर ग्रामीणों से विद्यालय निर्माण को लेकर चर्चा किया एवं विद्यालय परिसर पहुंचकर जमीन का जायजा लिया। अंचलाधिकारी दिव्या कुमारी ने बताया कि अगर यह सरकारी जमीन है तो विद्यालय का निर्माण भी यहीं पर होगा। वहीं प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी विजय ठाकुर से ग्रामीणों का मांग करते हुए कहा कि जब तक भवन निर्माण नहीं होता है हम लोग अपने स्तर से यहां कच्चा मकान का निर्माण करते हैं इसी में विद्यालय का पठन पाठन हो जिस पर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ग्रामीणों की मांग को मानते हुए अभिलंब विद्यालय का पठन पाठन अपने मूल जगह पर करने की बात कही। जिसके बाद ग्रामीणों के द्वारा वोट बहिष्कार को समाप्त कर मतदान करने की बात कही गई। इसके उपरांत प्रखंड विकास पदाधिकारी निशांत कुमार अंचलाधिकारी दिव्या कुमारी प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी विजय ठाकुर ने उपस्थित ग्रामीणों को मतदान के लिए शपथ दिलाया।

मेरा मतदान मेरा स्वाभिमान, 400 जीविका दीदी हुई कार्यक्रम में सम्मलित

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह जिला पदाधिकारी श्री विजय प्रकाश मीणा के नेतृत्व में डीआरसीसी परिसर में जीविका दीदियों एवं कैडरों के साथ मतदाता जागरूकता संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मधेपुरा जिले के सभी प्रखंडों से सीएलएफ लीडर एवं लगभग 400 जीविका दीदियां सम्मिलित हुईं। जिला पदाधिकारी द्वारा जीविका के कार्यों की सराहना करते हुए मतदाता जागरूकता कार्यक्रमों में उनकी सहभागिता की महत्ता पर प्रकाश डाला गया और लोकतंत्र की सारथी बनकर मतदाताओं को जागरूक करने का दायित्व सौंपते हुए मतदाता शपथ दिलाया गया। इस क्रम में उनके द्वारा सभी जीविका दीदियों से अपील की गई कि मतदाताओं को जागरूक करने के दौरान मतदान की तिथि बताने के साथ -साथ मतदान का समय सुबह 7:00 से संध्या 6:00 बजे तक, मतदान केंद्रों पर जिला प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं यथा शेड, मटके का पानी, शौचालय, रैम्प, वॉलिंटियर्स, मेडिकल टीम तथा वोटर आईडी कार्ड के अलावा मतदान करने हेतु वैकल्पिक दस्तावेज यथा आधार कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, बैंक पासबुक के बारे में जानकारी देने का आवाहन किया गया। साथ ही साथ अधिक मतदान करने वाले मतदान केंद्रों की टीम को तथा टॉप 3 प्रखंडों को पुरस्कृत करने से संबंधित जानकारी भी दी गई।

राजाओं के द्वारा जनहित में किए गये कार्यों को देश भूल नहीं सकता : कुमार कपिलेश्वर

प्रात : किरण संवाददाता

दरभंगा। भारतीय समाज को इस मेंटेलिटी के लोग केवल शोषक और शोषित की दृष्टि से ही देखते आए हैं।भारत के राजा-महाराजाओं के प्रति राहुल गांधी का बयान यह साबित करता है कि स्वतंत्रता पश्चात कांग्रेसी सरकारों ने समाज को अपना कुटुंब मानने वाले, अपने परिवार का हिस्सा मानने वाले और समाज के लिए लोक-कल्याणकारी कार्य करने को अपनी प्राथमिकता मानने वाले राजा-महाराजाओं को कम्युनिस्टों के साथ मिलकर शोषण करने वाला स्थापित कर दिया।जबकि सच्चाई यह है कि देश के अनेकों राजाओं द्वारा जनहित में किए कार्यों की अनदेखी नहीं की जा सकती है। लेकिन कांग्रेस नेता वैसे अपने देश के राजवंशों के पूर्वजों को शोषक बोलकर अपनी दूषित मानसिकता का परिचय दिये हैं। राज दरभंगा के कुमार कपिलेश्वर सिंह ने कहा कि मेरे भी पूर्वजों ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर सनातन हिन्दू धर्म जागरण आदि विषयों को सदैव समर्थन और सहयोग प्रदान किया।स्वतंत्रता आंदोलन के सभी प्रकल्पों को राज दरभंगा का अहर्निश संरक्षण मिला। स्वतंत्रता पश्चात महाराज कामेश्वर सिंह जी द्वारा किए गये लोक-कल्याणकारी निर्णयों की कही-अनकही कथाओं और कर्तृत्व से तो दरभंगा का प्रत्येक कोना प्रदीप्त हो रहा है।देश के अनेक राज्यों में विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ चाहे दरभंगा में दो-दो विश्वविद्यालयों की स्थापना हो, दरभंगा मेडिकल कॉलेज की नींव हो, दरभंगा एयरपोर्ट हो, चीन युद्ध में दिया गया सहयोग हो, भू-दान में देश के गरीब बंधुओं के लिए हजारों एकड़ जमीन दान हो किसी भी समय और कैसी भी प्रतिकूल परिस्थिति में राज दरभंगा ने लोक कल्याण के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाया।भारतीय समाज को तोड़नेवाली मानसिकता से ग्रसित राहुल गांधी और कांग्रेस पार्टी से हम सभी भारतीयों को सचेत रहने की आवश्यकता है। और मैं कांग्रेस के इस भावना की कड़ी निंदा करता हूँ।

अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर महुआ में एसयूसीआई के बैनर तले मनाया गया मजदूर दिवस

प्रात : किरण संवाददाता

महुआ महुआ के फुदेनी चौक पर एस यू सी आई कम्युनिस्ट के बैनर तले अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस के मौके पर एक कार्यकर्म का आयोजन किया गया। इस मौके पर महुआ में मजदूरों को संबोधित करते हुए एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के हाजीपुर लोकसभा प्रत्याशी कॉमरेड राजेश कुमार रौशन ने कहा कि 19 वीं शताब्दी में पूंजीपतियों द्वारा कारखानों में अमानवीय शोषण के खिलाफ मजदूरों का ताकतवर आंदोलन शुरू हुआ। सन 1886 में 01 मई को मजदूरों ने अपने काम को 8 घंटे करने, सामाजिक सुरक्षा सहित अन्य मांगों को लेकर अमेरिका के शिकागो शहर में हजारों हजार मजदूरों का विशाल जुलूस निकाला जिस पर पुलिस द्वारा गोली चलाने से अनेकों मजदूर मारे गए और सकड़ों की संख्या घायल हो गए। इस शहादत से दुनिया भर में मजदूरों का आंदोलन तेज हुआ और आगे चलकर मजदूरों के लिए 8 घंटे काम का अधिकार हासिल हुआ और उसी 1 मई के दिन को 1889 से अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाया जाने लगा। 1917 में रुस में किसान मजदूरों ने मिलकर महान नेता लेनिन के नेतृत्व में दुनिया की पहली सामाजवादी क्रान्ति सफल की और शोषणविहीन समतामूलक खुशहाल समाज का निर्माण किया।उन्होंने आगे कहा कि यह दुखद है कि वर्तमान समय में मजदूर वर्ग को विभिन्न जात, धर्म व संप्रदाय बांटकर पूंजीपतियों की सेवक पार्टियां सत्ता हासिल कर रही है, यही नहीं लाल झंडे की तथाकथित वामपंथी पार्टियां भी उस फिरका परस्त पूंजीवादी राजनीति में शामिल है।

अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस पर संगोष्ठी सभा का किया गया आयोजन, दी वधाई

मजदूर दिवस की इतिहास, वर्तमान दशा दिशा एवं हमारी भूमिका, विषयक सभा आयोजित

- मजदूर दिवस पर फासीवादी पूंजीवादी सरकार को उखाड़ फेंकने का किया आह्वान - किरण देव यादव

प्रात : किरण संवाददाता

खगड़िया। अंतर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के अवसर पर देश बचाओ अभियान एवं असंगठित निर्माण मजदूर यूनियन के बैनर तले इस्लामपुर खगड़िया में मजदूर सभा का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता देश बचाओ अभियान एवं असंगठित निर्माण मजदूर यूनियन के संस्थापक अध्यक्ष किरण देव यादव ने किया।

इस अवसर पर मजदूरों का इतिहास, वर्तमान दशा व दिशा एवं हमारी भूमिका विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम आंदोलन में शहीद मजदूर के प्रति 2 मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई तथा मजदूर किसान जन विरोधी फासीवादी पूंजीवादी सरकार को उखाड़ फेंकने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में दुनियां के मजदूरों एक हो, शहीद मजदूर अमर रहे, शहीदों तेरे अरमानों को मंजिल तक पहुंचाएंगे, कार्ल मार्क्स लेनिन अमर रहे, नारों को बुलंद किया गया।

कार्यक्रम में मजदूर संगठन का पत्रिका ह्लवर्ग संघर्ष की पुकारह्ल का विमोचन एवं वितरण किया गया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजसेवी किरण देव यादव ने कहा कि 1886 ईस्वी में अमेरिका के शिकागो शहर में कपड़ा मील में 8 घंटा काम 8 घंटा आराम 8 घंटा मनोरंजन के सवाल को लेकर हड़ताल हुई, जिस पर पूंजीवादी फासीवादी ताकतें ने अंधाधुंध गोलियां चलाकर सैकड़ों मजदूरों को शहीद कर दिया, घायल मजदूरों ने खून से लथपथ सनी कपड़ों को लहराते हुए दुनियां के मजदूर एक हो नारों को बुलंद करते हुए क्रांति का प्रतीक लाल झंडा का प्रतीक बनाया और अंततः मजदूरों की जीत हुई । किंतु वर्तमान केंद्रीय सरकार 4 लेबर कोड बिल काला कानून लाकर मजदूरों को अधिकार से वंचित कर दिया।

श्री यादव ने फांसीवादी पूंजीवादी जुमलेबाजी मोदी सरकार को उखाड़ फेंकने का आह्वान किया।

किसान महासभा के संयोजक धर्मेंद्र कुमार ने किसान मजदूर का दशा दिशा पर विस्तृत चर्चा किया। असंगठित निर्माण मजदूर यूनियन के सचिव सुनील कुमार ने मजदूरों की भूमिका, मजदूरों को निबंधन करने, निबंधन कार्ड बनाने, सरकारी योजना का लाभ दिलाने संबंधित विस्तार से चर्चा किया।

कार्यक्रम में धर्मेंद्र कुमार सुनील कुमार सीमा देवी रितु देवी मूंगा देवी पार्वती देवी सपना देवी रेणु देवी सुजीत ठाकुर उमेश साहनी विलास पासवान देवानंद पासवान राजेश पासवान ऋषि देव साहनी सिकंदर शाह लूखो देवी रणधीर कुमार साहिल कुमार प्रेम कुमार आदि दर्जनों मजदूरों ने कहा कि जो मजदूरों के हित की बात करेगा, वहीं खगड़िया व देश में राज करेगा। जो प्रत्याशी मजदूरों का सवाल अपने घोषणा पत्र में दर्ज करेगा, वहीं खगड़िया में राज करेगा।

उदाकिशुनगंज में सीएम नीतीश कुमार ने किया जन सभा को संबोधित

- लालू परिवार पर जमकर साधा निशाना

प्रात : किरण संवाददाता

मधेपुरा जिले के उदाकिशुनगंज अनुमंडल स्थित एसबीजेएस+2 हाई स्कूल मैदान में बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने जन सभा को संबोधित किया। इस दौरान एनडीए समर्थित जेडीयू प्रत्याशी दिनेश चंद्र यादव को जिताने का लोगों से अपील किया। यहां कार्यक्रम में मौजूद जनता को संबोधित करते हुए सीएम नीतीश कुमार ने राजद सुप्रीमो लालू यादव पर जमकर निशाना साधा कहा जिन लोगों को 15 साल मौका मिला वे बिहार में क्या काम किए आप सबको मालूम है। शाम होते घर बाहर नहीं निकल पाते थे। लोग इनके सासन काल में सबसे ज्यादा हिंदू मुस्लिम होता था और हमे जब मौका मिला तो बिहार के हित में सिर्फ काम किया जो सबके सामने है। हमने 2005 में सबसे पहले कानून का राज्य कायम किया सभी जगहों पर हिंदू मुस्लिम मामले को समाप्त कर मुस्लिम समुदाय के लिए सभी जगहों पर कब्रिस्तान का घेरा बंदी किया मदरसे के लिए भी काम किया उनके हित में कई काम भी हमने किया वे लोग तो सिर्फ नाम पर वोट का इस्तेमाल किया। आज बिहार में चारो तरफ विकास की रोशनी जगमगा रही है चाहे वह पुल पुलिया और सड़क मार्ग का मामला हो सभी जगहों पर लगातार कार्य चल रहा है और कई जगहों कार्य पूर्ण भी हो चुका है। उन्होंने कहा कि आपके मधेपुरा में 781 करोड़ की लागत से आरओबी निर्माण कार्य प्रारंभ है जिसका उद्घाटन हम लोगों ने किया है। इतना हीं नहीं उदाकिशुनगंज में आईटीआई इंजीनियरिंग कॉलेज, पारा मेडिकल कॉलेज निर्माण के दिशा में कार्य चल रहा है साथ ही मुरलीगंज में अनुसूचित जाति जनजाति आवासीय विद्यालय का निर्माण किया गया। उन्होंने कहा कि जब 2008 में कोसी बांध टूटने से तबाही मची थी तो हम इन इलाके में घूम घूम कर सभी जगहों का जायजा लिया जहां पुल पुलिया सड़क ध्वस्त हुई उन सभी पर हमने कार्य किया आज आपके सामने है।

सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करते पाए जाने पर दुकानदारों से वसूला गया जुमार्ना

प्रात : किरण संवाददाता

महुआ नगर परिषद कार्यालय महुआ द्वारा गुरुवार को महुआ के विभिन्न बाजारों और चौक चौराहा पर सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ के अभियान चलाते हुए में औचक छापामारी की गई। इस छापेमारी अभियान के दौरान महुआ के दर्जनों दुकानदार को सिंगल यूज प्लास्टिक का धरल्ले से उपयोग करते हुए पाए गए। जिसके तहत बिभीन्न दुकानदारों से आर्थिक दंड के रूप में 2 हजार 200 रूपए की राशि वसूली गई एवं 5 किलो सिंगल यूज प्लास्टिक पकड़ी गई। यह अभियान नगर सहायक लोक स्वच्छता एवं अवशिष्ट प्रावधान पदाधिकारी नेहा कुमारी के नेतृत्व में सघन छापामारी की गई। इस छापेमारी अभियान के दौरान महुआ नगर परिषद के नगरकर्मी अभय कुमार, सफाई पर्यवेक्षक सुनील कुमार ,गुड्डू राय सूरज कुमार राजा कुमार आदि के साथ साथ अनेकों कर्मी भी शामिल थे। जैसे ही नगर परिषद के कर्मियों एवं पदाधिकारी के द्वारा महुआ के गांधी चौक, बच्चन शर्मा चौक सहित अनेकों दुकानदारों के पास जांच अभियान में पहुंचे तो पदाधिकारी को देखकर दुकानदारों में हड़कंप मच गया और बाजार में घंटो अफरातफरी मची रही।छापेमारी के दौरान दर्जनों दुकानदार सिंगल यूज प्लास्टिक का प्रयोग धडल्ले से करते पाए गए ।ज्ञात हो कि बिहार सरकार के द्वारा कई वर्षों से सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाई जा चुकी है ।उसके बावजूद नियम कानून को ताक पर रखते हुए महुआ नगर परिषद के विभिन्न दुकानदारों के साथ-साथ सुदूर देहात के दुकानदारों एवं आम जनों के द्वारा भी धरल्ले से सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग किया जा रहा है। परंतु हद तो तब हो जाती है जब नियम कानून को बनाने वाले सरकारी कार्यालय में भी सिंगल सरकार के कानून को ही ताक पर रखते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करते हुए देखा जा सकता है।

विचार मंथन

सम्पादकीय

आरक्षण का मुद्दा गरमाया

चुनाव प्रचार में इन दिनों आरक्षण का मुद्दा गरमाया हुआ है। प्रारंभिक तौर पर आरक्षण को सबसे निचले वर्गों की जातियों को आर्थिक तथा राजनीतिक संबल प्रदान करने के लिए वैधानिक तौर पर आरक्षण प्रदान किया गया था।बाद में आरक्षण का विस्तार होता गया और इसमें नये-नये जाति समूह शामिल होते चले गए।आरक्षण प्राप्त करने के लिए जाट और मराठा जैसे शक्तिशाली समूहों को आंदोलन की राह पकडी पड़ी।दरअसल, जो आरक्षण निचली पायदान पर खड़े जाति समूहों के उत्थान के लिए था, वह सभी जाति समूहों के लिए राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने का हथियार बन गया। कहने की जरूरत नहीं है कि आज आरक्षण भारतीय समाज के एक बहुत बड़े वर्ग में असंतोष और चिंता का कारक बना हुआ है।हिन्दू समाज के अनारक्षित जाति समूह मानते हैं कि उनके साथ अन्याय किया जा रहा है। ऐसी सूरत में एक ऐसे आर्थिक ढांचे पर बल दिए जाने की जरूरत थी जिसमें बिना आरक्षण की सीढ़ी के सभी निचले वर्ग के लोगों को उत्थान के अवसर प्राप्त हों और जातीय आग्रह सामाजिक विग्रह के कारण न बनें लेकिन अब आरक्षण की नीति एक चिंताजनक मोड़ पर ले आई है।एक ओर जहां कांग्रेस के नेता विशेषकर राहुल गांधी आरोप लगा रहे हैं कि मोदी तीसरी बार सत्ता में आए तो संविधान बदल देंगे और आरक्षण खत्म कर देंगे। दूसरी ओर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी अपनी हर सभा में कह रहे हैं कि कांग्रेस ने आरक्षण को मुस्लिम तुष्टिकरण का नया औजार बना लिया है।वह बार-बार कर्नाटक का उदाहरण दे रहे हैं जहां कांग्रेस ने सभी मुस्लिम जातियों को पिछड़े वर्ग में शामिल करके पिछड़े वर्ग के कोटे से ही 4 प्रतिशत का आरक्षण दे दिया जिसे बाद में भाजपा सरकार ने निरस्त कर दिया। मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंचा जहां भाजपा सरकार के फैसले पर रोक लगा दी गई है।मोदी अपनी हर सभा में खुलकर कह रहे हैं कि अगर कांग्रेस सत्ता में आई तो दलित और पिछड़ों का आरक्षण समाप्त कर मुसलमानों को दे देगी।संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण की व्यवस्था नहीं है। लेकिन कांग्रेस ने चोर दरवाजे से कर्नाटक में आरक्षण देकर जो कदम उठाया है, उसके दुष्परिणाम समझ नहीं पा रही। बेशक, भाजपा को विरोध का बड़ा चुनावी मुद्दा मिल गया है।

कोरोना वैक्सीन पर राजनीति नहीं

संजय गोस्वामी

कोरोना की कोविशील्ड वैक्सीन बनाने वाली ब्रिटिश कंपनी एस्ट्राजेनेका ने कोर्ट में माना है कि इस वैक्सीन से कुछ लोगों को दिल का दौरा और ब्रेन स्ट्रोक का खतरा है. यह वही वैक्सीन है जिसका भारत में बड़े पैमाने पर सीरम इंस्टीट्यूट के जरिए उत्पादन किया गया था. एक निजी संस्थान द्वारा उत्पादित वैक्सीन को न केवल सरकार द्वारा प्रचारित किया गया, बल्कि इसे आईसीएमआर द्वारा प्रमाणित और सुरक्षित भी बताया गया। जबकि सभी जानते हैं कि वैक्सीन का ट्रायल बहुत जल्दबाजी में किया गया था. क्लिनिकल और अन्य परीक्षणों की लंबी और वर्षों-लंबी प्रक्रिया को कुछ महीनों और हफ्तों में यह कहकर संक्षेप में प्रस्तुत किया गया कि यह समय की आवश्यकता थी। प्रधानमंत्री ने स्वयं सीरम इंस्टीट्यूट का दौरा किया और इसके एमडी अदार पूनावाला के साथ देश को वैक्सीन उत्पादन बढ़ाने का आश्वासन दिया। उन्होंने खुद भी टीका लगवाया और देशवासियों से भी टीका लगवाने की अपील की. इसके बाद कोवैक्सिन, कोरवेबेक्स जैसी कई अन्य वैक्सीन भी आईं और लगाई गईं। सरकार ने इसे बड़े पैमाने पर खरीदा और जनता को मुफ्त में सप्लाई किया। पूरे देश में टीकाकरण शिविर आयोजित किये गये। वैक्सीन लेने के लिए लोगों को लंबी लाइनों में खड़ा होना पड़ा. वैक्सीन प्रमाणपत्र वितरित किए गए और कई सरकारी सेवाओं के लिए यह प्रमाणपत्र अनिवार्य कर दिया गया। यह प्रमाणपत्र आज भी हम सभी के मोबाइल फोन या दराज में मौजूद है। ये सब हुए कई साल बीत गए. कोरोना की कभी-कभी छोटी लहर की चर्चा के अलावा कोई बड़ी लहर नहीं आई है. ऐसा लगता है कि वैक्सीन का असर हुआ है. कोरोना के नए-नए वेरिएंट आते हैं और बिना कोई खास असर दिखाए वापस चले जाते हैं. पुराने वेरिएंट को वैक्सीन से खत्म कर दिया गया है और इम्यूनिटी बढ़ने से नए वेरिएंट को अपनी ताकत दिखाने और बढ़ने का मौका नहीं मिल रहा है. लेकिन दूसरी ओर, अचानक दिल का दौरा, हार्ट अरेस्ट और ब्रेन स्ट्रोक के मामले बढ़ रहे हैं. आए दिन हमें ऐसी खबरें और वीडियो पढ़ने, देखने और सुनने को मिलते हैं. न केवल भारत में, बल्कि ब्रिटेन सहित अन्य देशों में भी, जहां कोविशील्ड का आविष्कार किया गया था। स्ट्रेजेनेका कंपनी ने इसे सबसे पहले कहां बनाया था और किन देशों से लाइसेंस या सहयोग लेकर अन्य देश और उनकी वैक्सीन कंपनियां इसका उत्पादन कर रही हैं। सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया इनका सबसे बड़ा उत्पादक है और इसकी बनी वैक्सीन पूरी दुनिया में सप्लाई होती है. लेकिन अब एस्ट्राजेनेका मुश्किल में है और उसकी परेशानी का साया सीरम इंस्टीट्यूट से लेकर भारत सरकार तक दिखाई दे रहा है. चूंकि इन दिनों भारत में लोकसभा चुनाव चल रहे हैं कोविशील्ड पर एस्ट्राजेनेका के कबूलनामे से विपक्ष को सरकार के खिलाफ नया हथियार मिल गया है. कोविशील्ड के बारे में खतरनाक तथ्य सामने आने से उन विपक्षी दलों को भी नई ताकत मिलेगी जिनके नेताओं ने शुरूआत में इस वैक्सीन का मजाक उड़ाया था और इसे बीजेपी की वैक्सीन बताकर इसे लगवाने से इनकार कर दिया था। हालाँकि बाद में जनता के दबाव में उन्होंने वैक्सीन लगवा ली, लेकिन कई आम लोगों की तरह वैक्सीन को लेकर उनका संदेह पूरी तरह खत्म नहीं हुआ था. इनमें समाजवादी पार्टी के प्रमुख का नाम प्रमुख है. उनकी पार्टी इस चुनाव में भारत गठबंधन का हिस्सा है। जब से एस्ट्राजेनेका द्वारा अदालत में वैक्सीन की खामियों को स्वीकार करना मीडिया में उजागर हुआ है, जिस महिला की कथित तौर पर कोविशील्ड लेने के बाद मृत्यु हो गई, उसके माता-पिता ने सीरम इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया (एसआईआई) के खिलाफ मामला दर्ज करने का फैसला किया है, जिसके एक दिन बाद भारत में वैक्सीन बेचने वाली एस्ट्राजेनेका ने अदालत में स्वीकार किया कि उनका कोविड शॉट एक दुर्लभ दुष्प्रभाव का कारण बन सकता है।. एस्ट्राजेनेका का कबूलनामा सामने आने के बाद अभिभावकों को न्याय की उम्मीद है. नीति आयोग के सदस्य डॉ. वीके पॉल ने एक सम्मेलन बैठक में कहा, सीरम इंस्टीट्यूट के कोविशील्ड के दुष्प्रभाव नगण्य से भी कम हैं। कोविड-19 एक घातक बीमारी है, और हम सभी को जीवन में बाद में अनावश्यक स्थितियों से बचने के लिए उचित सावधानी बरतनी चाहिए। विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कोरोना और कोविशील्ड को लेकर चचाओं से भर गए हैं। ऐसा लगता है मानों सबको अपना गुस्सा निकालने का मौका मिल गया हो. कोई इसके लिए एस्ट्राजेनेका और अदार पूनावाला को जिम्मेदार ठहरा रहा है तो कोई इसे चुनावी बांड चंदे और विदेश में कॉरपोरेट जगत के लालच से जोड़ रहा है. कोरोना महामारी को लेकर अब भी लोगों में संदेह होने लगा है। वे पूछ रहे हैं कि क्या यह पश्चिमी अमीरों और शासकों की कोई सुनियोजित साजिश नहीं थी? जिसके तहत जनसंख्या को कम करने और फामेर्सी, अस्पताल, बीमा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग जैसे व्यवसायों को बढ़ावा देने के लिए दुनिया के करोड़ों लोगों को गिनी पिग बनाया गया और उनके जीवन और स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ किया गया और इसके लिए चीन जिम्मेदार है। आपको यह जानना चाहिए कि किसी भी दवा का मानव के ईलाज में प्रयोग करने से पहले क्लिनिकल परीक्षण किया जाता है वैक्सीन का साइड इफेक्ट क्लिनिकल परीक्षण में नगण्य है सबसे पहले किसी रसायन जो कि टीके या दवा के लिए प्रयोग किया जाना है का प्रयोगशाला में परीक्षण किया जाता है। यदि प्रयोगशाला में सफलता मिल जाती है, तो इसके बाद इसका प्रयोग छोटे जानवरों (जैसे चूहा, बिल्ली, आदि) पर किया जाता है। यदि इन पर भी प्रयोग सफल होता है तो यही प्रयोग विभिन्न जाति के बंदरों पर किया जाता है। इस परीक्षण में इस दवा के दुष्परिणाम तथा दवा के विषैलेपन का भी परीक्षण किया जाता है। यदि यहां तक सफलता मिल जाती है तो उसके बाद दवा नियंत्रक तथा अन्य नियामक एजेंसियों से मानव पर उपरोक्त दवा के परीक्षण की इजाजत मांगी जाती है। इस इजाजतनामे में मानव परीक्षण की जरूरत किस प्रकार का परीक्षण किया जायेगा, कौन-कौन शोधार्थी इसमें शामिल होंगे और किन-किन अस्पतालों के माध्यम से यह शोध किया जायेगा, इस सब का विवरण देना होता है। साथ ही हर चरण के परीक्षण के बाद सम्पूर्ण विवरण नई दवा या टीके का परीक्षण करने वाली कम्पनी को उक्त एजेंसी को देना होता है।मानव परीक्षणों में हर दवा को तीन चरणों में गुजरना होता है।पहला चरण क्लीनिकल ट्रायल होता है, जिसमें दवा की सुरक्षा तथा शरीर में प्रतिरोधक क्षमता तथा अलग-अलग मात्रा में दवा की खुराक देकर दवा की खुराक (डोज) निर्धारित की जाती है। पहले चरण के परीक्षण में 10 से 20 तक स्वस्थ मानवों की आवश्यकता होती है, तथा इस पूरी प्रक्रिया में दो वर्ष का समय लगता है।

भारत एवं कनाडा के रिश्ते खतरनाक मोड़ पर

इस घटना पर भारत का चिंतित होना एवं कनाडा को चेताया जाना स्वाभाविक है। विदेश मंत्रालय में कनाडा के उप-उच्चायुक्त को तलब कर इस मामले में गहरी आपत्ति जताई गई है। कनाडा सरकार ने अपने राजनीतिक हितों के लिये अनेक बार भारत विरोधी घटनाओं में संदेहास्पद एवं विवादास्पद भूमिका का निर्वाह करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की मयार्दाओं को धुंधलाया है। कनाडा की धरती से खालिस्तानी समर्थक अलगाववाद, कट्टरपंथ और हिंसा को बढ़ावा दिया जाता रहा है। इस तरह की घटनाओं से कनाडा में अपराध का माहौल बना हुआ है। इससे कनाडा के नागरिकों के लिए भी खतरा पैदा हो गया है। जिससे भारत में भी स्थितियां संकटपूर्ण बनी है। पिछले साल खुद टूडो ने सार्वजनिक रूप से निज्जर हत्याकांड में भारत के शामिल होने का निराधार आरोप लगाया था। भारत के मांगने के बाद भी आज तक उनकी सरकार इस आरोप के पक्ष में कोई सबूत नहीं दे पाई है। जस्टिन टूडो ने आरोप लगाकर दोनों देशों के बीच विवाद खड़ा कर दिया था। भारत ने आरोप को बेबुनियाद बताते हुए खारिज कर दिया था। इसके बाद से कनाडा और भारत के संबंधों में खटास आ गई और दोनों देशों के रिश्ते सुधरने की बजाय खतरनाक मोड़ पर पहुंच गये हैं। रविवार के खालसा दिवस समारोह में न केवल खालिस्तान समर्थक नारे लगाए गए बल्कि ऐसे बैनर प्रदर्शित किए गए, जिनमें भारत-विरोध के त्रासद एवं राष्ट्र-विरोध के भ्रामक, झूठे एवं बेबुनियाद आरोप थे।

ललित गर्ग
लेखक, पत्रकार, स्तंभकार

कनाडा में रविवार को वहां के प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो की मौजूदगी में खालसा दिवस समारोह के दौरान खालिस्तान समर्थक नारे लगाए जाने के बाद भारत सरकार जो सख्ती दिखाई है, वह आवश्यक एवं समयोचित कदम है। इस घटना पर भारत का चिंतित होना एवं कनाडा को चेताया जाना स्वाभाविक है। विदेश मंत्रालय में कनाडा के उप-उच्चायुक्त को तलब कर इस मामले में गहरी आपत्ति जताई गई है। कनाडा सरकार ने अपने राजनीतिक हितों के लिये अनेक बार भारत विरोधी घटनाओं में संदेहास्पद एवं विवादास्पद भूमिका का निर्वाह करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों की मयार्दाओं को धुंधलाया है। कनाडा की धरती से खालिस्तानी समर्थक अलगाववाद, कट्टरपंथ और हिंसा को बढ़ावा दिया जाता रहा है। इस तरह की घटनाओं से कनाडा में अपराध का माहौल बना हुआ है। इससे कनाडा के नागरिकों के लिए भी खतरा पैदा हो गया है। जिससे भारत में भी स्थितियां संकटपूर्ण बनी है। पिछले साल खुद टूडो ने सार्वजनिक रूप से निज्जर हत्याकांड में भारत के शामिल होने का निराधार आरोप लगाया था। भारत के मांगने के बाद भी आज तक उनकी सरकार इस आरोप के पक्ष में कोई सबूत नहीं दे पाई है। जस्टिन टूडो ने आरोप लगाकर दोनों देशों के बीच विवाद खड़ा कर दिया था। भारत ने आरोप को बेबुनियाद बताते हुए खारिज कर दिया था। इसके बाद से कनाडा और भारत के संबंधों में खटास आ गई और दोनों देशों के रिश्ते सुधरने की बजाय खतरनाक मोड़ पर पहुंच गये हैं। रविवार के खालसा दिवस समारोह में न केवल खालिस्तान समर्थक नारे लगाए गए बल्कि ऐसे बैनर प्रदर्शित किए गए, जिनमें भारत-विरोध के त्रासद एवं राष्ट्र-विरोध के भ्रामक, झूठे एवं बेबुनियाद आरोप थे। अफसोस और चिंता की बात यह रही कि कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन टूडो ने तो इन सब भारत-विरोधी घटनाओं को रोकने की या इन्हें गलत बताने की कोई कोशिश की। इस पूरे मामले में टूडो का व्यवहार आपत्तिजनक बना, दो देशों के बीच खटास घोलने वाला एवं राजनीतिक अपरिपक्वता का रहा। जिसे दोनों देशों के राजनयिक पैमाने पर उचित नहीं कहा जा सकता। इस तरह कनाडा अपने देश की राजनीतिक जरूरतों के चलते भारत के साथ अपने रिश्ते इस मोड़ पर ले आया हैं, जहां उनके बीच विश्वास, भरोसे, आपसी सहयोग और संवाद की कमी है, तो यह अकारण नहीं है।

भले ही लगभग आठ लाख कनाडाई सिखों की वहां की राजनीति में सक्रिय भागीदार हैं। सिख समुदाय की जरूरतों एवं उनके शांतिपूर्ण जीवन के लिये कनाडा सरकार की प्रतिबद्धता में कोई आपत्ति नहीं हैं। सिख समुदाय के मौलिक अधिकारों व स्वतंत्रता की रक्षा करने के वायदे यदि वहां की सरकार करती है तो अच्छी बात है। भले ही कनाडा सरकार सिखों के सामुदायिक केंद्रों, गुरुद्वारा समेत पूजास्थलों की सुरक्षा को और मजबूत करने के साथ भारत एवं कनाडा के बीच उड़ानें और रूट बढ़ाने को लेकर भारत के साथ नए समझौते करें, लेकिन इन स्थितियों के बीच खालिस्तानी अलगाववाद को प्रोत्साहन देना भारत के लिये असहनीय है। भारत बार-बार इस बात को दोहरा रहा है कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर इस तरह अलगाववादी और अतिवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा देना न केवल दोनों देशों के रिश्तों के लिए बल्कि खुद कनाडा के लिए भी खतरनाक है। भारत जिस तरह से लम्बे समय तक खालिस्तानी आतंकवाद को झेला है, कनाडा में इन तत्वों को प्रोत्साहन देकर कनाडा आतंकवादी गतिविधियों का केन्द्र बन सकता है, जो उसके लिए नुकसानदेह ही साबित होने वाला है।

निश्चित ही कनाडा में खालिस्तानी आतंकी फल-फूल रहे हैं। खालिस्तानी न केवल भारतीय राजनयिकों को धमका रहे हैं बल्कि हिंदू मंदिरों को भी निशाना बना रहे हैं। कनाडा की धरती पर हर किस्म के खालिस्तानी चरमपंथी ही नहीं पल रहे हैं बल्कि वहां भारत से भागे गैंगस्टर और नशे के तस्कर भी शरण पा रहे हैं। यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद में भारत ने कनाडा को जो खरी-खोटी सुनाई, वह इसलिए आवश्यक थी, क्योंकि वहां की टूडो सरकार अपने भारत विरोधी रवैये से बाज नहीं आ रही है। वह जिस तरह खालिस्तानी अतिवादियों को संरक्षण दे रही है, उसकी मिसाल यदि कहीं और मिलती है तो वह पाकिस्तान में। कनाडा अपने भारत विरोधी रवैये के कारण पाकिस्तान सरीखा बनता जा रहा है। कनाडा अपने हितैषी एवं पडोसी देशों से दूरियां बना रहा है। खालिस्तान समर्थन एवं प्रोत्साहन के चलते कनाडा में फिलहाल कुछ भी ठीक नहीं चल रहा। अपने देश के साथ दुनियाभर में वह आलोचकों के निशाने पर हैं। कनाडा में खालिस्तान समर्थकों पर नियंत्रण रखने में कथित नाकामी के चलते टूडो को अनेक अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर विरोध का सामना करना पड़ रहा है। इसी के चलते जी-20 बैठक में उन्हें भारत और सदस्य देशों का ह्यठंडाह्न रिस्पांस मिला। भारत में खास अहमियत नहीं मिलने से खिसियाए टूडो को कनाडा के मीडिया ने भी आड़े हाथ लिया है। टूडो सरकार पर भारत के साथ रिश्तों को नुकसान पहुंचाने और व्यापार वार्ता के बारे में अंधेरे में रखने के आरोप भी लगे हैं। घरेलू राजनीतिक हितों के लिए टूडो भारत के साथ लड़ाई मोल लेकर अपने देश का भारी आर्थिक नुकसान कर रहे हैं। यह सर्वविदित है कि भारत अब दुनिया की एक आर्थिक महाशक्ति बनने की ओर अग्रसर है। कनाडाई में उत्पादित वस्तुओं के निर्यात और व्यापार में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है और दोनों देशों के बीच बढ़ते तनाव का असर यहां की इकोनॉमी पर पड़ रहा है। भारत की नाराजगी बेवजह नहीं है, क्योंकि कनाडा भारत के विरोध में लगातार सक्रिय हैं, कनाडा ने ही किसानों के आंदोलन के समर्थन में अतिश्योक्तिपूर्ण सहयोग होने दिया। जबकि दोनों देशों के संबंधों में प्रगति के लिए एक-दूसरे के प्रति सम्मान का भाव और आपसी भरोसा रहना जरूरी है। खालिस्तान समर्थक गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश को लेकर अमेरिका में भी सवाल उठे थे। लेकिन अमेरिका ने इस मसले पर सार्वजनिक बयानबाजी करने के बजाय भारत सरकार से सीधी बातचीत की। भारत ने भी अमेरिकी सरकार की ओर से मुहैया कराए गए सबूतों को गंभीरता से लिया। इस मामले में एक उच्चस्तरीय जांच शुरू हुई। अच्छी बात यह भी है कि इस मामले को दोनों देशों के संबंधों के खटास का माध्यम नहीं बनने दिया। जांच के निष्कर्षों को दोनों देशों ने स्वीकार किया एवं बेवजह का विवाद खड़ा नहीं होने दिया। कनाडा को भी अमेरिका से कुछ सीखना चाहिए एवं निज्जर हत्याकांड में भारत की अगर कोई भूमिका है तो उसके सबूत भारत सरकार को देने चाहिए। कोरे आरोप लगाकर आपसी संबंधों को बिगाड़ने से परहेज करना चाहिए। अपनी भूमि का उपयोग भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए खतरा पैदा करती गतिविधियों के लिये कत्तई नहीं करने देना चाहिए। बात कनाड़ा के साथ-साथ अन्य देशों पर भी लागू होती है जो अपने राजनीतिक हितों के लिये खालिस्तान समर्थक या अन्य भारत विरोधी आन्दोलनों को जगह देते हैं, लेकिन इन देशों ने भी समझा है

लीची फलों के हरे से लाल रंग में बदलने की अवस्था में करें कुशल बाग प्रबंधन

बिहार में लीची की उत्पादकता 8 .40 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि राष्ट्रीय उत्पादकता 7 .35 टन प्रति हेक्टेयर है। लीची बिहार का प्रमुख फल है इसे प्राइड ऑफ बिहार भी कहते है।यह फलों की रानी है।इसमें बीमारियां बहुत कम लगती हैं।लीची की सफल खेती के लिए आवश्यक है की इसमें लगने वाले प्रमुख कीटों के बारे में जाना जाय,क्योंकि इसमें लगने वाले कीटों कि लिस्ट लंबी है, बिना इन कीटों के सफल प्रबंधन के लीची की खेती संभव नहीं है। इस समय बिहार के अधिकांश हिस्से में मौसम बहुत ही गर्म है जैसे ही हल्की बारिश होगी बिहार की मशहूर शाही प्रजाति के लीची के फल में लाल रंग विकसित होने लगेगा है। यह अवस्था प्रबंधन के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है।इस समय फल छेदक कीट के आक्रमण की संभावना बढ़ जाती है यदि बाग का ठीक से नहीं प्रबंधन किया गया तो भारी नुकसान होने की संभावना बनी रहती है।लीची में फल के लौंग के बराबर होने से लेकर फल की तुड़ाई के मध्य मात्र 40 से 45 दिन का समय मिलता है इसलिए लीची उत्पादक किसान को बहुत सोचने का समय नहीं मिलता है। तैयारी पहले से करके रखने की जरूरत है।लीची की सफल खेती के लिए आवश्यक है की लीची में लगने वाले फल छेदक कीट को कैसे प्रबंधित करते है? लीची की सफल खेती में इसकी दो अवस्थाएं अति महत्वपूर्ण होती है, पहली जब फल लौंग के बराबर के हो जाते है , जो की निकल चुकी है एवं दूसरी अवस्था जब लीची के फल लाल रंग के होने प्रारंभ होते है ।

डाक्टर एस के सिंह
लेखक डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय के अखिल भारतीय फल अनुसंधान परियोजना के प्रधान अन्वेषक हैं

भारत सरकार के कृषि एवम सहकारिता विभाग के वर्ष 2020 - 2021 के आंकड़े के अनुसार भारत में 97.91 हजार हेक्टेयर में लीची की खेती हो रही है जिससे कुल 720.12 हजार मैट्रिक टन उत्पादन प्राप्त होता है, जबकि बिहार में लीची की खेती 36.67 हजार हेक्टेयर में होती है जिससे 308.06 हजार मैट्रिक टन लीची का फल प्राप्त होता है। बिहार में लीची की उत्पादकता 8.40 टन प्रति हेक्टेयर है जबकि राष्ट्रीय उत्पादकता 7.35 टन प्रति हेक्टेयर है।

लीची बिहार का प्रमुख फल है इसे प्राइड ऑफ बिहार भी कहते है।यह फलों की रानी है।इसमें बीमारियां बहुत कम लगती हैं।लीची की सफल खेती के लिए आवश्यक है की इसमें लगने वाले प्रमुख कीटों के बारे में जाना जाय,क्योंकि इसमें लगने वाले कीटों कि लिस्ट लंबी है, बिना इन कीटों के सफल प्रबंधन के लीची की खेती संभव नहीं है।

इस समय बिहार के अधिकांश हिस्से में मौसम बहुत ही गर्म है जैसे ही हल्की बारिश होगी बिहार की मशहूर शाही प्रजाति के लीची के फल में लाल रंग विकसित होने लगेगा है। यह अवस्था प्रबंधन के दृष्टिकोण से बहुत ही महत्वपूर्ण है।इस समय फल छेदक कीट के आक्रमण की संभावना बढ़ जाती है यदि बाग का ठीक से नहीं प्रबंधन किया गया तो भारी नुकसान होने की संभावना बनी रहती है।लीची में फल के लौंग के बराबर होने से लेकर फल की तुड़ाई के मध्य मात्र 40 से 45 दिन का समय मिलता है।इसलिए लीची उत्पादक किसान को बहुत सोचने का समय नहीं मिलता है। तैयारी पहले से करके रखने की जरूरत है।लीची की सफल खेती के लिए आवश्यक है की लीची में लगने वाले फल छेदक कीट को कैसे प्रबंधित करते है? लीची की सफल खेती में इसकी दो अवस्थाएं अति महत्वपूर्ण होती है, पहली जब फल लौंग के बराबर के हो जाते है , जो की निकल चुकी है एवं दूसरी अवस्था जब लीची के फल लाल रंग के होने प्रारंभ होते है । इन दोनों अवस्थावो पर फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु दवा का छिड़काव अनिवार्य है।लीची में फल छेदक कीट का प्रकोप कम हो इसके लिए आवश्यक है की साफ -सुथरी खेती को बढ़ावा दिया जाय। लीची में फल बेधक कीट से बचने के लिए थायो क्लोप्री एवं लमडा सिहलोथ्रिन की 1 मिलीलीटर दवा को प्रति 2 लीटर पानी या नोवल्युरान 1.5 मीली दवा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। अभी तापमान अप्रैल माह से ही 40 डिग्री सेल्सियस के आस पास या अधिक रहने की वजह से लीची की खेती प्रभावित हो रही है, जिसकी वजह से लीची के फलों की बढ़वार बहुत अच्छी नहीं है । फल की तुड़ाई से पूर्व दिन का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस रहने की वजह से लीची के फलों पर जलने जैसे लक्षण दिखाई दे रहे है ,जिससे फल की गुणवक्ता बुरी तरह से प्रभावित हो रही है । इस तरह से प्रभावित फल वातावरण में अचानक परिवर्तन होने से फट जायेंगे,जिससे बागवान को भारी नुकसान होगा।वातावरण में इस तरह के परिवर्तन को प्रबंधित करने के लिए लीची उत्पादक किसानों को अपने बाग में ओवर हेड स्प्रिंकलर लगाने के बारे में सोचना प्रारंभ कर देना चाहिए क्योंकि बिना उसके गुणवक्ता युक्त फल प्राप्त कर पाना अब संभव नहीं है। गुणवक्ता युक्त लीची के फल प्राप्त करने के लिए वातावरण का तापमान 35 डिग्री सेल्सियस के आस पास होना चाहिए। ओवर हेड स्प्रिंकलर लगाने से लीची के बाग के तापमान को ,बाहर के तापमान से 5 डिग्री सेल्सियस तक कम रक्खा जा सकता है।

पूर्व वर्षो के अनुभव के आधार पर जिन लीची के बागों में फल के फटने की समस्या ज्यादा हो वहां के किसान यदि 15 अप्रैल के आसपास बोरान 4 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर छिडकाव कर दिए होंगे ,उन बागों में लीची के फल के फटने की समस्या में भारी कमी आयेगी। इस समय रोग एवं कीड़ों की उपस्थिति के अनुसार रसायनों का प्रयोग करें।बाग की मिट्टी में नमी अनिवार्य रूप से बनाए रक्खे लेकिन इस बात का ध्यान देना चाहिए कि पेड़ के आस पास जलजमाव न हो। मशहूर शाही लीची के फलों की तुड़ाई 20-25 के आस पास करनी चाहिए। फलों में गहरा लाल रंग विकसित हो जाने मात्र से यह नही समझना चाहिए की फल तुड़ाई योग्य हो गया है । फलों की तुड़ाई फलों में मिठास आने के बाद ही करनी चाहिए। फलों की तुड़ाई से 15 दिन पहले कीटनाशकों का प्रयोग अवश्य बंद कर देना चाहिए अनावश्यक कृषि रसायनों का छिड़काव नहीं करना चाहिए अन्यथा फल की गुणवक्तता प्रक्रिया प्रभाववित होगी।

इंतजामों को अधिक सक्रिय करने की जरूरत

अनिरुद्ध गौड़

हमारे देश के वनों में गमिर्यों के दिनों में आग लगना एक लगातार सिलसिला है। अप्रैल का महीना शुरू हुआ कि आग से जंगल धधकने लगते हैं। जंगल की आग पर्यावरण की दृष्टि से तो खतरनाक है ही जनजीवन और बायोडायर्वसटी की दृष्टि से भी हानिकारक है। ऐसे समय में जब जंगलों में आग लगती है तो देखा गया है कि उसकी तैयारी में सरकार विफल रही है।देश के वनों में अप्रैल माह में आग की घटनाओं को देखें तो देश में हाल फिलहाल 361 जगह वनों में आग लगी हैं। इन घटनाओं की निगरानी को फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया की साइट पर लांच बीटा संस्करण एसएनपीपी - वीआईआईआरएस का 10 अप्रैल, 2024 का भारत के वनों में लगी भीषण आग का मौजूद आंकड़ा बताता है कि सबसे अधिक आंध्र प्रदेश में 122, तेलंगाना में 55, छत्तीसगढ़ में 47, उत्तराखंड में 32, बिहार में 23, ओडिसा में 22, उत्तर प्रदेश में 17 सहित 21 राज्यों में 361 जगह आग लगी थी जो 13 अप्रैल को घट कर काबू होने के बाद 33 रह गई। 1अप्रैल को देश के वनों में 132 बड़ी आग लगी थी जो 10 अप्रैल को 361 जगह तक पहुंच गई है। अप्रैल माह में पिछले 7 दिनों का आंकड़ा देखें तो एक्टिव आग की घटनाओं में टॉप फाइव राज्यों में छत्तीसगढ़ में 166, आंध्र प्रदेश में 248, मध्य प्रदेश में 207, ओडिसा में 146 और असम में 139 जगहों पर बड़ी आग लगी।वहीं 1 नवम्बर, 2023 से 2024 में बड़ी आग की घटनाओं में टॉप फाइव राज्यों में आंध्र प्रदेश में 860, मध्य प्रदेश में 719, तेलंगाना 688, महाराष्ट्र में 547 और छत्तीसगढ़ में 527 बार आग लगी, जबकि वर्ष 2022-2023 में तो पूरे देश के वनों में 12562 आग की घटनाएं हुई। जंगल की आग से वनों का क्षरण तो होता ही है बहुमूल्य वन संपदा और कार्बन भी नष्ट हो जाते हैं। वनों का पारिस्थितिकी तंत्र भी प्रभावित होता है। यह देखा गया है फॉरेस्ट सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार जंगल की आग को मॉनिटर करने के लिए भारत में 2004 से शुरू सेटेलाइट की रिमोट सेंसिंग मोडिस अर्थात मॉडरेट रेजोल्यूशन इमेजिंग स्पेक्ट्रो रेडियोमीटर सेंसर और 2017 से भारतीय सेटेलाइट से सम्पूर्ण भारत में एसएनपीपी-वीआईआईआरएस अर्थात सुओमी-नेशनल पोलर आर्बिटिंग पार्टनरशिप-विजिबल इंफ्रारेड इमेजिंग रेडियोमीटर सूट के साथ जीआईएस टूल्स की मदद से वनों की आग को मॉनिटर किया जा रहा है। देश का कुल 32,87,469 वर्ग किलोमीटर भौगोलिक क्षेत्र है। नवीनतम आईएसएफआर 2021 के अनुसार देश का कुल 7,13,789 वर्ग किलोमीटर वन आवरण है। जो देश के भौगोलिक क्षेत्र का 21.71 प्रतिशत है। वन सर्वे ऑफ इंडिया का अनुमान है कि देश में 36 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र में बार-बार आग लगती रहती है।

देश के करीब 4 प्रतिशत वन क्षेत्र में अधिक तो 6 प्रतिशत भाग में सबसे अधिक खतरा पाया गया है। ग्लोबल फॉरेस्ट वाच के अनुसार विश्व स्तर पर आग से वर्ष 2001 से 2022 के बीच 126 मिलियन हेक्टेयर वनों का नुकसान हुआ। इनमें वर्ष 2016 ऐसा वर्ष रहा जिसमें आग से सबसे अधिक 9.63 मिलियन हेक्टेयर वन आवरण का नुकसान हुआ। पिछले कुछ दशकों में आग की घटनाओं को देखें तो 2001 से 2022 के बीच भारत में आग की घटनाओं से 35.9 हेक्टेयर वृक्ष आवरण को नुकसान और 2.15 मेगा हेक्टेयर वृक्ष आवरण का नुकसान अन्य कारणों से हुआ। इसमें भी 2008 में आग से सबसे अधिक कुल 3.5 प्रतिशत वृक्ष आवरण का नुकसान हुआ। अगर 12 अप्रैल 2021 से 8 अप्रैल 2024 के बीच आज की घटनाओं की बात की जाए तो 5,29,248 के माध्यम से बड़ी आज की घटनाएं रिपोर्ट की गई है। संयुक्त राष्ट्र के अनुसार विश्व में हर वर्ष करीब 7 करोड़ हेक्टेयर वन क्षेत्र आग लगने की घटनाओं से प्रभावित होता है। इससे बड़े स्तर पर पर्यावरणीय और आर्थिक क्षति होती है। ग्लोबल फॉरेस्ट वॉच के अनुसार विश्व में सन 2010 में 3.92 गीगा हेक्टेयर वृक्ष आवरण था जो पृथ्वी के 30 प्रतिशत से अधिक भू-भाग में फैला हुआ था, लेकिन 2023 में विभिन्न कारणों से 28.3 मिलियन हेक्टेयर वृक्ष आवरण कम हो गया। सन 2001 से 2023 तक वैश्विक स्तर पर 488 मिलियन हेक्टेयर वृक्ष आवरण की हानि हुई जो 2000 के बाद से वृक्ष आवरण में 12 प्रतिशत की कमी के बराबर है, जबकि सन 2002 से 2023 के बीच कुल 76.3 मिलियन हेक्टेयर आद्र प्राथमिक वन कम हो गया।भारत की बात करें तो सन 2010 में 31.3 मिलियन हेक्टर प्राकृतिक वन थे जो कि इसकी कुल भूमि का 11 फीसद था, लेकिन वर्ष 2023 में 134 किलो हेक्टेयर आद्र प्राकृतिक वन की हानि हो गई। वर्ष 2002 से 2023 के बीच भारत में 414 हेक्टेयर आद्र प्राथमिक वन खो दिए। इस तरह भारत में कुल 4.1 प्रतिशत वन क्षेत्रफल कम हो गया। जिसमें 2016 और 2017 में अधिक हानि हुई। वनों में आग लगने से बड़े पैमाने पर मानवीय, पर्यावरण और आर्थिक हानि होती है।

संक्षिप्त खबरें

132 लीटर विदेशी शराब के साथ कारोबारी गिरफ्तार

दिघवारा नगर। दिघवारा थाना क्षेत्र के छपरा हाजीपुर मुख्य मार्ग पर आमी मोड़ के पास वाहन चेकिंग के दौरान दिघवारा पुलिस की टीम ने एक टेम्पो से विभिन्न ब्रांड के 132 लीटर विदेशी शराब को जप्त किया गया।इस दौरान शराब कारोबारी को भी गिरफ्तार कर लिया गया। गिरफ्तार शराब कारोबारी की पहचान डेरनी थाना क्षेत्र के पोझी गाँव निवासी रामजी राय के पुत्र नरेश राय के रूप में हुई है। थानाध्यक्ष रविशंकर कुमार ने बताया कि आगामी लोकसभा चुनाव को लेकर जगह जगह चेकपोस्ट बनाये गए हैं तथा वाहन जाँच की जा रही है उसी क्रम में आमी मोड़ के पास एक समान ढोने वाले टेम्पो के पीछे नीचे तहखाना बनाकर शराब को छुपा कर रखा गया था।जप्त शराब में 750 एमएल रॉयल स्टैग का 116 बोतल तथा ऑफिसर चॉइस ब्रांड के 250 पैकेट फ्रूटी को बरामद किया गया। थानाध्यक्ष ने बताया कि इसी तरह आगे भी करवाई जारी रहेगी।

ललित भारत गैस उपभोक्ताओं की निः शुल्क सुरक्षा जांच

जलालपुरे स्थानीय ललित भारत गैस एजेन्सी वितरक द्वारा अपने उपभोक्ताओं की निः शुल्क सुरक्षा जाँच की जा रही है इस आशय की जानकारी देते हुए गैस एजेन्सी के प्रोपराईटर ई ललित कुमार सिंह ने बताया कि यह बिल्कुल निः शुल्क है इसमे वितरक द्वारा भेजा गया डळढ बताकर उपभोक्ता अपने गैस कनेक्शन की सुरक्षा जांच जरूर जाँचवाएं। अगर उनका सुरक्षा पाइप 5 साल से अधिक पुराना हो गया है, तो कृपया उसे बदलवाएं। अपने गैस कनेक्शन के ेड उ के लिए ऐप डाउनलोड करें और अपनी ेड उ पूरा करें।किसी तरह की समस्या या सुझाव के लिए गैस एजेंसी से संपर्क कर सकते हैं

आपसी विवाद में हुई जमकर मारपीट, तीन घायल

इसुआपुर। थाना क्षेत्र की शिशवां गांव में पूर्व से आ रहे आपसी विवाद में जमकर मारपीट हुई। जिसमे तीन लोग घायल हो गए। घायलों में लाल बाबू राय की पत्नी सुगांती देवी तथा पुत्र धीरज कुमार व पुत्री संजु कुमारी शामिल हैं। प्राथमिक उपचार सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इसुआपुर में करने के बाद सुगांती देवी को बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया। वहीं संजू कुमारी तथा धीरज कुमार का इलाज सीएचसी इसुआपुर में चल रहा है।

पनियहवा में ट्रेन से कटकर वृद्ध व्यक्ति की मौत

बगहा.उत्तरप्रदेश बिहार सीमाई रेलवे स्टेशन पनियहवा में एक वृद्ध व्यक्ति की ट्रेन से कटकर मौत हो गई है। वृद्ध व्यक्ति की पहचान वाल्मीकिनगर स्थित रमपुरवा गांव निवासी 66 वर्षीय योगेंद्र साह के रूप हुई है। रमपुरवा गांव सूत्र की माने तो योगेंद्र साह परिवारिक कलह के बाद घर से तीन दिन पहले निकला था जिसके बाद उसके ट्रैन से कटकर मौत की खबर आई है।बतादें,की घटना के बाद मृतक के पास से निर्वाचन पहचान पत्र से उसकी पहचान हुई है।सूत्रों के मुताबिक समाचार प्रेषण तक परिजन सूचना पाकर घटनास्थल पर पहुंच गए है।

हसनपुर में आग लगने से दो घर जल कर राख

ढाका (पुर्वी चम्पारण)-कुंडवा चैनपुर थाना क्षेत्र के हसनपुर दलित बस्ती मे अचानक आग लगने से गुरुवार दोपहर के करीब दो घर जल कर राख हो गया।हालांकि लोगों ने सूझबूझ का परिचय देते हुए तुरंत आग पर काबू पा लिया। सूचना पर कुण्डवा चैनपुर थाने की फायर ब्रिगेड पहुंच ग्रामीणों की सहयोग से आग पर काबू पाया।आग से महेश राम और कपिल राम का घर जला। घनी बस्ती होने के कारण बड़ा हादसा भी हो सकता था।पर टल गई।अगलगी मे एक साईकिल सहित अनाज,कपडा सहित अन्य समान जलकर राख हो गयी, जिसमें पचास हजार के करीब के नुकसान का अंदाजा लगाया जा रहा है।

मांझी प्रखंड के अलग-अलग क्षेत्रों में अग्नि का तांडव रहा जारी

प्रात: किरण, संवाददाता

मांझी प्रखंड के अलग-अलग क्षेत्रों में गुरुवार को भी अग्नि का तांडव जारी रहा। इस दौरान चंदउपुर, एकड़ेंगवा, मुबारकपुर तथा चेफुल गांव के बीच के चंवर में भयंकर आग लग गई। देखते हीं देखते कई पशुपालको के भूसा के ढ़ेर जलकर राख हो गए तथा दर्जनों पेड़ झुलस गए। आग की भयावह स्थिति देख लोगों में दहशत व अफरातफरी मची रही। बताया जाता है की पहले मुबारकपुर के बधार में आग लगी। जिसके बाद तेज पछुआ हवा के कारण आग तेजी से बगल के बधार को अपने चपेट में ले लिया। बाद में आसपास के सैकड़ों की तादाद में ग्रामीण जुट गए और पम्पिंग सेट चालू कर आग बुझाने का प्रयास करने लगे। हालांकि आग के विकराल रूप देख ग्रामीण अग्निशमन वाहन के पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे थे। हालाकि गांव के नौजवानों ने हौसला बुलंद कर किसी तरह आग पर काबू पा लिया। उधर दाउदपुर थाना क्षेत्र के शीतलपुर गांव के समीप एकमा-मांझी गंडक नहर के किनारे अचानक आग लग गई। बाद में पंचायत के मुखिया प्रतिनिधि जय प्रकाश पाण्डेय ने अग्निशमन विभाग को सूचना दी। जिसके बाद मौके पर पहुंची मिनी फायर बिग्रेड की मदद से कर्मियों ने आग बुझाने के प्रयास में जुट गए। इस दौरान नहर किनारे दर्जनों पेड़ झुलस गए। इसी तरह जैतपुर पंचायत के पिपरहियां गांव में एक बगीचे में बुधवार की दोपहर अचानक आग लग गई। जहा मौके पर अग्निशमन वाहन के साथ पहुंचे कर्मियों ने ग्रामीणों की सहायता से आग पर काबू पाया। तबतक इसी गांव के शिक्षक शुभनारायण सिंह के करीब एक दर्जन फलदार पेड़ झुलस गए थे। ग्रामीणों ने बताया कि अभी आग बुझाकर दमकल कर्मी निकले हीं थे कि शाम को इसी गांव के नहर किनारे भयंकर आग लग गई और दर्जनों पेड़ झुलस गए। लोगों ने बताया कि समय रहते दमकल कर्मी नही पहुंचते तो गांव के कई मकान भी आग के चपेट में आ जाते।

सरयू नदी से अंग्रेजी शराब की खेप लेने पहुँचे चार तस्कर चार बाइक के साथ गिरफ्तार

प्रात: किरण, संवाददाता

माँझी। बुधवार की रात माँझी थाना पुलिस ने स्थानीय थाना क्षेत्र के मटियार गांव के समीप सरयू नदी के किनारे से अंग्रेजी शराब की खेप लेने पहुँचे चार तस्करो को तस्करी में प्रयुक्त चार बाइक तथा लगभग 480 लीटर अंग्रेजी शराब के साथ गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार तस्करो में ताजपुर गांव निवासी शैलेश सिंह के पुत्र विकास कुमार सिंह, कामेश्वर सिंह के पुत्र गोबिंद कुमार सिंह, पशुराम साह के पुत्र गणेश कुमार साह तथा नचाप गांव निवासी संजय सिंह के पुत्र मोहित कुमार सिंह शामिल बताए जाते हैं। इस सम्बंध में पूछे जाने पर थानाध्यक्ष अमित कुमार राम ने बताया कि पुलिस को सूचना मिली थी कि शराब के तस्कर मटियार गांव के समीप सरयू नदी के किनारे बड़ी मात्रा में इकट्ठा शराब की खेप लेने के लिए एकत्रित हुए है। सूचना के आधार पर पुलिस द्वारा टीम बनाकर मौके पर छापेमारी की गई। हालाँकि छापेमारी करने पहुंची पुलिस को देख कर वहाँ पर मौजूद तस्कर भागने लगे। लेकिन पुलिस ने लगभग डेढ़ किमी की दूरी तक खदेड़ कर चारों तस्करों को आखिरकार पकड़ ही लिया। पुलिस ने तस्करों द्वारा चार अलग अलग बोरों में बाइक पर बांध कर रखे गए अंग्रेजी शराब समेत चारों बाइक को भी जब्त कर लिया। जब्त शराब की मात्रा 480 लीटर बताई गई है। गिरफ्तार चारों तस्करो के विरुद्ध नई उत्पाद अधिनियम के तहत प्राथमिकी दर्ज कर उन्हें जेल भेज दिया गया। छापेमारी करने गए टीम में एएसआई प्रवीण कुमार,नसीम खान,अखिलेश कुमार, विपुल कुमार तथा सुबोध कुमार के अलावा जिला शस्त्र बल के जवान भी शामिल थे।

रामाश्रम सत्संग मथुरा के संतों का आगमन छपरा में आज

आत्मज्ञान प्राप्त करने के रास्ते को बताएंगे संत

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा सदर। रामाश्रम सत्संग मथुरा के तत्वाधान में परम समर्थ परम संत डॉ चतुर्भुज सहाय जी के द्वारा प्रतिपादित तीन दिवसीय आध्यात्मिक आंतरिक सत्संग कार्यक्रम का आयोजन 3 मई से 5 मई तक छपरा के सरकारी बस स्टैंड के पास पार्टी जोन में आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में छपरा के आचार्य बी एस श्रीवास्तव ने बताया कि हमारे गुरु महाराज ने बताया है कि स्थाई शांति एवं आनंदमय जीवन के लिए आत्मज्ञान प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है और इसके लिए किसी ऐसे महापुरुष के शरण में जाना होगा जो स्वयं आत्मज्ञानी हो और हमें आत्मज्ञान की प्राप्ति का सहज एवं सुलभ रास्ता बता सके। इसी आत्मज्ञान के गूढ़ रहस्य को बताने के लिए रामाश्रम सत्संग मथुरा से संबंधित वरिष्ठ आचार्य गण देश के कोने-कोने से छपरा में पधार रहे हैं। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से रामाश्रम सत्संग के छपरा के आचार्य बी एस श्रीवास्तव एवं छपरा सत्संग परिवार से जुड़े सदस्यों के द्वारा कराया जा रहा है। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से 3 मई को संध्या काल में शुरू होगा 4 मई को सुबह एवं शाम दोनों समय आए हुए आचार्य के द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त करने का रास्ता बतलाया जाएगा तथा 5 मई को प्रातः कार्यक्रम होने के बाद यह कार्यक्रम समाप्त हो जाएगा। बताते चलें कि छपरा के आचार्य बीएससी श्रीवास्तव ने कहा कि यह कार्यक्रम सभी धर्म के लोगों के लिए खुला है और सभी लोग इसमें भाग लेकर आत्मज्ञान प्राप्त करने के रास्ते क्या-क्या है इसे देश के विभिन्न भागों से आए आचार्यों के श्रीमुख से आत्मज्ञान प्राप्त करने का गूढ़ रहस्य की जानकारी प्राप्त करेंगे।

विक्षिप्त व्यक्ति को मारने के जुर्म में पुलिस ने प्राथमिकी दर्ज किया

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा : सोशल मीडिया में हुई एक वायरल वीडियो में एक व्यक्ति जो एक विक्षिप्त आदमी को जो भिखारी जैसा दिखता है उसे उस आदमी ने लात घूंसों से मारकर घायल करते हुये देखा जा सकता है। भिखारी उस आदमी से जान बचाने की कोशिश करता है और वहां से जाने की कोशिश करता है लेकिन वह आदमी उस भिखारी को जाने नहीं दे रहा है और उसको गाली देते हुये लात और घूंसों से मारने लगता है। सोशल साइट पर लोगों का गुस्सा उस आदमी के खिलाफ निकलता है। जैसे हीं उस वीडियो की क्लिप नगर थानाध्यक्ष देखते हैं उस वीडियो की सत्यता जांच करने का आदेश दे देते हैं। वीडियों की जांच करने पर पता चलता है की वीडियो में मारने वाला व्यक्ति थानाक्षेत्र के हरिमोहन गली निवासी अजय कुमार है। पुलिस ने तुरंत उस व्यक्ति के खिलाफ नगर थाना में प्राथमिकी दर्ज कर लिया और आगे की कारवाई में जुट गई है।

आग लगने से आधा दर्जन कच्चा मकान जल कर राख

प्रात: किरण, संवाददाता

भेल्डी थाना क्षेत्र के मदारपुर पंचायत के गोसी छपरा गांव.तथा कोरिया पंचायत के कोरिया पुरवारी टोला में आग लगने से आधा दर्जन कच्चा मकान जल गए प्राप्त जानकारी के गोसी छपरा गांव में इतनी भयानक आग लगी आग के चपेट में एक झोपड़ी तथा बेरी जलकर नष्ट हुआ जिसमें गेहूं तथा फुसा भरे हुए थे जिसमें हजार रुपए की गेहूं फुसा जल गए जिसमें तारकेश्वर तिवारी तथा राहुल तिवारी के मणेशियों का चारा जल गए वहीं दूसरी घटना अनुसार आग कैसे लगी इसका पता नहीं चल पा रहा है आग लगने से सुंदर भगत विजय भगत दुर्गेश भगत कन्हैया भगत दरिद्र भगत किरण देवी अकलू भगत बिरजू भगत के सभी सामान जल गए जिसमें 30हजार नगद रुपए गहना चौकी बिछावन तथा खाने-पीने की सामग्री पंखा मोबाइल गेहूं चावल.जल गए आग लगने की सूचना पूर्व मुखिया रामनाथ भगत ने फायर ब्रिगेड को दी मौके पर फायर ब्रिगेड पहुंचकर आग पर काबू पाए घने आबादी होने के कारण आग पर काबू पाना बड़ी मुश्किल था लेकिन दो-दो फायर विकेट की गाड़ी पहुंचकर आग पर काबू पाए वही अग्निपथ ऑन का रो रो का बुरा हाल है वहीं किरण देवी तथा विजय भगत ने बताया कि अब हम लोग के रहने के लिए कोई भी आधार नहीं है तभी स्थाई मुखिया ने हर संभव मदद का भरोसा दिए वहीं कांग्रेस नेता हरेश कुमार राय अग्नि प्रीत को सरकारी मुआवजा देने की मांग की है

शिक्षक के घर से नगदी समेत लाखों के जेवर की हुई चोरी

प्रात: किरण, संवाददाता

भेल्दी(सारण) ।भेल्दी थाने के हेला गांव के शिक्षक के घर से बुधवार की रात चोरों ने लाखों रूपए नगदी समेत लाखों के जेवर की चोरी कर फरार हो गए। मिली जानकारी के अनुसार भेल्दी थाने के हेला गांव के शिक्षक सुजीत कुमार सिंह के घर के खिड़की के सहारे चोर छत पर चढ़ गए और कमरे में घूसकर गोदरेज के अलमीरे व ब्रीफकेश को खोलकर 6 हजार रूपए नगदी समेत लाखों के आभूषण की चोरी कर ली।चोरों ने शिक्षक के कमरे से चोरी करने के बाद उनके बड़े भाई अजय कुमार सिंह के कमरे में घूसकर 1.25 लाख रूपए नगद व गोदरेज के अलमीरे को तोड़कर सीने की कीमती हार,अंगूठी व चांदी के पायल समेत,लाखों के जेवर की चोरी कर फरार हो गए।परिजनों ने चोरी की सूचना भेल्दी पुलिस को दी।पुलिस ने गुरुवार की सुबह मौके पर पहुंच मामले की छानबीन में जुट गई।दो घरों से भीषण चोरी के बाद परिजन काफी चिंतित व आतंकित हैं।भेल्दी थाना क्षेत्र में चोरी की बार-बार हो रही घटनाओं से लोग दहशत में हैं।समाचार प्रेषण तक प्राथमिकी दर्ज नहीं की जा सकी है।

हज हमें एकता और सर्वसम्मति सिखाता है : जफर

हज प्रशिक्षण शिविर हुआ आयोजित, यात्रियों को लगाया गया टीका

- स्वास्थ्य प्रमाणपत्र और गाइड बुक भी प्रदान किया गया

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा शहर के छोटा तेलपा अवस्थित मदरसा मदीनतुल उलूम में हज प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम की शुरूआत हाफिज साबिर हुसैन कासमी द्वारा कुरान की तिलावत से हुई. इसके बाद कारी आफताब आलम ने नातिया कलाम पेश किया. इस अवसर पर मदरसा नूर उलूम मकेर के मौलाना जफर कासमी ने हज और उमरा की पूरी प्रक्रिया का विस्तृत विवरण बताया और कहा कि हज हमें एकता और सद्भाव सिखाता है. हज यात्रा के दौरान आजमीन के लिए पूर्ण धैर्य और कृतज्ञता दिखाना सबसे महत्वपूर्ण है. अगर किसी भी तरह की परेशानी आए तो शिकायत न करें. बल्कि यह सोचें कि अल्लाह ने उन्हें अपने घर में मेहमान बनाया है. उन्होंने हज की फजीलत और हकीकत बयान करते हुए कहा कि हज का मुख्य मकसद अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा का पालन करना और अपने अमल के तराजू पर तौलना है. हाजी इदरीस अंसारी ने हज यात्रा से संबंधित आवश्यक चरण पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यात्रियों को अपना पहचान पत्र हमेशा अपने साथ रखना चाहिए. ताकि यात्रा के दौरान कोई परेशानी न हो. मदरसा मदीनतुल उलूम के नाजिम-ए-आला सह जिला हज प्रशिक्षक जावेद आलम ने सभी ओलेमा और हज यात्रियों को धन्यवाद देते हुए बताया कि राज्य हज कमेटी द्वारा इस केंद्र को जिले में हज यात्रियों के लिए प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है. उन्होंने कहा कि मदरसा अपने कर्तव्यों का बखूबी निर्वहन कर रहा है. कार्यक्रम का समापन सामूहिक प्रार्थना के साथ हुआ. जिसमें मौलाना जफर कासमी ने हज यात्रियों की यात्रा को सुविधाजनक बनाने और उसकी मकबूलियत के साथ देश में शांति और अमन की प्रार्थना की. सरकार के निदेर्शानुसार सभी हज यात्रियों को डॉक्टर फिरोज कमर के नेतृत्व में चिकित्सा दल द्वारा टीकाकरण के बाद मेडिकल सर्टिफिकेट दिया गया. आयोजन कमिटी ने सभी 59 आजमीन-ए-हज को गाइड बुक भी वितरित किया गया. इस मौके पर मौलाना अशफाक कासमी, मरगूब अहमद, अशरफ, रिजवान, मौलाना हसनैन आदि मौजूद थे।

कुलपति ने कई विभागों व कॉलेजों का किया निरीक्षण

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। कुलपति प्रो. परमेंद्र कुमार बाजपेई ने गुरुवार को लगातार तीसरे दिन विभिन्न विभागों और कॉलेजों का औचक निरीक्षण किया। कुलपति ने सबसे पहले स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग तथा स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग का निरीक्षण किया। इसके पश्चात वे पीसी विज्ञान महाविद्यालय पहुंचे। विदित हो कि कुलपति प्रो. बाजपेई ने पदभार संभालते ही स्पष्ट निर्देश जारी किया था कि छात्र-छात्राओं और प्राध्यापकों की नियमित उपस्थिति सभी स्नातकोत्तर विभागों और विश्ववविद्यालय क्षेत्रान्तर्गत सभी महाविद्यालयों में सुनिश्चित की जाय। कुलपति ने सबसे पहले स्नातकोत्तर अर्थशास्त्र विभाग का निरीक्षण किया। वहां उन्होंने प्राध्यापकों और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति की जानकारी ली। इसके पश्चात उन्होंने स्नातकोत्तर मनोविज्ञान विभाग का निरीक्षण किया। वहां भी उन्होंने प्राध्यापकों और छात्र-छात्राओं की उपस्थिति की जानकारी ली। इसके पश्चात कुलपति ने पीसी विज्ञान कॉलेज का दौरा किया। वहां उन्होंने प्रयोगशाला, पुस्तकालय सहित अन्य आधारभूत संरचनाओं का जायजा लिया। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि कैंपस में पठन-पाठन के वातावरण का निर्माण किया जाय। प्रयोगशाला और पुस्तकालय की स्थिति सुदृढ की जाय। उन्होंने आश्वस्त किया कि इन कार्यों में महाविद्यालय को उनके स्तर से हरसंभव मदद की जाएगी। इस अवसर पर कुलानुशासक प्रो. विश्वामित्र पाण्डेय, समायोजक, महाविद्यालय विकास परिषद प्रो. हरिश्चंद और परीक्षा नियंत्रक प्रो. दिलीप कुमार भी उपस्थित थे।

इसुआपुर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ने तरैया में किया अतिरिक्त प्रभार ग्रहण

प्रात: किरण, संवाददाता

तरैया प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी रत्नमाला कुमारी 30 अप्रैल 2024 को सेवानिवृत हों गई है।सेवानिवृत होने के बाद तरैया बीआरसी में गुरुवार को इसुआपुर प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी रामकुमार सिंह ने तरैया प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी का अतिरिक्त प्रभार लिया।इस मौके पर सेवानिवृत हो चुके तरैया के प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी रत्नमाला कुमारी ने रामकुमार सिंह को कार्यालय का प्रभार सौंपा। बीईओ रामकुमार सिंह ने कहा कि शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना पहली प्राथमिकता होगी।शैक्षणिक व्यवस्था,एमडीएम को सुचारू रूप से चलाने की विषय में पहल की जाएगी।उक्त मौके पर एकाउंटेंट अखिलेश्वर सिंह, बिआरपी मो. अनीस, प्रधानाध्यापक बबन सहनी, बीपीएम अमित कुमार,एमटीएस अचिन कुमार सिंह,डाटा अपरेटर गुड्डू कुमार सिंह,पिऊन राघव कुमार सिंह,शिक्षक मुन्ना प्रसाद, राजेश राय,धर्मेंद्र राम सहित अन्य शिक्षक उपस्थित थे।

शामपुर में जलभरी के साथ हुई अखंड अष्टयाम की शुरूआत

प्रात: किरण, संवाददाता

इसुआपुर। प्रखंड के शामपुर गांव के देवी मंदिर प्रांगण में अखंड अष्टयाम की शुरूआत हुई। पूर्व में सैकड़ों की संख्या में महिलाएं, कन्याएं तथा पुरुष श्रद्धालुओं ने शामपुर शिवदियरी ब्रह्म स्थान परिसर स्थित तालाब से जलभरी की। वहीं हाथी, घोड़े व गाजे बाजे के साथ पूरे गांव की परिक्रमा करते हुए यज्ञ स्थल पहुंचे। जहां पंडित वशिष्ठ नारायण पांडेय, नागेंद्र चतुवेर्दी, अरुण तिवारी, कृष्ण उपाध्याय, सुनील दुबे के वैदिक मंत्रोचारण से यज्ञ की शुरूआत हुई। मुख्य यजमान के रूप में तारकेश्वर सिंह तथा उनकी धर्मपत्न ी ज्ञान्ती देवी थे। जलभरी जुलूस का नेतृत्व पूर्व मुखिया राज किशोर सिंह, रामदयाल सिंह, मंटू सिंह,रणधीर सिंह, विकास कुमार, विकी, सचिन, शुभम, विराट, देवेंद्र सिंह, अवधेश सिंह व अन्य ने किया।

268 असामाजिक तत्वों को थाना बदर एवं 12 असामाजिक तत्वों को किया गया है जिला बदर

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। आगामी लोकसभा आम चुनाव 2024 को शांतिपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने हेतु पुलिस अधीक्षक सारण छपरा के द्वारा बिहार अपराध नियंत्रण अधिनियम, 2024 की धारा 3 के तहत आज तक कुल 307 प्रस्ताव प्राप्त हुए। जिसके आलोक में सारण जिला अंतर्गत 268 सक्रिय अपराध कर्मियों को थाना बदर एवं 12 सक्रिय अपराध कर्मियों को जिला बदर करते हुए विभिन्न थाना में सदेह उपस्थित होकर हाजिरी लगाने हेतु जिला दंडाधिकारी, सारण, छपरा द्वारा निर्देशित किया गया। इसी क्रम में मशरख थाना अंतर्गत 2 अपराध कर्मियों द्वारा अपने बदर किए गए थाना में सदेह उपस्थित होकर हाजिरी नहीं लगाए जाने की स्थिति में उक्त दोनों अपराध कर्मियों को गिरफ्तार कर जिला दंडाधिकारी के न्यायालय में पेश किया गया। गिरफ्तार अपराधकर्मियों से जमानत के रूप में दो-दो लाख का बंध-पत्र एवं शपथ पत्र प्राप्त कर इस शर्त के साथ छोड़ा गया है कि वह अपने-अपने बदर किए गए थाना में आज से ही सदेह उपस्थित होकर प्रतिदिन हाजिरी लगाना सुनिश्चित करेंगे। इसके अतिरिक्त वैसे 13 अन्य अपराधकर्मी , जो अपने-अपने बदर किए गए थाना में हाजिरी नहीं लगा रहे हैं, के विरुद्ध वारंट जारी करते हुए संबंधित थाना अध्यक्ष को निर्देशित किया गया है कि अपराध कर्मियों को अविलंब गिरफ्तार कर जिला दंडाधिकारी के न्यायालय में प्रस्तुत करेंगे। जिला प्रशासन सारण, लोकसभा आम चुनाव 2024 में शांतिपूर्ण एवं स्वच्छ मतदान तथा मतगणना हो, इसके लिए हमेशा प्रयासरत है। जिला प्रशासन द्वारा लोकसभा आम चुनाव 2024 में किसी भी अपराध कर्मी द्वारा बरती गई अनियमितता या लापरवाही को बर्दाश्त नहीं की जाएगी तथा उनके विरुद्ध विधि सम्मत कार्रवाई करेगी।

डीडीसी ने की समीक्षा बैठक

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। उप विकास आयुक्त प्रियंका रानी द्वारा 19-महाराजगंज लोक सभा आम निर्वाचन - 2024 के अवसर पर 115- बनियापुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र अंर्तगत बनियापुर प्रखंड के सभागार में निर्वाचन पूर्व तैयारी की समीक्षा हेतु बैठक की गई। बैठक में बनियापुर प्रखंड के सभी सेक्टर पदाधिकारियों को मतदान केंद्रों पर उपलब्ध सुनिश्चित न्यूनतम सुविधा (अटऋ) की जांच करने तथा जांच के क्रम में यदि किसी मतदान केंद्र पर किसी सुविधा की कमी पाई जाती है तो संबधित पदाधिकारी से समन्वय करते हुए उसका निदान कराने का निर्देश दिया गया। सभी मतदान केंद्रों को सतत निरीक्षण करने का निर्देश सभी सेक्टर पदाधिकारियों को दिया गया। (2) दिव्यांग एवम 85 वर्ष से अधिक आयु के मतदाताओं की जांच कर उनसे संबंधित विवरणी फॉर्म 12ऊ में उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया।
(3) साथ ही बैठक में मतदान कर्मियों के निर्वाचन प्रक्रिया से जुड़ी विभिन्न आशंकाओं का समाधान किया गया।
समीक्षा बैठक में प्रखंड विकास पदाधिकारी बनियापुर, अंचल अधिकारी बनियापुर, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी बनियापुर, इढट शिक्षा विभाग, कनीय अभियंता शिक्षा विभाग, कनीय अभियंता विद्युत विभाग तथा बनियापुर प्रखंड के सभी सेक्टर पदाधिकारी उपस्थित थें।

पच्चीस हजार का इनामी अपराधी पुलिस के गिरफ्त में

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा : जिला के मढ़ौरा थाना क्षेत्र के इनामी अपराधी बबलू महतो उर्फ बबलू मिस्त्री को मढ़ौरा थाना की पुलिस और बिहार एसटीएफ की संयुक्त टीम ने मंगलवार को छापेमारी करते हुये पटना के राजीव नगर मुहल्ले से गिरफ्तार कर लिया। इसकी जानकारी एसपी डा गौरव कुमार मंगला ने दी है। उन्होंने बताया कि बबलू महतो जिला का एक मोस्ट वांटेड अपराधी है और उसपर पच्चीस हजार रुपये का इनाम है। मढ़ौरा पुलिस कई सालों से उसकी तलाश कर रही थी। बबलू महतो के खिलाफ मढ़ौरा थाना में पहले से तीन मुकदमे दर्ज है। एसपी ने बताया की छापेमारी में शामिल पुलिस कर्मियों को पुरस्कृत किया जायगा।

वैश्य महासभा की बैठक सम्पन्न

प्रात: किरण, संवाददाता

छपरा। सारण जिला वैश्य महासभा की बैठक ब्याहुत धर्मशाला में हुई। बैठक में सभी ने एक मत से निर्णय लिया छपरा सारण से एनडीए के प्रत्याशी राजीव प्रताप रूडी तथा महाराजगंज से एनडीए समर्थित उम्मीदवार जनार्दन सिंह सिग्रीवाल को सभी वैश्य एकजुट होकर मतदान कर भारी मतों से विजयी दिलाया जाएँगा। एनडीए समर्थित उम्मीदवार राजीव प्रताप रूडी के नामांकन सभा में सारण जिला वैश्य महासभा के कार्यकारी अध्यक्ष सुपन प्रसाद बिहारी के नेतृत्व में हजारों वैश्य विभिन्न चौक चौराहो से गाजे बाजे के साथ राजेन्द्र स्टेडियम पहुँचे। बैठक की अध्यक्षता गंगोत्री प्रसाद अधिवक्ता ने की। संचालन श्याम बिहारी अग्रवाल ने किया। आगत अतिथियों का स्वागत संतोष कुमार डीओ ने किया तथा धन्यवादज्ञापन प्रदीप कुमार गुप्ता ने किया। बैठक को स्थानिय विधायक डॉ सीएन गुप्ता, नगर निगम मेयर लक्ष्मी नारायण गुप्ता, धर्मेन्द्र साह, लक्ष्मी नारायण प्रसाद अधिवक्ता, राजु कुमार ब्याहुत, कृष्णा शर्मा, गणेश गोकुल, कमलेश अग्रवाल, इन्द्र कान्त बबलू, वरूण प्रकाश राजा, राजेश फैशन, शत्रुघ्न प्रसाद गुप्त, प्रो सिया शरण प्रसाद, राजेश कुमार, विजय कुमार मुनी जी, संजय कुमार आर्या, ओमप्रकाश गुप्ता स्वर्णकार, राजेश नाथ प्रसाद, वार्ड पार्षद सुजीत कुमारमोर, वार्ड पार्षद अजय कुमार, अजीत कुमार सोनी, दिपक कुमार, अजय प्रसाद, मनोज कुमार गुप्ता, चंदन कुमार सोनी, राजेश डाबर आदि ने संबोधित किया। बैठक में वैश्य जाति के विभिन्न समुदाय के सैकड़ो वैश्य उपस्थित हुए।

संक्षिप्त खबरें

देसी शराब के साथ एक कारोबारी गिरफ्तार

दिनारा (रोहतास) पुलिस ने देसी महुआ शराब के साथ एक कारोबारी को भेजा जेल। इस संबंध में भानस ओपीध्यक्ष गुड़िया कुमारी ने बताया कि थाना क्षेत्र के डूमरी भभुआ से लालू मुसहर को 2 लीटर देसी महुआ शराब के साथ गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि गिरफ्तार कारोबारी के विरुद्ध संबंधित मामला दर्ज करते हुए जांच के उपरांत न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।

विभिन्न कांडों में संलिप्त आरोपियों को पुलिस ने भेजा जेल

दावथ (रोहतास) अनुमंडल क्षेत्र बिक्रमगंज के सुर्यपूरा प्रखंड में दो अलग-अलग मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया प्राप्त जानकारी के अनुसार, दो दिन पूर्व सूर्यपुरा के बलिहार स्थित मुसहर टोली से सूरजपुरा थाने के पुलिस एवं एसटीएफ ने मिलकर छापेमारी की थी। जिसमें 7 लीटर देसी महुआ पास बरामद किया गया था। जबकि शराब धंधेबाज सुरेंद्र डोम मौके से फरार हो गया था। जिसे सूर्यपुरा पुलिस ने गुरुवार को गिरफ्तार कर लिया है। उक्त मामले में उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। वहीं थाना क्षेत्र के गोठानी गांव से पूर्व के एक मारपीट के मामले में एस सी-एसटी एक्ट के तहत हुई कार्रवाई में दो लोगों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिए जाने की सूचना प्राप्त हुई है।

वार्ड नंबर 7 में पुरानी अदालत पड़ाव में लगी ट्रांसफार्मर में आग

आरा। वार्ड नंबर 7 में पुरानी अदालत मोड़ जगदीश बाबू के गोला के पास ट्रांसफार्मर के नीचे रखे गुमटी में भीषण आग लग गया मुझे तुरंत मोहल्ला वासियों के द्वारा सूचना किया गया मैं अपने घर से दौड़कर वहां पहुंचा तो सबसे पहले अपने और मोहल्ला वासियों के प्रयास से बगल में रखे बालू और पानी से आग पर कब्जा करने का प्रयास किया थोड़ा बहुत तो हम लोग के प्रयास से ट्रांसफार्मर तो बचा लिए लेकिन गुमटी में रखें समान जलकर खाक हो गया संजोग था कि उसमें गैस सिलेंडर था धू धू कर जलने लगा दुर्भाग्य है फायर ब्रिगेड को सूचना किया फायर ब्रिगेड आया भी बुझाने का प्रयास भी किया बुझाए भी लेकिन पानी खत्म हो गया मदन जी के घर से अपने समरसेबल से पानी आग बुझाने के लिए पानी दिया गया इसके लिए मोहल्ला वासी बिजली विभाग के कार्यरत कर्मचारी भाई और राजू सिंह के सहयोग से ट्रांसफार्मर बचा लिया गया अपने कार्यकाल में बहुत कड़ी मशक्कत से ट्रांसफार्मर लगवाए थे। इसके लिए सभी को दिल से बधाइ।

रेलकर्मियों ने मजदूर दिवस मनाया:मनोज पांडेय

आरा। शहीदों तेरे सपने को मंजिल तक पहुचायेंगे ईसीआरकेयू रेलकर्मियों को मिल रही सुविधाएं शहीदों साथियो के बलिदान का फल है! युक्त बात आज आरा रेलवे स्टेशन पर ईसीआरकेयू के बैनर तले मजदूर दिवस के अवसर पर यूनियन के केंद्रीय उपाध्यक्ष मनोज कुमार पांडेय ने कही! इस अवसर रेलकर्मियों ने शहीद वेदी पर पुष्प अर्पित किया और शहीदों को याद किया! मनोज पांडेय ने कहा मजदूर की कोई जाति धर्म नही होती, उसकी एक जाति होती हैं मजदूरी! हमारा संगठन मजदूरों के हक की लडाई निरंतर जारी रखेगा! क्युकी हमने संघर्ष के बल पर अपना हक पाया हैं और अपना संघर्ष जारी रखेंगे! इस मौके पर मनोज पांडेय के साथ शाखामंत्री नीरज कुमार सिंह, आर के सिंह, मनजी यादव, राजमहल सिंह, महेश कुमार, धनजी, मुकेश यादव धर्मवीर यादव के साथ बहुत सारे रेलकर्मियों उपस्थित थे।

आरा रोटी बैंक चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा मुहिम की गई शुरूआत

आरा। आरा रोटी बैंक चैरिटेबल ट्रस्ट के द्वारा आमपन्ना वितरण मुहिम की शुरूआत की गई।इस मुहिम का नेतृत्व करते हुए संस्था के सचिव कमलेश तिवारी ने कहा की इस तपती गर्मी और लू में सड़क पर मजदूरी कर रहे रिक्शा,ठेला चालक या अन्य किसी कारण से सड़क पर निकले लोगो को लू से बचाने के लिए संस्था द्वारा आमपन्ना का वितरण किया जा रहा है जो पूरे गर्मी और लू चलने तक जारी रहेगा।इस अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी का बहुत योगदान रहा।पूर्व एमएलसी लाल दास राय ने बताया की आरा रोटी बैंक चैरिटेबल ट्रस्ट की यह मुहिम इस भीषण गर्मी में सड़क पर रहने वालो के लिये वरदान साबित होगी।इस अवसर पर मुख्य रूप से आरा रेड क्रॉस के उप संरक्षण डॉदिनेश प्रसाद सिन्हा,सचिव डॉबिभा कुमारी,विकास सहित आरा रोटी बैंक चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष कुमार रोहित,राजेश कुमार,रवि सहाय,तरुण पाठक,सतीश सिंह,कुमार मोहित आदि उपस्थित थे।

मिनी राइस मिल की इमारत गिरने से दो मजदूरों की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

रेस्क्यू कर मृतकों के शव को निकाला गया बाहर

करहागर (रोहतास) करगहर थाना क्षेत्र में मंगलावर की दोपहर करीब दो बजे बेलासपुर गांव में स्थित मिनी राइस मिल की इमारत को धराशाई होने से पास के झोपड़ीनुमा घर मे आराम कर रहे समस्तीपुर और बेगूसराय के दो मजदुर मलबे में दब गए । जबकि एक मजदुर सहित दो मजदूर बुरी तरह जख्मी हो गए। जिन्हे ग्रामीणों के सहयोग से निजी अस्पताल में भर्ती किया गया है । 5 घंटे तक चली रेस्क्यू ऑपरेशन में दोनों मजदुरों को बाहर निकाल कर करगहर सीएचसी में भर्ती किया गया। जहां चिकित्सकों ने जांचों परांत उन्हों मृत घोषित कर दिया । घटना मंगलवार को उस समय घटी जब दोपहर में सीतामढ़ी के तीन दर्जन मजदूर खाना खाने के लिए मिल मालिक के गांव में स्थित मकान पर चले गए । जिससे एक बड़ा हादसा टल गया । घटना के संबंध में प्रशिक्षु डीएसपी पंकज कुमार ने बताया कि बेलासपुर गांव के समीप स्थिति सत्यम राइस मिल में तीन दर्जन से अधिक मजदूर कार्य करते हैं। दोपहर में सभी मजदूर गांव में स्थित मिल मालिक के घर खाना खाने गए थे। बॉयलर के नीचे बने कमरे में तीन मजदूर समस्तीपुर और बेगूसराय जिला के विभूतिपुर थाना अंतर्गत सरदहां गांव के सत्यम कुमार पिता कैलाश महतो व राजा कुमार तथा बेगूसराय जिला अंतर्गत बागराहां डीह निवासी प्रिंस कुमार पिता कलपु साह व उसी गांव के राजाराम विश्राम कर रहे थे। जो प्यास लगने पर मजदूर राजाराम पानी के लिए राइस मिल के बाहर चापाकल पर चला गया। इस बीच चक्रवात ने समीप में लगे विद्युत ट्रांसफार्मर को राइस मिल के लोहे के दीवारों पर गिरते हुए मिल की इमारत को धराशाई कर दिया। इस घटना में राइस मिल का बॉयलर टूट कर नीचे बने ऑपरेटर रूम के ऊपर गिर गया जिससे आपरेटर का रूम पूरी तरह मालवा में दब गया । रेस्क्यू टीम गैस कटर से बॉयलर को काट कर अलग की तथा मजदूर धान के ढेर को हटा कर साथियों की जान बचाने के लिए तेज गति से कार्य कर रहे हैं । घटनास्थल पर डीएसपी पंकज कुमार सीओ अजीत कुमार पुलिस बल के साथ काम कर रहे हैं तथा एम्बुलेंस और 102 की पुलिस टीम मौजूद है। घटनास्थल पर 5 घंटे के रेस्क्यू में ऑपरेटर सत्यम कुमार और प्रिंस कुमार को बाहर निकल गया। जिन्हें सीएचसी में चिकित्सकों की टीम ने दोनों ऑपरेटर को मृत घोषित कर दिया। डीएसपी ने बताया कि घायलों में ऑपरेटर राजा राम सहित दो लोग शामिल है जिनका इलाज निजी अस्पताल में चल रहा है।

फूटपाथी दुकानदारों, रिक्शा-ठेला चालकों गरीबों के नेता नही रहे कॉमरेड गोपाल प्रसाद

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। भाकपा(माले) जिला कमेटी के सदस्य और जिले के चर्चित मजदूर नेता का. गोपाल प्रसाद (73 वर्ष) का आज मजदूर दिवस, 1 मई 2024 की सुबह 10.30 बजे निधन हो गया। वे प्रोस्टेट कैंसर की बीमारी से पीड़ित थे। पटना स्थित इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (आइजीआइएमएस) से उनका लम्बे समय से इलाज चल रहा था। वे अस्सी के दशक में ही पार्टी से जुड़े थे। वे पिछले चार दशकों से आरा शहर में फूटपाथी दुकानदारों, रिक्शा-ठेला चालकों और अन्य गरीब तबकों के हक अधिकार की लड़ाई की मजबूती से अगुवाई कर रहे थे। ऐसे समय में जब देश की मेहनतकश जनता फासीवादी हमले के खिलाफ एक जबरदस्त लड़ रही है, का. गोपाल प्रसाद का चले जाना पार्टी, तमाम गरीबों और अन्य संघर्षशील तबकों के लिए बहुत बड़ी क्षति है। का. गोपाल प्रसाद की क्रांतिकारी विरासत अमर रहे। कामरेड गोपाल प्रसाद को लाल सलाम!उनका पार्थिव शरीर स्थानीय उजियारा टोला स्थित उनकी बेटि लक्ष्मी के घर से जहां उनका निधन हुआ, श्रीटोला स्थित भाकपा - माले जिला कार्यालय में लाया जाएगा। पार्टी पोलित वरिष्ठ सदस्य कॉमरेड स्वदेश भट्टाचार्य, राज्य सचिव कॉमरेड कुणाल, ऐपवा महासचिव मीना तिवारी , पोलित ब्यूरो सदस्य रवि राय, लोकयुद्ध संपादक संतोष सहर, जिला सचिव जवाहरलाल सिंह, केंद्रीय कमिटि सदस्य राजू यादव, समेत जिले के कई वरिष्ठ नेताओं द्वारा माल्यार्पण और श्रधांजलि देने के बाद देर शाम गांगी स्थित घाट पर अंतिम विदाई दी जयेगी।

श्रमिक दिवस पर संत एसएन ग्लोबल में कर्मी हुए सम्मानित

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) स्थानीय शहर के संत एसएन ग्लोबल स्कूल में अंतरराष्ट्रीय श्रमिक दिवस के अवसर पर श्रम व श्रमिकों के सम्मान में विशेष प्रार्थना सभा आयोजित हुई। अवसर पर छात्र-छात्राओं ने विद्यालय के सभी सहयोगी एवं सहायकों के सम्मान में विभिन्न रंगा रंग कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शुभारंभ श्रमिक स्वरूप में करते हुए धरती का श्रृंगार' श्रमिक गीत से किया गया।

मौके पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी सहायकों को वस्त्र, मिष्ठान उपहार सहित अन्य सामग्री देकर सम्मानित किया गया। वही आयोजित कार्यक्रम में कक्षा सप्तम की छात्रा सबा वसीम, प्राची, कोमल, ज्योति, ओजस्वी, साक्षी, अंजलि, मनीषा, नंदनी ने श्रम की महिमा को दशार्ती नृत्य प्रस्तुत किया। वहीं कक्षा पंचम के छात्र विराट सिंह और कक्षा अष्टम के छात्र ने अपने इंग्लिश स्पीच डेलिब्रेशन से सभी का मन मोह लिया। छात्रा कोमल राज,प्राची,ओजस्वी ,छात्र विराट और अनीस ने श्रम की महिमा को पुनर्स्थापित करती एक नाटक प्रस्तुत किया। छात्र विवेक कुमार ने शानदार एंकरिंग की। जबकि अवसर पर विद्यालय उपप्राचार्य विकास राय ने छात्र-छात्राओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में भी श्रम की महिमा और सार्थकता ठीक वैसे ही बनी हुई है सभ्यता के आरंभिक काल में थी।

अंतर केवल श्रम के स्वरूप में है। विज्ञान की खोजो और आविष्कार के पीछे भी कठोर श्रम ही है। विज्ञान बिना श्रम के एक कदम भी नहीं चल सकती।समाज में मानसिक या बुद्धि के श्रम को सदैव ऊपर रखा गया है। परंतु इसका यह अर्थ नहीं है कि इससे शारीरिक श्रम गौड़ हो जाता है। शारीरिक श्रम के द्वारा निर्मित आधार पर ही मानसिक श्रम कुछ रचनात्मक कर सकता है इस अवसर पर नेहा छेत्री,पुनम राय, कॉर्डिनेटर सिमरन मुखिया, अनुज सुब्बा के साथ अन्य ने भी अपना विचार रखा। साथ ही स्कूल निदेशक प्रकाश आनंद ने कहा कि आज श्रमिकों के कार्य बदौलत ही भारत विकास की एक नई गाथा लिख रहा है।

एनडीए कार्यकर्ताओं ने की बूथ स्तरीय बैठक

काराकाट (रोहतास) काराकाट विधानसभा के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की बुथ स्तरीय कार्यकर्ता बैठक गोड़ारी एवं खैरा भूधर तीन तीन पंचायतों की हुई। जिसकी अध्यक्षता विजय सिंह महामंत्री एवं संचालन जदयू के बिरेंद्र कुशवाहा ने की। बैठक में कार्यकताओं को चुनाव से सम्बंधित बहुत सी बातें बताई गई। इसकी जानकारी देते हुए नवीन चंद्र साह ने एनडीए प्रत्याशी उपेंद्र कुशवाहा के जीवन पर प्रकाश डालते हुए भूरी-भूरी प्रशंसा किया। साथ ही नरेंद्र मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं को भी जानकारी दी गई। बैठक में राष्ट्रीय महासचिव अखिलेश्वर प्रसाद सिंह, काराकाट लोकसभा संयोजक नवीन चंद्र साह, राष्ट्रीय लोक मोर्चा जिला अध्यक्ष कपिल सिंह, सुनील सिंह,धनजी पासवान सहित पंचायत अध्यक्ष एवं बुथ अध्यक्ष सहित पन्ना प्रमुख उपस्थित थे। जो 10 मई को एनडीए गठबंधन उम्मीदवार उपेंद्र कुशवाहा नामांकन जिला कार्यालय सासाराम में करेंगे।

पूर्व प्राचार्य ने पत्नी के पुण्यतिथि पर मूर्ति का किया अनावरण

प्रात : किरण संवाददाता

मुख्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया नमन

बिक्रमगंज/काराकाट (रोहतास) स्थानीय शहर के अंजबित सिंह महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो. राम बिहारी सिंह ने बुधवार 1 मई को अपनी पत्नी स्व. मीरा देवी के तृतीय पुण्यतिथि पर मूर्ति अनावरण किया। अवसर पर देर शाम प्राचार्य ने अपने काराकाट निवास स्थान मीरा बिहारी पैलेस स्थित नवनिर्मित पूर्व प्राचार्य पत्नी की स्थापित प्रतिमा कार्यक्रम पर मुख्य अतिथि सीनेट सदस्य वीर कुंवर सिंह विश्विद्यालय,आरा सह भाजपा शिक्षक प्रकोष्ठ प्रदेश महामंत्री डॉ. मनीष रंजन, पूर्व प्राचार्य राम बिहारी सिंह व वरीय जदयू नेता आलोक सिंह, वरीय राजद नेता मुन्ना राय, वरीय भाजपा नेता सुनील सिंह ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर प्रतिमा का अनावरण करते हुए भावभीनी पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें नमन कर याद किया। जबकि मौके पर उपस्थित सैकड़ों लोगों ने भी उनके तृतीय पुण्यतिथि पर उन्हें पुष्प अर्पित कर दो मिनट का मौन रख उनके दिवंगत आत्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की। वही बुधवार को आयोजित देवी जागरण कार्यक्रम में देर रात तक झूमते हुए श्रोताओं ने प्रीतिभोज का आनंद लिया। अवसर पर उनके पुत्र बलवंत सिंह सहित अन्य पुत्रों ने उन्हें पुष्प अर्पित कर बताया कि वह मेरी पूजनीय मां के साथ मेरे जीवन को मार्गदर्शक देने वाली एक अनमोल रत्न भी थी। जिन्होंने अपने जीवनकाल में असहाय गरीबों की मदद करते हुए अन्याय के खिलाफ आवाज भी उठाती थी। जबकि भाजपा नेता डॉ. मनीष ने बताया कि इस सृष्टि पर भगवान का दूसरा रूप हमारे माता-पिता है जिनका हमें दिल से आजीवन सम्मान करना चाहिए। मौके पर दुष्यंत सिंह, यशवंत सिंह, मनोज कुमार, प्राचार्य डॉ. सुरेंद्र कुमार सिंह, लाल बिहारी सिंह, वरुण सिंह, प्रो. बीर बहादुर सिंह, प्रो.अनिल सिंह, सुरेश तिवारी, बिरेंद्र तिवारी, अयूब खां, मोइनुद्दीन हुसैन, जसीम कुरैशी, रवि प्रकाश, अभय कुमार सिंह,प्रियतम कुमार,परवेज खां सहित सैकड़ों लोग उपस्थित थें।

मतदान लोकतंत्र की आधारशिला है और भारत के युवा इस कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते है : अमित सिंह

प्रात : किरण संवाददाता

आरा। महंतमहादेवानंद महिला कॉलेज आरा के राष्ट्रीय सेवा योजना के द्वारा मतदाता जागरूकता अभियान के तहत पोस्टर और रंगोली की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कॉलेज की प्रधानाचार्य डॉ मीना कुमारी द्वारा किया गया । इस मौके पर जिला परियोजना अधिकारी अमित कुमार सिंह और कार्यक्रम पदाधिकारी भी उपस्थि रहे। अमित कुमार सिंह ने मतदाता जागरूकता के लिए छात्रों का उत्साह बढ़ाया और कहा की भारत में मतदान लोकतंत्र की नींव है। भारत में प्रत्येक नागरिक को इसमें भाग लेने का अधिकार और जिम्मेदारी है। वोटिंग क्या है? भारत में मतदान का महत्व,भारत में कौन मतदान कर सकता है ?,भारत में कौन मतदान नहीं कर सकता ?,भारत में मतदान कैसे करें? ,भारत में आपके मतदान अधिकार क्या हैं? ,भारत में मतदाता पहचान पत्र के लिए आवेदन कैसे करें?, मतदाता पहचान पत्र कैसे प्राप्त करें, मतदान करने के लिए पात्र कौन है, इन प्रमुख पहलुओं को समझकर उन्होंने कहा की युवा अपने देश के भविष्य को आकार देने में सक्रिय योगदान दे सकते हैं और जिम्मेदार नागरिक के रूप में अपना कर्तव्य पूरा कर सकते हैं।कॉलेज की राष्ट्रीय सेवा योजना की ओर से स्विप गतिविधियों के तहत मतदाता जागरूकता अभियान पर पोस्टर और रंगोली प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस कार्यक्रम का धन्यवाद ज्ञापन डॉ राखी सिन्हा ने किया। इस कार्यक्रम का संचालन केंपस एंबेसडर अंशु पांडे और मनीषा कुमारी ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी शिक्षक गण और छात्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा । रंगोली और पोस्टर प्रतियोगिता। में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली कुमारी बबली प्रसाद और दूसरा स्थान प्राप्त करने वाली प्रिया कुमारी को सर्टिफिकेट दिया गया।

बालू माफियाओं के बीच वर्चस्व को लेकर हुई गोलीबारी, दो की मौत

प्रात : किरण संवाददाता

आरा/कोईलवरः भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र के कमालुचक दियारा क्षेत्र में बुधवार की रात अवैध बालू खनन को लेकर दो गुटों के बीच भिड़ंत हो गई। इस दौरान जमकर गोलीबारी भी हुई। गोलीबारी में दो-तीन लोगों को गोली लगने की सूचना है।

फायरिंग में घायल एक किसान सारण (छपरा) जिला के डोरीगंज थाना क्षेत्र के चकिया गांव निवासी स्व रजक महतो का 40 वर्षीय पुत्र पुर्णवासी महतो है। जख्मी किसान को एक गोली बाएं पैर, एक जांघ और एक गोली बाएं हाथ में लगी है। इसके बाद वहां मौजूद अन्य लोगों की मदद से इलाज के लिए सदर अस्पताल लाया गया। जहां से प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें डॉक्टरों ने पटना रेफर कर दिया। दूसरे घायल का नाम विकास बताया जाता है। एसपी नीरज कुमार सिंह के निर्देश पर टीम दियारा में जांच और हताहत लोगों के सत्यापन में लगी है। इधर, जख्मी किसान ने बताया कि उनका भोजपुर जिले के कोईलवर थाना क्षेत्र के जमालपुर कमालुचक दियारा बधार में खेत है। वे अपने खेत में हर रोज की तरह हरी सब्जियों की नीलगायों से बचाने के लिए खेत में लगे मचान पर सोए थे। इस बीच दस से पंद्रह के संख्या आए लोगों ने ताबड़तोड़ फायरिंग शुरू कर दी। गोली चलने की आवाज सुनकर भागने की कोशिश की, तभी एक गोली पैर और एक गोली हाथ में लग गई। किसी भी तरह वहां अन्य किसानों ने बचाया। इसके बाद स्वजनों की मदद से इलाज के लिए आरा के सदर अस्पताल लाया गया। जख्मी किसान ने किसी से भी कोई विवाद से इनकार किया है। ऑन ड्यूटी चिकित्सक सुजीत कुमार के अनुसार अधेड़ को गोली लगी है। गोली लगने से पैर पूरी तरह फैक्चर हो गया है। प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें बेहतर इलाज के लिए पटना रेफर कर दिया गया है।

अंजबित सिंह महाविद्यालय में संगोष्ठी में कार्यक्रम का आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) स्थानीय शहर के अंजबित सिंह महाविद्यालय में संगोष्ठी में कार्यक्रम का हुआ आयोजन। जिस कार्यक्रम का उद्घाटन महाविद्यालय के प्राचार्य सुधांशु शेखर भास्करन ने की। अवसर पर प्राचार्य को पर्यावरण संरक्षण के प्रतीक पौधा देकर छात्रों ने सम्मानित किया गया। प्राचार्य ने सभा को संबोधन करते हुए कहा कि अभिभावक को महाविद्यालय के कार्यो में सहयोग करना चाहिए एवं अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजना चाहिए। प्राचार्य ने छात्र ,अभिभावक एवं शिक्षकों को महाविद्यालय के विकास में अपना योगदान देने के लिए उत्प्रेरित किया।

मौके पर बॉटनी विभागाध्यक्ष डॉ कन्हैया सिंह ने बताया कि सीखने और सिखाने की प्रक्रिया अनवरत चलती रहती है। जिसमें माता पिता,शिक्षक एवं शैक्षिणक संस्थान की अहम भूमिका होती है। इस संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में डॉ संतोष कुमार विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान विभाग ने अधिगम स्थानांतरण में शिक्षक,अभिभावक एवं छात्र की भूमिका पर विस्तृत ढंग से मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया। विभिन्न प्रयोगों के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया एवं स्थानांतरण को बताया। इस कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. शशि भूषण का कार्यक्रम सफल में सराहनीय योगदान रहा। कार्यक्रम में उपस्थित छात्र-छात्राओं सहित अभिभावक इसकी सराहना की। अवसर पर डॉ. संतोष कुमार सिंह, डॉ. रविकांत पाण्डेय, प्रोफेसर फजल अहमद, डॉ. अमजद अली,सुकेश्वर सिंह सहित अन्य लोगों ने भी अपना विचार व्यक्त किया।

फाइनेंस कर्मी ने ही खुद के लूट की रची थी साजिश, उद्वेदन के बाद पुलिस ने किया खुलासा

प्रात : किरण संवाददाता

कैमूर। फर्जी लूट कांड का पुलिस ने सफल उद्वेदन करते हुए कांड प्रतिवेदन कराने वाले साजिश कर्ता को गिरफ्तार कर लिया है। वही उसके पास से मामले में दर्ज कराई गई नगदी एवं अन्य सामान भी बरामद किया है। इस संबंध में पुलिस अधीक्षक कैमूर ललित मोहन शर्मा ने बताया कि भारत फाइनेंस लिमिटेड मोहनिया ब्रांच में कार्यरत कुश कुमार सिंह पिता राजदेव सिंह ग्राम करमाही थाना राजपुर जिला रोहतास के द्वारा 18 अप्रैल 2024 को दुर्गावती थाने में लिखित आवेदन देकर अज्ञात लोगों के विरुद्ध 150787 रुपए, मोबाइल फोन, टैब, बायोमैट्रिक,बैग, एवं पर्स लूट का कांड दर्ज कराया था। इस कांड के उद्वेदन हेतु अंचल निरीक्षक मोहनिया के नेतृत्व में थाना अध्यक्ष दुर्गावती राजीव रंजन सिंह, डी आई यू प्रभारी एवं अन्य कर्मियों की टीम गठित की गई। वैज्ञानिक अनुसंधान के दौरान लूटी गई मोबाइल का सिम रन करने पर इस काण्ड के वादी के घर का लोकेशन पाया गया। इसी आधार पर मोबाइल को जब्त करते हुए कांड के वादी से पूछताछ किया गया तो कुश कुमार सिंह ने बताया की सट्टा खेलने में 8 से 10 लाख रुपया हार चुके हैं वह पैसा बंधक जमीन को छुड़ाने के लिए उनके भाई दिए थे । भाई के द्वारा बंधक जमीन छुड़ाने का दबाव दिया जा रहा था तब इनको कोई दूसरा उपाय नहीं सूझा तो सोची समझी प्लान के तहत 18 अप्रैल को विभिन्न गांव से वसूल किया गया कुल 150787 रुपया एवं मोबाइल को अपने पास रख लिए एवं कंपनी के टैब को तोड़कर, बायोमेट्रिक के साथ बैग में डाल करके घटनास्थल महमूदगंज के पश्चिम फ्लाईओवर के दक्षिण शीशम के बगीचे में स्थित कुआ में फेंक दिया तथा लूट का झूठा कांड दर्ज कराये। इस कांड के अनुसंधान के क्रम में लूट का पैसा कुश कुमार सिंह के घर से तथा टैब एवं बायोमेट्रिक बगीचा में स्थित कुआं से बरामद कर जप्त किया गया। वहीं इस मामले में पूछताछ करते हुए कुश कुमार सिंह को जेल भेजा जा रहा है ।

पी एम श्री केंवि में वार्षिक खेलकूद पुरस्कार वितरण का हुआ आयोजन

प्रात : किरण संवाददाता

मशरक। मशरक पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय में वार्षिक खेल कूद पुरस्कार वितरण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ विद्यालय प्राचार्या श्रीमती रंजना झा के विचार प्रस्तुति से हुआ।

जिसमे मुख्य अतिथि के रूप में श्री शक्ति सिंह ,बिहार खेल प्राधिकरण के मुख्य कोच एवं हैमर थ्रो, डिसकस एवं शॉट पुट के राष्ट्रीय खिलाड़ी ने शिरकत किया। मुख्य अतिथि से पुरस्कृत होकर छात्र काफी प्रेरित और उत्साहित दिखे। इस दौरान मुख्य अतिथि द्वारा छात्रों को अनुशासन के साथ खेल के क्षेत्र में सफल होने के गुढ ज्ञान दिया गया। धन्यवाद ज्ञापन शिक्षक श्री राजकुमार शाक्य के द्वारा किया गया। जबकिं मंच संचालन चालन सुधीर कुमार पुस्तकालय अध्यक्ष ने किया ।कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक शैलेश कुमार श्रीवास्तव , रमेश यादव , अनिल कुमार शाह, रितेश कुमार सहित अन्य शामिल हुए।

कोरोना वॉरियर्स डॉ. बी के सिंह की मनी पुण्यतिथि

इसुआपुर । प्रखंड के जाने-माने लोकप्रिय चिकित्सक डॉक्टर बिरेंद्र कुमार सिंह की तृतीय पुण्यतिथि डॉ बी के सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल इसुआपुर के प्रांगण में गुरुवार को मनाई गई। इस मौके पर हजारों गणमान्य व आम लोगों ने उनके तैलचित्र पर फूलमाला चढ़ाकर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। अपनी शोक संवेदना व्यक्त करते हुए स्थानीय सांसद जनार्दन सिंह सिग्रीवाल ने कहा कि सीएचसी इसुआपुर में चिकित्सा पदाधिकारी के रूप में कार्यरत डॉक्टर बी के सिंह कोरोना वायिर्स के रूप में अपनी जान की परवाह किए बिना कोरोना से ग्रसित रोगियों की चिकित्सा सेवा में लगातार लगे रहे। इस दौरान में स्वयं कोरोना बीमारी की चपेट में आ गए तथा इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। वे एक कुशल चिकित्सक के साथ-साथ लोकप्रिय सामाजिक और धार्मिक कार्यकर्ता भी थे। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में डॉ सुधांशु रंजन, जिला पार्षद प्रियंका सिंह, छबिनाश सिंह, डॉक्टर प्रतीक कुमार लाला डॉ संदीप कुमार साहेब, डॉक्टर पायल सिंह, डॉ राम प्रमोद सिंह, बैरिस्टर राय, मुखिया अजय राय, धनंजय पांडेय, सुनील चौरसिया,मन्ना सिंह, धीरज सिंह, मेराज अहमद, एमडी वारिस,अरुण चौबे, लंकेश बाबा, नंदकिशोर सिंह समेत हजारों लोग थे।

युवक को बदमाशों ने गोली मारकर किया जख्मी

प्रात : किरण संवाददाता

कैमूर। भभुआ थाना क्षेत्र के बिठवार व कटरा गांव के बीच साइकिल से तरबूज बेचने जा रहा युवक को बदमाशों में गोली मारकर जख्मी कर दिया है। जानकारी के मुताबिक भभुआ थाना क्षेत्र के बिठवार गांव निवासी नसरुद्दीन अंसारी के 30 वर्षीय पुत्र फिरोज अंसारी बताया जाता है। घायल के पिता ने बताया कि अपने गांव से साइकिल से तरबूज बेचने के लिए दूसरे गांव जा रहा था। तभी बिठवार व कटरा गांव के बीच अज्ञात बदमाशों ने पीठ और उसके बाह में गोली मार दिया जिससे वह गंभीर रूप से जख्मी हो गया। जहां मौके से बदमाशों ने फरार हो गया। वहीं स्थानीय लोगों द्वारा इलाज के लिए भभुआ के सदर अस्पताल लाया गया है। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंचकर घटना की जानकारी ली। उसके बाद चिकित्सक द्वारा घायल को प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए हायर सेंटर रेफर कर दिया गया है। इस मामले में पुलिस आगे की जांच कर रही है।

बिजली चोरी में मील संचालकों पर लगा 5.97 लाख का जुर्माना

बिक्रमगंज (रोहतास) सहायक विद्युत अभियंता बिक्रमगंज राज कुमार के नेतृत्व में अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर एक जांच दल का गठन किया गया। जांच दल द्वारा प्रखंड दिनारा के बीसीकलां में मीटर बाईपास कर अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा की चोरी करने को लेकर मील संचालक भुवाली शर्मा पिता रघुनाथ शर्मा पर 86 हजार 538 रुपये राजस्व की क्षति लगाई गई है। उक्त उपभोक्ता के द्वारा मीटर बाईपास कर तीन अतिरिक्त अलग से तार खींचकर अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा की चोरी की जा रही थी, जिसके कारण वास्तविक मान पठन अवरुद्ध हो रहा था। बताया जाता है कि बिना कोई विद्युत कनेक्शन लिए अवैध रूप से विद्युत ऊर्जा चोरी को लेकर ग्राम भड़सरा में मील संचालक ललन साह पिता स्व० रामदयाल साह पर 5 लाख 11 हजार 250 रुपये आर्थिक दंड लगाई गई है । बता दें कि ऊक्त अभियुक्त के परिसर में मीटर भी अधिष्ठापित नहीं था तथा विद्युत कनेक्शन से संबंधित कागजात की मांग करने पर कोई कागजात नहीं दिखाई गई।

राधा-कृष्ण की प्रेम कहानी पर फिल्म बनाएंगे इम्तियाज अली

बॉलीवुड निर्देशक इम्तियाज अली फिल्म चमकीला से बॉक्स ऑफिस पर तहलका मचाने के बाद अब एक प्रेम कहानी पर फिल्म बनाना चाहते हैं। यह प्रेम कहानी राधा-कृष्ण पर आधारित होगी।

इम्तियाज अली की फिल्म चमकीला दर्शकों को खूब पसंद आई है। फिल्म में दिलजीत दोसांझ और परिणीति चोपड़ा के बेहतरीन अभिनय ने दर्शकों का दिल जीत लिया। यह अमर सिंह चमकीला पर आधारित एक बायोपिक फिल्म थी। अब इम्तियाज ने खुलासा किया कि वह एक प्रेम कहानी बनाना चहते हैं। यह प्रेम कहानी राधा-कृष्ण की प्रेम कहानी पर आधारित होगी। हालांकि राधा-कृष्णा की प्रेम कहानी पर फिल्म बनाने की बात को इम्तियाज 2018 में ही कह चुके हैं।

राधा-कृष्ण पर बनाएंगे फिल्म

एक इंटरव्यू के दौरान इम्तियाज ने कहा, मैं राधा-कृष्ण पर फिल्म बनाना चाहता हूं। मैं उनकी कहानियों और पौराणिक कथाओं से बहुत प्रभावित हूं। लेकिन इसके लिए पहले मैं खुदको उस पद पर लाना चाहता हूं, ताकि मैं एक बेहतरीन फिल्म बना सकूं। मुझे जरूरत है ऐसे दो किरदारों की जो राधा और कृष्णा के चरित्र को निभा सकें। इम्तिजा ने आगे कहा, वह चाहते है कि यह फिल्म बनें और लोग इसके लिए दुआ करें, जो लोग इस फिल्म को देखना चाहते हैं। हो सकता है कि मैं उनकी दुआओं की वजह से ही यह फिल्म बना सकूं। इम्तियाज की राधा-कृष्ण की प्रेम कहानी पर आधारित फिल्म में कौन अभिनय करेगा यह अभी तय नहीं हुआ है। फिलहाल, अभी स्क्रिप्ट पर ही काम चल रहा है। फिल्म अमर सिंह चमकीला से पहले निर्देशक इम्तियाज अली ने कई बेहतरीन फिल्मों का निर्देशन किया है, जिसमें हैरी मेट सेजल, लव आज कल, और रॉकस्टार जैसी कई बेहतरीन फिल्में शामिल हैं। उनकी हालिया रिलीज फिल्म चमकीला दर्शकों को बेहद पसंद आई।

प्रभास के साथ स्पिरिट में नजर आ सकती हैं कियारा और नयनतारा

बाहुबली से पैन इंडिया स्टार के तौर पर अपने पहचान बनाने वाले अभिनेता प्रभास इन दिनों कई फिल्मों को लेकर चर्चाओं में हैं। हाल ही में उनकी आगामी फिल्म कल्कि 2898 एडी का टीजर जारी किया गया था, जिसे देखने के बाद दर्शकों में इस फिल्म के प्रति उत्साह बना है। टीजर में अमिताभ बच्चन अश्वत्थामा के किरदार में नजर आ आए थे। अमिताभ का ये लुक फैंस को काफी पसंद आया है। इस बीच प्रभास की अपकमिंग फिल्म स्पिरिट की चर्चा शुरू हो गई है। इस फिल्म को लेकर एक रिपोर्ट सामने आई है, जिसमें ये बताया गया है कि फिल्म में हिन्दी सिनेमा की दो नायिकाओं को भी साइन कर लिया गया है।

स्पिरिट को लेकर जो उत्साह है उसका सबसे बड़ा कारण गत वर्ष प्रदर्शित हुई सालार है। सालार ने बॉक्स ऑफिस पर 700 करोड़ से ज्यादा का कारोबार करके तहलका मचा दिया था। इस बीच स्पिरिट के निर्माताओं ने बड़ा दांव खेला है। प्राप्त समाचारों के अनुसार मेकर्स ने कियारा आडवाणी और नयनतारा को फिल्म के लिए अप्रोच किया है। हालांकि मेकर्स ने फिलहाल इस बात की पुष्टि नहीं की है। प्रभास की फिल्म स्पिरिट का बजट करीब 300 करोड़ बताया जा रहा है। प्रभास की फिल्म सालार पार्ट-1 बीते साल रिलीज हुई थी। इस को लोगों ने काफी अच्छा रिस्पॉन्स दिया था। बॉक्स ऑफिस पर प्रभास की फिल्म ने धमाल मचाया था। मालूम हो कि प्रभास की कई फिल्में बॉक्स ऑफिस पर गर्दा उड़ाने को तैयार हैं। इस लिस्ट में कल्कि 2898 एडी, स्पिरिट और सालार 2 के नाम शामिल हैं।

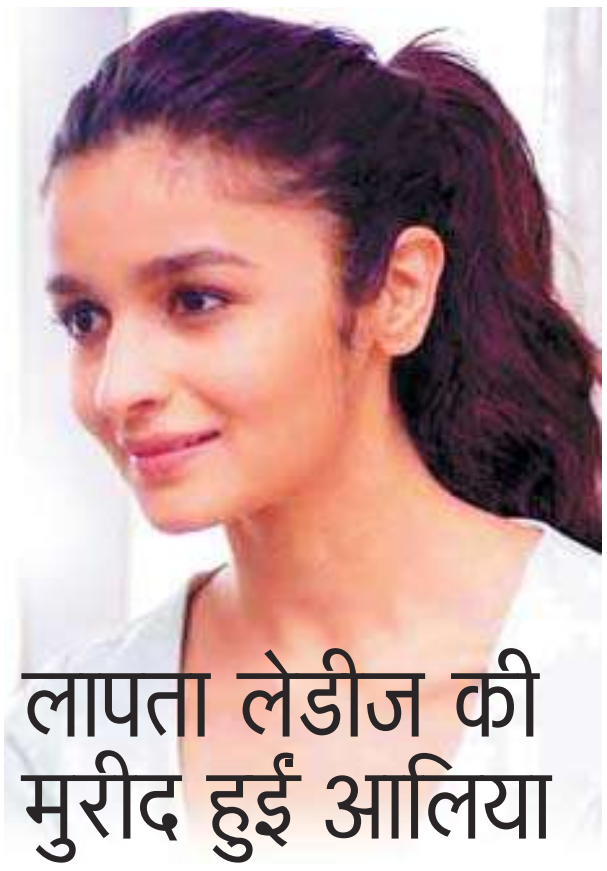

लापता लेडीज की मुरीद हुईं आलिया

किरण राव द्वारा निर्देशित लापता लेडीज 1 मार्च, 2024 को नाटकीय रूप से रिलीज हुई। रिलीज होने पर, फिल्म को आलोचकों और दर्शकों से सकारात्मक समीक्षा मिली। मशहूर हस्तियों को भी राव की निर्देशन क्षमता और फिल्म के कलाकारों के शानदार अभिनय से प्यार हो गया। फिल्म 26 अप्रैल को नेटफ्लिक्स पर रिलीज हुई। जैसे-जैसे फिल्म दिल जीत रही है, अभिनेत्री आलिया भट्ट ने पारिवारिक नाटक पर अपने विचार और राय साझा करने के लिए अपने सोशल मीडिया हैंडल का सहारा लिया। फिल्म देखने के बाद, आलिया ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज पर लिखा, फिल्मों में बहुत अच्छा समय बिताया। इन लेडीज, प्रतिभा रांटा, नितांशी गोयल, और सज्जन स्पर्श श्रीवास्तव और रवि किशन, वास्तव में मेरे दिल में हैं। इतनी खूबसूरत फिल्म और सभी कलाकारों का क्या शानदार प्रदर्शन! आप सभी को बधाई। फिल्म लापता लेडीज बिप्लब गोस्वामी के पुरस्कार विजेता उपन्यास पर आधारित है। किरण राव के निर्देशन में बनी फिल्म में स्पर्श श्रीवास्तव, प्रतिभा रांटा, नितांशी गोयल और रवि किशन मुख्य भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म दर्शकों को 2001 के ग्रामीण भारत में वापस ले जाती है। इसकी कहानी दो दुल्हनों के इर्द-गिर्द घूमती है जिनकी ट्रेन यात्रा के दौरान अदला-बदली हो जाती है। उतार-चढ़ाव से भरी यात्रा तब शुरू होती है जब उनके पति असली दुल्हन की तलाश शुरू करते हैं। आलिया भट्ट ने अपनी अगली फिल्म जिगरा की शूटिंग पूरी कर ली है। जनवरी में, संजय लीला भंसाली ने सभी प्रशंसकों को आश्चर्यचकित कर दिया जब उन्होंने आलिया भट्ट, रणबीर कपूर और विक्की कौशल के साथ अपनी अगली फिल्म लव एंड वॉर की घोषणा की।

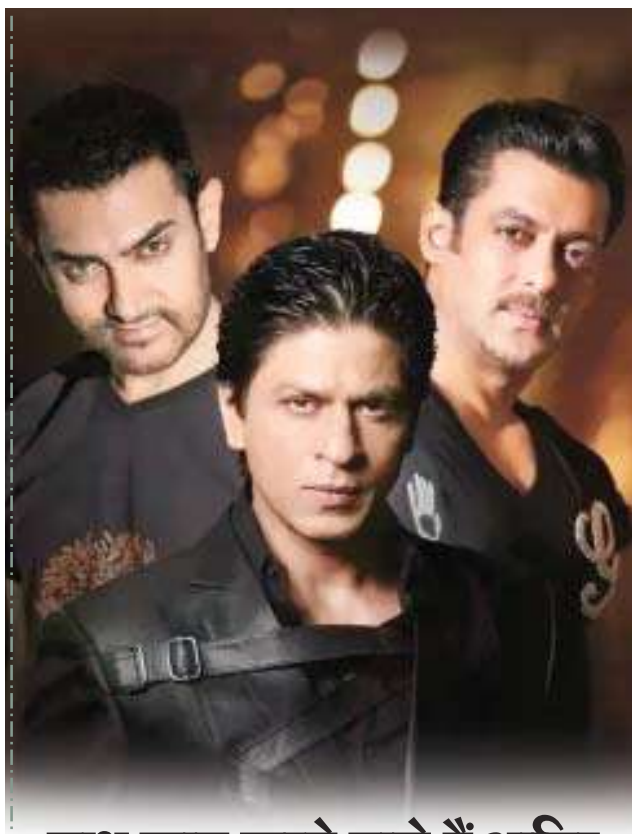

साथ काम करने वाले हैं आमिर, शाहरुख और सलमान? कपिल के शो में उठा राज से पर्दा!

बॉलीवुड के तीन खान- आमिर खान, सलमान खान और शाहरुख खान फिल्म इंडस्ट्री के सबसे बड़े चेहरों में शामिल हैं। तीनों के फैंस की इच्छा है कि वे किसी फिल्म में एक साथ काम करेंगे। अब इस बात को लेकर खुद आमिर खान ने बड़ी जानकारी साझा की है, जिसने एक बार फिर से दर्शकों की उम्मीदों को सांसें देने का काम किया है। आमिर खान हाल ही में, द ग्रेट इंडियन कपिल शो के नए एपिसोड में नजर आए। इस दौरान उन्होंने शाहरुख और सलमान के साथ काम करने की इच्छा जताई। एक दर्शक से बात करते हुए उन्होंने इस बात की ओर इशारा किया। आमिर खान ने कहा कि उन्होंने हाल ही में, शाहरुख और सलमान खान से मुलाकात की थी। उन दोनों से आमिर ने कहा था, हम तीनों एक ही इंडस्ट्री में इतने सालों से हैं और ये ऑडिएंस के लिए काफी गलत हो जाएगा कि करियर के इस दौर में अगर हम साथ में एक फिल्म ना करें। एक फिल्म तो बनती है। कहानी की तलाश में हैं तीनों आमिर खान ने शो में बताया कि वह दो दिन पहले ही सलमान खान से मिले थे। मुलाकात के दौरान भाईजान ने उन्हें अपने ब्रैंड के कपड़े तोहफे में दिए थे। आमिर ने आगे बताया कि वह तीनों ही एक कहानी की तलाश में हैं। आमिर की इस बात से दर्शकों के बीच चर्चाओं का दौर शुरू हो चुका है। अगर तीनों एक साथ किसी फिल्म में काम करते हैं तो यह वाकई में बड़ी बात होगी।

दिलजीत दोसांझ और नीरू बाजवा की जट्ट एंड जूलियट 3, 28 जून को होगी रिलीज

एक्टर दिलजीत दोसांझ और नीरू बाजवा की आने वाली फिल्म जट्ट एंड जूलियट 3 28 जून को दुनिया भर में बड़े पर्दे पर रिलीज होगी। दिलजीत ने एक्स और इंस्टाग्राम पर जगदीप सिद्धू द्वारा निर्देशित पंजाबी फिल्म के दो पोस्टर शेयर करते हुए इसकी घोषणा की। उन्होंने कैप्शन में लिखा, फतेह और पूजा वापस आ गए हैं। जट्ट एंड जूलियट 3 दुनिया भर में 28 जून को रिलीज हो रही है। अनुराग सिंह द्वारा निर्देशित रोमांटिक कॉमेडी जट्ट एंड जूलियट पहली बार 2012 में रिलीज हुई थी। एक साल बाद, फिल्म का दूसरा पार्ट रिलीज किया गया। इन दिनों दिलजीत अपनी हाल ही में रिलीज हुई फिल्म अमर सिंह चमकीला के लिए प्रशंसा बटोर रहे है, जिसे स्ट्रीमिंग पोर्टल नेटफ्लिक्स पर रिलीज किया गया। इम्तियाज अली द्वारा निर्देशित यह फिल्म पंजाब के मशहूर सिंगर अमर सिंह चमकीला की असली कहानी है, जिनका किरदार दिलजीत दोसांझ ने निभाया है। वह अपने अलग तरह के गानों के चलते कई बार विवादों में रहे थे।

रामायण में कैकेयी की भूमिका पर लारा ने तोड़ी चुप्पी

इन दिनों फिल्मी गलियारों में अगर किसी चीज की सबसे ज्यादा चर्चा हो रही है तो वह है नितेश तिवारी की रामायण। इसे लेकर रोज नई खबरें आती हैं। नई तस्वीरें जारी होती हैं। अलग-अलग सूत्रों से फिल्म की शूटिंग से लेकर स्टारकास्ट तक के दावे किए जाते हैं। मगर, सही मायनों में अभी तक किसी को अता-पता नहीं कि यह फिल्म कहां बन रही है और कहां इसकी शूटिंग चल रही है। बीते दिनों खबर आई थी कि रामायण में लारा दत्ता कैकेयी की भूमिका निभा रही हैं। इसे लेकर अब खुद लारा दत्ता ने प्रतिक्रिया दी है। कहा जा रहा है कि रामायण में रणबीर कपूर भगवान राम और साई पल्लवी माता सीता की भूमिका में नजर आएंगी। बीते दिनों दोनों का लुक भी वायरल हुआ, हालांकि इसकी पुष्टि कहीं से नहीं हुई। इसके अलावा फिल्म के और भी कई किरदारों को लेकर सितारों के नामों की चर्चा है। इसी कड़ी में रिपोर्ट्स् के आधार पर कहा गया कि लारा दत्ता कैकेयी की भूमिका निभाएंगी। अब लारा ने इस पर चुप्पी तोड़ी है। रामायण में कैकेयी की भूमिका को लेकर चल रहीं तमाम खबरों को लेकर लारा दत्ता ने हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान कहा, मुझे भी इन अफवाहों के बारे में पढ़ना और सुनना अच्छा लग रहा है। इसलिए कृपया इन्हें जारी रखें। आखिर रामायण का हिस्सा कौन नहीं बनना चाहेगा? लारा दत्ता ने बातचीत में यह भी बताया कि रामायण में वह और कौन से किरदार निभाना पसंद करेंगी। लारा ने हंसते हुए कहा, इसमें ऐसे बहुत से किरदार हैं जिन्हें मैं निभाना पसंद करती अगर यह मुझे ऑफर किया जाता। उन्होंने कहा कि वह शूर्पणखा, मंदोदरी का भी रोल निभाना पसंद करेंगी।

आज 95 प्रतिशत सटीक हैं बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट

निर्माता सिद्धार्थ रॉय कपूर का कहना है कि ओटीटी या थिएटर पर कोई प्रोजेक्ट सफल रहा है या नहीं, इसका आकलन करने का पैमाना उससे जुड़े आंकड़ों पर निर्भर करता है, जो ज्यादातर प्रामाणिक होते हैं। रॉय कपूर फिल्म्स की शुरुआत करने वाले निर्माता ने कहा कि उद्योग की बॉक्स ऑफिस रिपोर्ट 95 प्रतिशत सटीक है।

एक साक्षात्कार में, जब एक सफल परियोजना के संकेतक पूछे गए, तो सिद्धार्थ रॉय कपूर ने कहा, जब नाटकीयता की बात आती है, तो बॉक्स ऑफिस आपका रिपोर्ट कार्ड है। यह बहुत स्पष्ट है और सार्वजनिक डोमेन में है। हमारी रिपोर्टिंग अब काफी सटीक हो गई है। हमारे बॉक्स ऑफिस की स्थिति के अनुसार रिपोर्टिंग 95 प्रतिशत सटीक है। यह अतीत की तुलना में बहुत बड़ा बदलाव है। जब स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म की बात आती है तो मीट्रिक बदल जाती है, क्योंकि इसमें कोई बॉक्स ऑफिस नंबर नहीं होता है। ओटीटी पर, निर्माता ने कहा कि यह पता लगाने का एक तरीका यह है कि क्या कोई पल में सांस्कृतिक युगचेतना का लाभ उठाने में सक्षम है। आपको सोशल मीडिया, लोगों, उद्योग से यह प्रतिक्रिया बहुत जल्दी मिल जाती है, क्या शो वाटर कूलर वार्तालाप बन गया है या नहीं? यह एक उपाय है। इसका पता लगाने का दूसरा तरीका स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म द्वारा प्रदान की जाने वाली सूचना है। उन्होंने अब अधिक जानकारी साझा करना शुरू कर दिया है कि क्या इसने उनके लिए काम किया है, और उनके मेट्रिक्स क्या हैं। हर प्लेटफॉर्म का अपना एक अलग प्लेटफॉर्म होता है। वे फिल्म निर्माताओं के साथ बहुत अधिक पारदर्शी हो गए हैं, चाहे शो उनके लिए काम किया हो या नहीं।

प्रोडक्शन हाउस, प्रोजेक्ट से जुड़ी प्रतिभाओं आदि के आधार पर (लाभ) मार्जिन की एक सीमा होती है। उन्होंने इस बारे में आगे बात करते हुए कहा कि, यह अभी भी एक मॉडल है जो कमीशन के आधार पर है, इसलिए प्रोडक्शन हाउस आईपी का मालिक नहीं होता है, इसका स्वामित्व प्लेटफ़ॉर्म के पास होता है, जब तक कि आप इसे स्वयं नहीं बना रहे हों और इसे सिंडिकेट नहीं कर रहे हों, जो कि बहुत प्रचलित नहीं है।

काम के मोर्चे पर, रॉय कपूर फिल्म्स के पास एक पैक लाइन अप है, जिसमें शाहिद कपूर अभिनीत देवा, मटका किंग और विलियम डेलरिम्पल की द अनार्की का रूपांतरण शामिल है, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के उदय के बारे में है।

आश्रम फेम ईशा गुप्ता ने मैड्रिड में खोला फाइन-डाइनिंग रेस्तरां

हिट स्ट्रीमिंग सीरीज आश्रम के तीसरे सीजन में आखिरी बार नजर आईं ईशा गुप्ता ने मैड्रिड में अपना फाइन-डाइनिंग रेस्तरां कासा सेल्सास लॉन्च किया। रेस्तरां मेडिटरेनियन फ्लेवर और वर्ल्ड कुजीन जैसी सर्विस का वादा करता है। अपने नए उद्यम के बारे में बात करते हुए, ईशा ने कहा, मैड्रिड जैसे ग्लोबल हॉटस्पॉट में बढ़िया डाइनिंग रेस्तरां लॉन्च करना एक सपने के सच होने जैसा है। मैं हमेशा से कुछ ऐसा ही करना चाहती थी। यह मुझे हॉस्पिटैलिटी के प्रति प्यार को अपने क्रिएटिव विजन के साथ मिलाने की अनुमति देता है। रेस्तरां मई में खुलने वाला है। एक्ट्रेस ने कहा कि वह एक इंटरनेशनल मैनेजमेंट कंपनी, माबेल हॉस्पिटैलिटी के साथ साझेदारी कर रही हैं, जो माबेल कैपिटल की एक शाखा है, जिसके मालिकों में से एक टेनिस स्टार रफाल नडाल हैं। माबेल हॉस्पिटैलिटी मैड्रिड में दो अन्य रेस्तरां टैटेल और टोटो संचालित करती है। ईशा ने कहा, मेरा सपना कासा सेल्सास को पूरी दुनिया में ले जाना है, जैसा कि उन्होंने टैटेल और टोटो के साथ किया है, और मुझे उम्मीद है कि मैं इसे जल्द ही भारत में लाऊंगी।

सेंसेक्स
22648.20 पर बंद
निफ्टी
74611.11 पर बंद

सोना
73,726
चांदी
82,184

हर शेयर पर मुनाफा बांट रही अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक

नई दिल्ली, एजेंसी। गौतम अडानी समूह की कंपनी-अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड (एपीएसईजेड) का जनवरी-मार्च तिमाही में नेट प्रॉफिट 76.87 प्रतिशत बढ़ गया है। इस तिमाही में प्रॉफिट 2,014.77 करोड़ रुपये रहा। कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष की इसी अवधि में 1,139.07 करोड़ रुपये का लाभ कमाया था।

अडानी पोर्ट्स ने बीएसई को दी सूचना में बताया कि इस लॉजिस्टिक्स कंपनी की वित्त वर्ष 2023-24 की चौथी तिमाही में कुल आय बढ़कर 7,199.94 करोड़ रुपये हो गई, जो एक साल पहले समान अवधि में 6,178.35 करोड़ रुपये थी। इस तिमाही में कुल खर्च बढ़कर 4,450.52 करोड़ रुपये हो गया, जो एक वर्ष पूर्व इसी तिमाही में 3,995 करोड़ रुपये था।

डिविडेंड का ऐलान- अडानी पोर्ट्स के बोर्ड ने वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 6 रुपये (300 प्रतिशत) डिविडेंड का ऐलान किया है। यह डिविडेंड प्रस्ताव आगामी एजीएम में शेयरधारक के अनुमोदन के

अधीन है। बता दें कि अडानी पोर्ट्स के शेयर की कीमत 1349 रुपये से ज्यादा है। यह एक दिन पहले के मुकाबले 1.30 प्रतिशत से अधिक बढ़ गया। अप्रैल 2024 में इस शेयर की कीमत 1,425 रुपये थी। यह शेयर के 52 हफ्ते का हाई है।

3.62 करोड़ मीट्रिक टन माल की ढुलाई- अडानी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकोनॉमिक जोन लिमिटेड (एपीएसईजेड) ने अप्रैल में 3.62 करोड़ मीट्रिक टन (एमएमटी) माल ढुलाई की। यह पिछले साल की समान अवधि की तुलना में 12 प्रतिशत अधिक है। एपीएसईजेड ने कहा कि अधिकांश घरेलू बंदरगाहों पर वृद्धि दर्ज की गई, जिसमें धामरा बंदरगाह ने 43.8 लाख मीट्रिक टन अभी तक की सर्वाधिक मासिक माल ढुलाई की गई। उद्योगपति गौतम अडानी की कंपनी ने कहा कि लॉजिस्टिक्स सेग्मेंट में वृद्धि जारी रही। रेल क्षेत्र सालाना आधार पर पांच प्रतिशत वृद्धि के साथ 49,430 टीईयू और जीपीडब्ल्यूआईएस 26 प्रतिशत बढ़कर 1.8 एमएमटी रहा। बता दें कि अडानी समूह का एक हिस्सा एपीएसईजेड भारत में सबसे बड़ा बंदरगाह डेवलपर व ऑपरेटर है।

संक्षिप्त समाचार

एयरबीएनबी ने लॉन्च किया आइकॉन्स

बॉलीवुड स्टार जाह्नवी कपूर ने चेन्नई में अपने शानदार घर का दरवाजा मेहमानों के लिए खोला

मुंबई, एजेंसी। एयरबीएनबी लोगों के लिए नए तरह का अनुभव आइकॉन्स पेश कर रहा है इसके तहत दुनिया के मशहूर संगीतकार, फिल्म व टेलीविजन कलाकार और खिलाड़ी आदि मेहमानों का अलग अंदाज में स्वागत करेंगे। आइकॉन्स आपको एक ऐसी दुनिया में ले जाएंगे, जिसके बारे में अबतक आप केवल सोचा करते थे। आप चाहें फेरारी संग्रहालय में

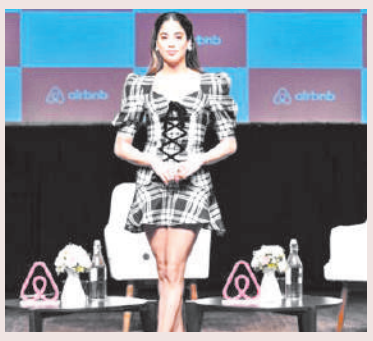

सोएं या प्रिंस के पर्पल रेन हाउस में रहें या फिर बॉलीवुड आइकॉन जाह्नवी कपूर के समुद्र तट के समीप वाले घर में एक दिन बिताएं। आज, हम पूरे साल दुनिया भर में शानदार अनुभवों के साथ, एयरबीएनबी पर पहले 11 आइकॉन्स को पेश कर रहे हैं।

एयरबीएनबी के भारत, दक्षिण पूर्व एशिया, हांगकांग और ताइवान के जनरल मैनेजर अमनप्रीत बजाज ने कहा आइकॉन्स' ऐसे अनुभवों को जीवंत करते हैं जो जादुई और वास्तव में कल्पना से परे होते हैं आइकॉन्स लॉन्च के हिस्से के रूप में हम इस विशेष अभियान के लिए जाह्नवी कपूर के साथ साझेदारी करके रोमांचित हैं, जो जाह्नवी के समुद्र तट के समीप वाले घर की एक अभूतपूर्व झलक पेश करेगा। जाह्नवी कपूर ने इस मौके पर कहा मेरे सबसे प्यारी यादें चेन्नई स्थित हमारे घर में परिवार के साथ बिताई गर्मियों की हैं। यह जगह हमेशा एक आरामदायक जगह की तरह महसूस होती है, और मैं इस खास एहसास को अपने प्रशंसकों के साथ साझा करना चाहती हूं, यही वजह है कि मैं पहली बार एयरबीएनबी के जरिए अपने घर के दरवाजे खोल रही हूं।

300 रुपये के पार पहुंचे भेल के शेयर, रेलवे सिग्नलिंग बिजनेस के लिए हुई बड़ी डील

नई दिल्ली, एजेंसी। महार प्रतिशत कंपनी भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) के शेयरों में गुरुवार को जबरदस्त तेजी आई है। भेल के शेयर गुरुवार को 6 पर्सेंट से अधिक की तेजी के साथ 300.20 रुपये पर पहुंच गए हैं। इसके साथ ही, भेल के शेयरों ने 52 हफ्ते का अपना नया हाई बनाया है। महार प्रतिशत कंपनी के शेयरों में यह

तेजी एक बड़ी डील के बाद आई है। भेल ने रेलवे सिग्नलिंग बिजनेस के लिए एचआइएमए मिडिल ईस्ट एफजेडई, दुबई के साथ स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप एग्रीमेंट किया है। भेल के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 77.30 रुपये है। एचआइएमए मिडिल ईस्ट एफजेडई रेलवे और प्रोसेस इंडस्ट्रीज में सेफ्टी से जुड़े ऑटोमेशन के लिए सॉल्यूशंस उपलब्ध कराती है। वहीं, भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड (भेल) भारतीय रेलवे को लोकोमोटिव्स के लिए इलेक्ट्रिक्स, ट्रैक्शन मोटर्स, ट्रैक्शन अल्टरनेटर्स और ट्रैक्शन ट्रांसफॉर्मर्स की सप्लाई कर रही है।

जेवर बनवाना हुआ महंगा, फिर चढ़ें सोने-चांदी के भाव

नई दिल्ली, एजेंसी। सोने-चांदी के कीमतों में गिरावट आने के बाद गुरुवार को फिर से इनके दाम में बढ़ोतरी देखी गई है। भारतीय वायदा बाजार में सोने-चांदी में उछाल आया है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज पर सोना 71,120 पर खुला था। सुबह 10:20 के आसपास इसमें लगभग 400 रुपए की तेजी दिखाई दे रही थी और मेटल 71,118 रुपए पर ट्रेड कर रहा था। पिछली क्लोजिंग 70,725 पर हुई थी। चांदी 175 रुपए की तेजी के साथ 80,045 रुपए प्रति किलोग्राम पर है। मंगलवार को सिल्वर 79,870 पर बंद हुआ।

क्यों उछले सोना-चांदी के दाम- अमेरिकी ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। फेडरल रिजर्व बैंक के मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी ने अपनी बैठक में लगातार सातवीं बार ब्याज दरों को स्थिर रखा है। हालांकि, फेड ने अब साल के आखिर में एक रेट कट की संभावना जताई है। इस बीच अंतरराष्ट्रीय बाजारों में गोल्ड में

लगातार दूसरे दिन तेजी दर्ज की गई है। यूएस स्पॉट गोल्ड 0.3 प्रतिशत चढ़कर 2325 डॉलर प्रति औंस पर चल रहा था। पिछले सत्र में ये सीधा 1 पर्सेंट ऊपर चढ़ा था। यूएस गोल्ड फ्यूचर भी 1 पर्सेंट चढ़कर 2,334 डॉलर प्रति औंस पर चल रहा था।

हालांकि, गोल्ड में इस तेजी के पीछे फेड की ओर से अभी भी एक रेट कट में कटौती की संभावनाओं को माना जा रहा है। कम ब्याज दरों में बुलियन की कीमतें ऊपर जाती हैं। इससे गोल्ड को लेकर सेंटीमेंट में सुधार दिख रहा है।

सर्राफा बाजार में सोने-चांदी के भाव- अगर दिल्ली सर्राफा बाजार की बात करें तो मंगलवार को मेटल्स में गिरावट दर्ज की गई थी। राजधानी के सर्राफा बाजार में सोना 150 रुपए की गिरावट के साथ 72,600 रुपए प्रति 10 ग्राम पर था। चांदी की कीमत भी 750 रुपए लुढ़ककर 83,750 रुपए प्रति किलो रह गई थी।

वेटर की कमाई के आगे दुनिया का बड़े से बड़ा अरबपति भी फेल

नई दिल्ली, एजेंसी। कभी वेटर रहे एक शख्स की इस चार महीने की कमाई के आगे दुनिया के बड़े से बड़ा अरबपति भी पिछड़ गयाा है। चाहे एलन मस्क हों या मार्क जुकरबर्ग या फिर दुनिया के सबसे अमीर बर्नार्ड अर्नाल्ट ही क्यों न हों, जेनसेन हुआंग से पिछड़ गए हैं। ब्लूमबर्ग बिलेनियर इंडेक्स के मुताबिक जेनसेन हुआंग इस साल कमाई में मार्क जुकरबर्ग को पछाड़ नंबर वन बन गए हैं।

जेनसेन हुआंग ने इस साल अबतक अपनी संपत्ति में 29.2 अरब डॉलर जोड़ने में कामयाब रहे। उनका कुल नेटवर्थ भले ही जुकरबर्ग के नेटवर्थ से काफी कम है, लेकिन इस साल इन्होंने कमाई में सभी को पीछे छोड़ दिया है। जेनसेन हुआंग 73.2 अरब डॉलर के नेटवर्थ के साथ दुनिया के अमीरों की लिस्ट में 20वें स्थान पर हैं। जुकरबर्ग इस मामले में दुनिया में दूसरे नंबर पर हैं। इन्होंने इस साल अबतक 28.3 अरब डॉलर की कमाई की है। इनका कुल नेटवर्थ 156 अरब डॉलर है। तीसरे नंबर पर अमेजन के पूर्व सीईओ जेफ बेजोस हैं। इनकी इस साल की कमाई 24.3 अरब डॉलर है। इनके पास 201 अरब डॉलर की संपत्ति है। एलन मस्क ने इस साल 37.5 अरब डॉलर गंवाया है। मस्क की कुल संपत्ति 191 अरब डॉलर रह गई है।

कभी वेटर थे हुआंग

हुआंग कंप्यूटर प्रोसेसर और एआई टेक्नॉलजी की अग्रणी कंपनी एनवीडिया के चेयरमैन हैं। हुआंग ने 1993 में कंपनी की सह-स्थापना की और 1999 में पहली ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट पेश की। हुआंग ने कभी वेटर का भी काम किया लेकिन, आज इनकी गिनती दुनिया के सबसे अमीर लोगों में होती है।

किस देश के मूल निवासी हैं हुआंग

1963 में ताइवान के ताइनान में जन्मे हुआंग का परिवार पहली बार थाईलैंड में रिलोकेट हुआ जब वह पांच साल के थे। नौ साल के थे तो दोनों भाई चाचा के साथ रहने के लिए टैकोमा, वाशिंगटन चले गए। अलोहा हाई स्कूल से ग्रैजुएशन किया।

सीट में थी खराबी; विमान में भारतीय दंपती को रातभर जागना पड़ा, अब सिंगापुर एयरलाइन देगा हर्जाना

नई दिल्ली, एजेंसी। सिंगापुर एयरलाइंस को बिजनेस क्लास में ऑटोमैटिक रिक्लाइनर सीटों में खराबी के कारण एक भारतीय दंपती को 2 लाख रुपये से अधिक का मुआवजा देने का आदेश दिया गया है। तेलंगाना के पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) रवि गुप्ता और उनकी प प्रतिशती ने एयरलाइन के खिलाफ मुकदमा दायर किया था। न्यूयॉर्क पोस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार, बिजनेस क्लास की सीटों के लिए 66,750 रुपये का भुगतान करने के बावजूद, उन्हें स्वचालित रिक्लाइन सुविधा से लैस सीटों को मैन्युअल रूप से एडजस्ट करने के लिए कहा था।

23 मई, 2023 को गुप्ता और उनकी प प्रतिशती हैदराबाद से सिंगापुर होते हुए ऑस्ट्रेलिया जा रहे थे। दंपती द्वारा दायर शिकायत के अनुसार, एयरलाइन के बिजनेस क्लास में रिक्लाइनर सीटें ठीक नहीं हुईं और एयरलाइन ने उन्हें सीटों को मैन्युअल रूप से एडजस्ट करने के लिए कहा।

अपने टिकटों के लिए पर्याप्त राशि का भुगतान करने के बावजूद अपने उड़ान अनुभव पर असंतोष व्यक्त करते हुए, गुप्ता ने कंपनी से इसकी शिकायत की तो उन्हें मुआवजे के रूप में 10,000 फ्रीक्वेंट फ्लायर मील या लॉयल्टी पॉइंट की पेशकश की गई। हालांकि, दंपति ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और कानूनी कार्रवाई करने का विकल्प चुना।

अब तेलंगाना में जिला उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग ने भारतीय दंपति के पक्ष में फैसला सुनाया और सिंगापुर एयरलाइंस को उन्हें (दंपती को) कथित मानसिक पीड़ा के एवज में 2,13,585 रुपये का मुआवजा देने का आदेश दिया।

अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने नीतिगत ब्याज दरों में एक बार फिर नहीं किया बदलाव, जुलाई 2023 से है अपरिवर्तित

नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिका से आर्थिक जगत के लिए एक महत्वपूर्ण खबर आई है। अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व ने एक बार फिर प्रमुख ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया है। ब्याज दरों को 5.25 प्रतिशत से 5.50 प्रतिशत पर स्थिर रखा गया है। बाजार के जानकारों के अनुसार कारोबार के लिहाज से यह बहुत उत्साह बढ़ाने वाली खबर नहीं है। भारतीय समयानुसार बुधवार की मध्यरात्रि (12 बजे) यूएस फेड ने ब्याज दरों पर अपना फैसला सुनाया। इसके साथ ही यूएस फेड ने ट्रेजरी रिडेम्पशन कैप में भी कटौती की है।

बुधवार का फेडरल रिजर्व का निर्णय निवेशकों के लिए काफी उबाऊ रहा। अधिकारियों ने ब्याज दरों को वही रखा, जैसा जुलाई 2023 में रखा गया था। हालांकि कुछ जानकार कारोबारी फेड के एक अन्य महत्वपूर्ण निर्णय को लेकर उत्साहित हैं। फेड ने घोषणा की कि वह जून में शुरुआत करते हुए अपने मात्रात्मक कसावट कार्यक्रम को

महत्वपूर्ण रूप से कम करेगा।

अमेरिका के केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की दो दिन की फेडरल ओपन मार्केट कमेटी बैठक बुधवार देर रात खत्म हो गई। बाजार में पहले से ही अनुमान जताया जा रहा था कि यूएस फेड बेंचमार्क ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं करेगा और इन्हें लगातार छठी बैठक में भी 5.25 फीसदी से 5.50 फीसदी पर बनाए रखेगा। अमेरिकी शेयर बाजार यानी वॉल स्ट्रीट ने भी यही अनुमान जताया था।

भारतीय मसालों की गुणवत्ता पर उठे सवाल, निर्यात पर बड़ा खतरा !

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत के मसाले दुनियाभर में खाए और बेचे जाते हैं लेकिन जिस तरह के क्वालिटी से संबंधित मामले कई देशों से निकलकर सामने आए हैं, उससे देश के मसाला कारोबार को बड़े संकट में डाल दिया है। दुनिया भर के कई देशों में भारत से आने वाले मसालों पर गुणवत्ता को लेकर कार्रवाई की गई है। ये देश घरेलू मसाला बाजारों के लिए अहम बाजार हैं। आंकड़ों के अनुसार फिलहाल जिन देशों में मसालों को लेकर सवाल खड़े हुए हैं वहां भारत से 70 करोड़ डॉलर (करीब 6 हजार करोड़ रुपए) के मसालों का निर्यात किया जाता है। थिंक टैंक ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनीशिएटिव की रिपोर्ट के मुताबिक अगर कुछ और देश भारत में उत्पन्न होने वाले मसालों पर सवाल

खड़े करते हैं तो आधा एक्सपोर्ट कारोबार जोखिम में आ सकता है।

क्या है मामला- हॉन्गकॉन्ग की फूड रेग्युलेटरी अथॉरिटी सेंटर फॉर फूड सेफ्टी ने 5 अप्रैल को एक रिपोर्ट जारी की थी जानकारी दी गई कि एमडीएच के तीन उत्पाद मद्रास करी पाउडर, सांभर मसाला और करी पाउडर में कीटनाशक एथलीन ऑक्साइड की मात्रा तय सीमा से ज्यादा मिली है। इसके साथ ही एवरेस्ट के फिश करी मसाले में भी कीटनाशक की मात्रा मिली है। वेंडर्स को अथॉरिटी ने निर्देश दिए हैं कि इन उत्पादों को अपने काउंटर से हटा लें और इनकी बिक्री को रोक दिया जाए। लंबी समय तक एथलीन ऑक्साइड के इस्तेमाल से गंभीर रोग होने की आशंका होती है।

इस कदम के बाद अमेरिका, सिंगापुर, ऑस्ट्रेलिया और माले ने भी एमडीएच और एवरेस्ट के मसालों की गुणवत्ता पर सवाल खड़े किए हैं। वित्त वर्ष 2024 में भारत ने इन देशों में 69.2 करोड़ डॉलर मूल्य के मसालों का निर्यात किया था। सवाल खड़े करने के बाद इस पूरे कारोबार पर असर पड़ने की आशंका बन गई है।

बढ़ सकता है असर

निजी ट्रेड रिसर्च थिंकटैंक ने चेतावनी जारी की है कि अगर इन देशो में चीन भी शामिल हो जाता है तो भारत से एक्सपोर्ट होने वाले कुल मसाले का 51 फीसदी कारोबार सवालों के दायरे में आ जाएगा जो कि 2.17 अरब डॉलर के बराबर है। वहीं अगर यूरोपियन यूनियन क्वालिटी को लेकर कोई सवाल खड़े करता है तो 2.5 अरब डॉलर का कारोबार सवालों के दायरे में आ जाएगा। एमडीएच और एवरेस्ट, अमेरिका, यूरोप, मिडिल ईस्ट और यूके में अपने मसाले भेजते हैं। जीटीआरआई ने कहा है कि फिलहाल जरूरत है कि अथॉरिटी तेजी के साथ एक्शन लें और ग्लोबल मार्केट में अपना भरोसा वापस पाने की कोशिश करें। जीटीआरआई ने चेतावनी दी है कि अगर देश के कुछ बड़े ब्रांड पर सवाल खड़े होते हैं तो इसके साथ ही देश के पूरे मसाला उद्योग को लेकर भी सवाल खड़े किए जाएंगे।

वेदांता की भारत में 4 साल में 20 अरब डॉलर निवेश करने की योजना, बोले अनिल अग्रवाल

नई दिल्ली, एजेंसी। वेदांता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल ने बुधवार को कहा कि समूह ने अगले चार साल में भारत में अपने सभी कारोबारों में 20 अरब डॉलर के निवेश का लक्ष्य रखा है। अग्रवाल ने कंपनी के एक कार्यक्रम के दौरान कहा कि समूह अपने इस्पात कारोबार को केवल सही कीमत पर बेचेगा और सही कीमत नहीं मिलने पर वह इसे चलाना जारी रखेगा।

अग्रवाल ने कहा, फिलहाल हमारी योजना चार साल में विभिन्न क्षेत्रों में 20 अरब डॉलर निवेश करने की है। उन्होंने कहा कि यह निवेश प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रॉनिक्स और ग्लास व्यवसायों के अलावा ऐसे अन्य गतिविधियों पर केंद्रित होगा जिसमें समूह शामिल है। उन्होंने कहा कि स्मार्टफोन और लैपटॉप स्क्रीन बनाने में उपयोग किए जाने वाले सेमी-कंडक्टर और ग्लास भविष्य के दृष्टिकोण से बहुत आवश्यक हैं, उन्होंने कहा कि समूह पहले से ही दोनों व्यवसायों में मौजूद है। कंपनी के पास सेमीकंडक्टर संयंत्र के लिए गुजरात में जमीन है और वह एक विश्वसनीय और मजबूत साझेदार की तलाश कर रही है।

कंपनी के कर्ज की स्थिति को लेकर चिंताओं के बीच अग्रवाल ने कहा कि कंपनी का कुल कर्ज फिलहाल केवल 12 अरब डॉलर है और ऐसा लगता है कि इसका प्रबंधन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि समूह ने कोई भी ऋण चुकाने में कभी चूक नहीं की है।

पीसीबी ने ड्रॉफ्ट शेड्यूल में भारत के सभी मैच लाहौर में रखे

लाहौर, एजेंसी। 2025 चैंपियंस ट्रॉफ़ी के लिए पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) जो शेड्यूल तैयार कर रही है उसमें भारत को पूरे टूर्नामेंट के लिए एक ही शहर में रोका जा सकता है। पीसीबी वह हरसंभव प्रयास कर रही है, जिससे 17 साल में पहली बार भारतीय टीम का पाकिस्तान दौरा संभव हो सके। दो सप्ताह के टूर्नामेंट का आयोजन करने के लिए पीसीबी कराची, लाहौर और रावलपिंडी पर विचार कर रही है। ईएसपीएनक्रिकइंफो समझता है कि भारत के सभी मैच लाहौर में सकते हैं क्योंकि यहीं पर फ़ाइनल भी खेला जाना है।

भारत को एक ही शहर में रोकने से सुरक्षा संबंधी चिंता को कम किया जा सकता है। लाहौर में होने से वाघा बॉर्डर भी पास पड़ेगा, जिससे कि भारतीय फ़ैंस के लिए भी वहां जाना आसान होगा। पीसीबी चेयरमैन मोहसिन नक़वी ने इस सप्ताह की शुरुआत में कहा था कि उन्होंने एक ड्राफ़्ट बनाकर आईसीसी को भेज दिया है। ड्राफ़्ट पर पर चर्चा होनी बाक़ी है और सबसे अहम मुद्दा यही होगा कि क्या भारतीय टीम पाकिस्तान दौरे पर जाएगी या नहीं।

2008 में हुए एशिया कप के बाद से भारतीय टीम ने पाकिस्तान में नहीं खेला है। उसी साल हुए मुंबई हमले के बाद से दोनों देशों के बीच संबंध लगातार ख़राब ही होते रहे हैं। पिछले साल जब पाकिस्तान ने एशिया कप की मेज़बानी की थी, तो उन्हें मजबूरी में हाइब्रिड मॉडल अपनाना पड़ा था। भारत ने अपने सभी मैच श्रीलंका में खेले थे और इसमें पाकिस्तान के ख़िलाफ़ हुआ मैच भी शामिल था। पिछले साल भारत में खेले गए वनडे विश्व कप में अपने लिए पाकिस्तान ने भी हाइब्रिड मॉडल की मांग की थी, लेकिन इस पर कभी गंभीर चर्चा हुई ही नहीं। पांच अलग-अलग मैदानों में पाकिस्तान ने अपने मैच खेले थे और रूप चरण से बाहर हुए थे। चैंपियंस ट्रॉफ़ी के लिए भारतीय टीम पाकिस्तान जाएगी या नहीं, इसका फैसला बीसीसीआई की बजाय भारत सरकार के हाथों में है।

मंगलवार की शाम को कराची में नक़वी ने उम्मीद जताई है कि इस टूर्नामेंट के लिए सभी आठ टीमें पाकिस्तान आएंगी। 1996 विश्व कप में भारत और श्रीलंका के साथ संयुक्त मेज़बानी करने के बाद यह पहला आईसीसी इवेंट होगा, जिसकी पाकिस्तान मेज़बानी करता नजर आएगा। 2008 में ही पाकिस्तान इसे होस्ट करने वाला था, लेकिन टूर्नामेंट स्थगित कर दिया गया था और फिर इसे सुरक्षा कारणों से साउथ अफ़्रीका स्थानांतरित कर दिया गया था।

साद बिन जफर पहली बार कनाडा की टी20 विश्व कप टीम की कप्तानी करेंगे

ओंटारियो, एजेंसी । कनाडा ने वेस्टइंडीज और यूएसए में 1 जून से शुरू होने वाले आईसीसी टी20 विश्व कप के लिए 15 सदस्यीय टीम की घोषणा की है,

जिसमें ऑलराउंडर साद बिन जफर को कप्तान बनाया गया है। जफर पहली बार टी20 विश्व कप में कनाडा की कप्तानी करेंगे। टीम को पूर्व श्रीलंकाई और कनाडाई अंतर्राष्ट्रीय पुबुदु दस्सानायके द्वारा प्रशिक्षित किया गया है, जिन्होंने 2022 में बागडोर संभाली थी।

कनाडा को ग्रुप ए में भारत, पाकिस्तान, आयरलैंड और अमेरिका के साथ रखा गया है। वे 1 जून को डलास में पड़ोसी देश अमेरिका के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करेंगे, इसके बाद उत्तरी अमेरिकी देश को 7 जून को आयरलैंड का सामना करना है। इसके बाद 11 जून को पाकिस्तान और 15 जून को भारत के खिलाफ उनका मुकाबला होगा।

टीम - साद बिन जफर (कप्तान), आरोन जॉनसन, डिलन हेलिगर, दिलप्रीत बाजवा, हर्ष ठाकेर, जेरेमी गॉर्डन, जुनैद सिद्दीकी, कलीम सना, कंवरपाल ताथगुर (विकेटकीपर), नवनीत धालीवाल, निकोलस किर्टन, परगट सिंह, रविंदरपाल सिंह, रेयानखान पठान, श्रेयस मोव्वा (विकेटकीपर)।

रिर्जव - तजिंदर सिंह, आदित्य वरदराजन, अम्मार खालिद, जतिंदर मथारू, परवीन कुमार।

पाकिस्तान ने आयरलैंड-इंग्लैंड टी20 सीरीज के लिए टीम का एलान किया, क्या यही खिलाड़ी खेलेंगे विश्व कप?

कराची, एजेंसी। आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए पाकिस्तानी चयनकर्ताओं ने लेग स्पिनर उसामा मीर को टीम से बाहर कर दिया। वहीं, हारिस

रऊफ की टी20 टीम में वापसी हुई है। पाकिस्तान के चयनकर्ताओं की टीम में पूर्व क्रिकेटर्स मोहम्मद यूसुफ, अब्दुल रज्जाक, वहाब रियाज शामिल हैं। पाकिस्तान ने आगामी टी20 विश्व कप के लिए टीम का एलान नहीं किया है, लेकिन गुरुवार को पीसीबी के चयनकर्ता ने आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ आगामी टी20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा कर दी है। आईसीसी ने सभी टीमों को अपने संभावित-15 बताने के लिए एक मई की तारीख दी थी। हालांकि, समय बीत जाने के बावजूद पाकिस्तान टीम सामने नहीं आई। ऐसा कहा जा रहा है कि पाकिस्तान ने आईसीसी को टीम भेज दी है, लेकिन उसे सार्वजनिक करने का फैसला नहीं लिया है। इसके उलट पाकिस्तान के चयनकर्ताओं ने आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा की। ऐसा माना जा रहा है कि यही टीम टी20 विश्व कप में भी खेलती दिखाई पड़ेगी। 25 मई के बाद कोई भी टीम आईसीसी की इजाजत के बिना अपने 15 में बदलाव नहीं कर सकेगी।

हारिस रऊफ की पाकिस्तान टीम में वापसी

आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए पाकिस्तानी चयनकर्ताओं ने लेग स्पिनर उसामा मीर को टीम से बाहर कर दिया। वहीं, हारिस रऊफ की टी20 टीम में वापसी हुई है। पाकिस्तान के चयनकर्ताओं की टीम में मोहम्मद यूसुफ, अब्दुल रज्जाक, वहाब रियाज शामिल हैं। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की विश्व कप टीम आयरलैंड और इंग्लैंड के खिलाफ सीरीज में खिलाड़ियों के प्रदर्शन के बाद तय की जाएगी। पाकिस्तान और आयरलैंड के बीच तीन मैचों की टी20 सीरीज की शुरुआत 10 मई से होने जा रही है।

मार्श ने फ्रेजर-मैकगर्क को टी20 विश्व कप टीम में नहीं चुने जाने पर कहा, हमने सभी आधारों को कवर कर लिया है

नई दिल्ली, एजेंसी। नवनियुक्त टी20 कप्तान मिशेल मार्श ने जेक फ्रेजर-मैकगर्क को 15 सदस्यीय टी20 विश्व कप टीम से बाहर करने का कारण स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की टीम में ÷सभी आधार शामिल हैं, और मौजूदा सलामी बल्लेबाज; ट्रैविस हेड और डेविड वार्नर ने पिछले 18 महीनों में असाधारण रूप से अच्छा प्रदर्शन किया है, जिससे वे मेगा इवेंट के लिए पसंदीदा विकल्प बन गए हैं।

2021 टी20 विश्व कप चैंपियन ने बुधवार को 20 ओवर के प्रदर्शन के लिए अपनी टीम का अनावरण किया, और 15 खिलाड़ियों के समूह से फ्रेजर-मैकगर्क और पूर्व कप्तान स्टीव स्मिथ की अनुपस्थिति सबसे बड़े आश्चर्य में से एक थी। फ्रेजर-मैकगर्क मौजूदा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में दिल्ली कैपिटल्स के लिए शानदार फॉर्म में हैं और अब तक तीन अर्धशतक बना चुके हैं। कई लोगों का मानना है कि दाएं हाथ के खिलाड़ी ने 1 जून से शुरू होने वाले कैरेबियन और यूएसए में टी20 विश्व कप के लिए चुने जाने के लिए अपनी क्षमताओं का पर्याप्त प्रदर्शन किया है। मार्श ने ऑस्ट्रेलियाई रेडियो स्टेशन पर कहा, जेकी एक उत्कृष्ट प्रतिभा है। मुझे लगता है कि आप जानते हैं कि वह आईपीएल में जिस तरह से खेल रहा है, उसने तहलका मचा दिया है, वे सभी उससे प्यार करते हैं और निश्चित रूप से, दिल्ली टीम उसकी कंपनी का आनंद ले रही है और वह

टीम में जो कुछ भी लाता है उसका आनंद ले रही है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह जहां भी खेलेगा, उसका भविष्य बहुत बड़ा होगा।

फ्रेजर-मैकगर्क ने अब तक आईपीएल 2024 में 259 रन बनाए हैं, जिसमें 22 वर्षीय खिलाड़ी ने डीसी के लिए छह पारियों में से 23 मौकों पर बॉउंड्री को पार किया है और इस आयोजन में सबसे ज्यादा रन बनाने के मामले में छठे स्थान पर हैं।

लेकिन हमें लगता है कि हमने अपनी टीम के सभी आधारों को कवर कर लिया है। हेडी और डेविड वार्नर न केवल लंबे समय तक बल्कि इस (टी20) विश्व कप की तैयारी में पिछले 18 महीनों में हमारे लिए शानदार रहे हैं। हम वास्तव में सहज हैं कि हमें उम्मीद है कि हमें (टी20) विश्व कप में आगे ले जाने के लिए सही 15 खिलाड़ी मिल गए हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या उन्हें उम्मीद है कि फ्रेजर-मैकगर्क विश्व कप के तुरंत बाद ऑस्ट्रेलिया की सफेद गेंद वाली टीम के लिए जोर देंगे, मार्श ने कहा, ओह, हाँ, इसमें कोई संदेह नहीं है। वह बहुत तेजी से सामने आया है। इसमें बड़ी मात्रा में प्रतिभा है जिसे कम उम्र से ही पहचान लिया गया है। हमने इस साल बिग बैश में इसकी झलक देखी और आप जानते हैं कि आईपीएल एक कठिन टूर्नामेंट है। उन्होंने कहा, आप एक कदम पीछे नहीं हट सकते और वह निश्चित रूप से इसी तरह अपना क्रिकेट खेलते हैं। उनका भविष्य रोमांचक है।

रिंकू के परिवार का सपना टूटा

पिता बोले- हम मिठाई-पटाखे लेकर आए थे, बेटे ने बताया उसका सिलेक्शन नहीं हुआ

नई दिल्ली, एजेंसी। बीसीसीआई के सिलेक्टर्स ने मंगलवार को टी-20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम की घोषणा की। उत्तर प्रदेश के बल्लेबाज रिंकू सिंह सिलेक्शन के मजबूत दावेदार थे लेकिन उनको जगह नहीं मिली। इससे रिंकू के परिवार वाले बहुत निराश हैं। उनके पिता खानचंद्र सिंह ने मीडिया से बातचीत करते हुए कहा- हम मिठाई और पटाखे लेकर आए थे। हमें पूरी उम्मीद थी कि बेटा वर्ल्ड कप खेलेगा। लेकिन, ऐसा हुआ नहीं। मिठाई-पटाखे रखे रह गए। रिंकू को 15 मेंबर्स वाली भारतीय टीम में जगह नहीं मिली है। वे रिजर्व प्लेयर शामिल किया गए है। यानी मुख्य स्क्वॉड का कोई खिलाड़ी अगर खिलाड़ी चोटिल होता है तो रिंकू को जगह मिल सकती है।

रिंकू ने मां को फोन कर कहा- मैं सिलेक्ट नहीं हुआ

खानचंद्र ने कहा, उम्मीदें तो बहुत थी और इसलिए थोड़ा दुख भी है। हम जश्न मना रहे थे, क्योंकि हमने सोचा था कि रिंकू टी-20 वर्ल्ड कप के लिए भारतीय टीम में होगा। उसका दिल तो टूटा है। उसने अपनी मां से बात की और बताया कि उसका नाम 11 या 15 में नहीं है। यह भी बताया कि वो रिजर्व के तौर पर वेस्टइंडीज-अमेरिका जा रहा है।

आईपीएल 2024 के शेष लीग मैचों से बाहर हो सकते हैं मयंक

लखनऊ, एजेंसी। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) के तेज गेंदबाज मयंक यादव, जिन्हें मंगलवार को मुंबई इंडियंस (एमआई) के खिलाफ मैच के दौरान पेट में दर्द के कारण मैदान से बाहर जाना पड़ा, के आईपीएल 2024 के शेष लीग मैचों से बाहर होने की संभावना है।

मयंक को मुंबई इंडियंस के खिलाफ मैच के दौरान चोट लगी थी जिससे उनके आगे मैच खेलने पर संशय पैदा हो गया है। मयंक पिछले चार सप्ताह में दूसरी बार चोटिल हुए हैं। सूत्रों ने बताया, मंयक यादव के पूरी तरह ठीक होने में पहले की अपेक्षा अधिक समय लगेगा। वह बुरी स्थिति में नहीं हैं, लेकिन शेष मैचों में उनकी भागीदारी संदेह में है। बुधवार को उनका स्कैन किया गया है लेकिन रिपोर्ट आनी बाकी है। मेडिकल टीम ने मयंक यादव को कम से कम तीन सप्ताह के आराम का सुझाव दिया है।एलएसजी के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने स्टार तेज गेंदबाज मयंक यादव की चोट पर अपडेट देते हुए कहा है कि परफेक्ट रिहैबिलिटेशन से गुजरने के बावजूद, युवा खिलाड़ी को अभी भी थोड़ी परेशान है। कोच ने कहा, ऐसा लगता है कि उसे एक बार फिर उसी जगह पर दर्द है। उसका पुनर्वास बिल्कुल सही रहा है, उसने पिछले कुछ हफ्तों में दर्द रहित गेंदबाजी की है, वह अच्छी स्थिति में दिख रहा है। हालांकि, उसे फिर थोड़ी परेशानी हुई है जिस पर जांच के बाद ही कुछ कहा जा सकता है। हालांकि, सूत्रों ने दावा किया कि मयंक एमआई के खिलाफ मैच के लिए फिट नहीं थे, लेकिन तीन सप्ताह में पांच मैच मिस करने के बाद प्लेइंग-11 में लौट आए क्योंकि कप्तान केएल राहुल उन्हें अपनी टीम में शामिल करना चाहते थे।

आईपीएल- 2024

पंजाब किंग्स की टीम पहुंची धर्मशाला, गगल हवाई अड्डे पर हुआ जोरदार स्वागत

धर्मशाला, एजेंसी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम धर्मशाला में 5 मई को चेन्नई सुपर किंग्स के साथ होने वाले मैच के लिए पंजाब किंग्स की टीम गुरुवार दोपहर बाद गगल एयरपोर्ट पर पहुंची। पंजाब की टीम ने चेन्नई से विशेष विमान से गगल हवाई अड्डे पर लैंड किया । यहां पर एचपीसीए के पदाधिकारियों ने खिलाड़ियों का स्वागत किया। इस दौरान प्रशंसकों में खिलाड़ियों के साथ सेल्फी व फोटो खिंचवाने के लिए होड़ लगी रही। यहां से खिलाड़ी सीधे कंडी स्थित रेडीसन ब्लू होटल रवाना हुए। वहीं चेन्नई सुपर किंग्स की टीम शुक्रवार को धर्मशाला आएगी। धर्मशाला में पंजाब और चेन्नई के बीच रविवार को आईपीएल का मैच खेला जाएगा। चेन्नई की टीम शुक्रवार दोपहर डेढ़ बजे धर्मशाला पहुंचेगी। इसके अलावा छह 6 को आरसीबी की टीम एक बजे गगल हवाई अड्डे पर उतरेगी।

यह है पंजाब किंग्स की टीम

शिखर धवन (कप्तान), जितेश शर्मा (विकेटकीपर), जॉनी बेयरस्टो, रिले रोसौव, शशांक सिंह, आशुतोष शर्मा, हरप्रीत बराड़, हर्षल पटेल, कगिसो रबाडा, राहुल चाहर, अर्शदीप सिंह, प्रभसिमरन सिंह, ऋषि धवन, विधाथ कावेरप्पा, शिवम सिंह, प्रिंस चौधरी, विश्वनाथ सिंह, नाथन एलिस, अथर्व तायदे, तनय त्यागराजन, लियाम लिविंगस्टोन, सिकंदर रजा, क्रिस वोक्स, हरप्रीत सिंह भाटिया और सैम कुरेन।

चेन्नई सुपर किंग की टीम

रुतुराज गायकवाड़ (कप्तान), एमएस धोनी (विकेटकीपर), अजिंक्य रहाणे, डेरिल मिशेल, मोइन अली, शिवम दुबे, रवींद्र जाडेजा, दीपक चाहर, तुषार देशपांडे, मुस्तफिजुर रहमान, मथीशा पथिराना, समीर रिज़वी, शार्दुल ठाकुर, शेख रशीद, मिशेल सेंटनर, रचिन रवींद्र, अजय जादव मंडल, प्रशांत सोलंकी, मुकेश चौधरी, सिमरजीत सिंह, आरएस हैंगरगेकर, महेश थीक्षाना, निशांत सिंधु, अरवेल्ली अवनीश और रिचर्ड ग्लीसन।

उधर, धर्मशाला में पंजाब किंग्स और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच होने वाले मैच की टिकटों की ऑफलाइन बिक्री शुरू हो गई है। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम धर्मशाला में पंजाब किंग्स इलेवन और चेन्नई सुपर किंग के बीच होने वाले मैच की टिकटों की ऑफलाइन बिक्री गुरुवार से शुरू हो गई। इसके लिए पंजाब किंग्स इलेवन फ्रैंचाइजी की ओर से स्टेडियम के बाहर बॉक्स ऑफिस पर टिकटों की बिक्री की गई। यह काउंटर सुबह 11:00 बजे खुला। यहां पहले आओ पहले पाओ के आधार पर टिकटें दी गईं।

एफआईएच प्रो लीग

सविता की बजाय सलीमा टेटे को मिली महिला हॉकी टीम की कप्तानी

नई दिल्ली, एजेंसी। मिडफील्डर सलीमा टेटे को अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया की जगह इस महीने के आखिर में होने वाले एफआईएच प्रो लीग के बेल्जियम और इंग्लैंड चरण के लिये भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम का कप्तान चुना गया है। नवनीत कौर को उपकप्तान बनाया गया है। सलीमा ने हॉकी इंडिया द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा, 'मुझे खुशी है कि टीम की कप्तानी दी गई है। यह बड़ी जिम्मेदारी है और मैं इसे लेकर उत्साहित हूं। हमारे पास मजबूत टीम है जिसमें अनुभवी और युवा खिलाड़ी हैं। उन्होंने कहा, 'एफआईएच प्रो लीग के आगामी बेल्जियम और इंग्लैंड चरण में हम अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे। हमें अपनी कमजोरियों से पार पाना है। सविता ओलंपिक क्वालीफायर और उसके बाद प्रो लीग मैचों में भारत की कप्तान रही थी। बेल्जियम में मैच 22 से 26 मई तक और इंग्लैंड में एक से नौ जून तक होंगे। भारत का सामना पहले चरण में दो बार अर्जेंटीना और बेल्जियम से होगा। लंदन चरण में टीम ब्रिटेन और जर्मनी से खेलेगी। भारत इस समय प्रो लीग तालिका में छठे स्थान पर है। सलीमा को हाल ही में हॉकी इंडिया सालाना पुरस्कारों में बलबीर सिंह सीनियर वर्ष की सर्वश्रेष्ठ महिला खिलाड़ी का पुरस्कार मिला था।

भारतीय महिला टीम :

गोलकीपर-सविता, बिछू देवी खारीबाम

डिफेंडर- निक्की प्रधान, उदिता, इशिका चौधरी, मोनिका, ज्योति छत्री, महिमा चौधरी

मिडफील्डर- सलीमा टेटे (कप्तान), वैष्णवी विट्ठल फाल्के, नवनीत कौर, नेहा, ज्योति, बलजीत कौर, मनीषा चौहान, लालरेम्सियामी

फॉरवर्ड - ममताज खान, संगीता कुमारी, दीपिका, शर्मिला देवी, प्रीति दुबे, वंदना कटारिया, सुनेलिता टोप्पो, दीपिका सोरेंग

चार भारतीय मुक्केबाज सेमीफाइनल में पहुंचे, पदक पक्का

अस्ताना, एजेंसी। भारतीय युवा मुक्केबाज आर्यन, यशवर्धन सिंह, प्रियांशु और साहिल ने बुधवार को कजाकिस्तान के अस्ताना में एएसबीसी एशियन अंडर-22 और यूथ बॉक्सिंग चैंपियनशिप 2024 में आत्मविश्वास से भरी जीत के साथ सेमीफाइनल में प्रवेश किया और अपने लिए पदक पक्का कर लिया।

आर्यन ने 51 किग्रा वर्ग में उज्बेकिस्तान के जुराव शकरबॉय के खिलाफ 5-0 के सर्वसम्मत निर्णय से जीत के साथ भारत को बेहतरीन शुरुआत दी। उनकी जीत के बाद यशवर्धन (63.5 किग्रा) ने जीत हासिल की, जिन्होंने ईरान के मिरहमादी बाबाहेदरी पर 4-1 से जीत हासिल की। दूसरी ओर, प्रियांशु (71 किग्रा) और साहिल (80 किग्रा) को जरा भी पसीना नहीं बहाना पड़ा और उन्होंने क्रमशः चीनी ताइपे के वू यू एन और तुर्कमेनिस्तान के यकलीमोव अब्दिरहमा के खिलाफ रेफरी स्टॉप द कॉन्टेस्ट (आरएससी) के फैसले के साथ मुकाबला अपने नाम कर लिया।

इस बीच, जतिन ने 57 किग्रा वर्ग में अपना अभियान उज्बेकिस्तान के ए नोदिरबेक के खिलाफ 1-4 से हार के साथ समाप्त किया। यूथ सेमीफाइनल शुक्रवार को खेला जाएगा। आर्यन (92 किग्रा), निशा (52 किग्रा), आकांशा फलसवाल (70 किग्रा) और रुद्रिका (75 किग्रा) अपने-अपने युवा क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में आज उतरेंगे। मंगलवार देर रात जुगनू (86 किग्रा), तम्मना (50 किग्रा) और प्रीति (54 किग्रा) ने जीत हासिल कर अंडर-22 सेमीफाइनल में प्रवेश किया।

गुरुवार को आठ अंडर-22 मुक्केबाज अपने क्वार्टर फाइनल मुकाबलों के लिए रिंग में उतरेंगे, एम जदुमणि सिंह (51 किग्रा), आशीष (54 किग्रा), निखिल (57 किग्रा), अजय कुमार (63.5 किग्रा), अंकुश (71 किग्रा) और ध्रुव सिंह। पुरुष वर्ग में (80 किग्रा) जबकि महिला वर्ग में गुड्डी (48 किग्रा) और पूनम (57 किग्रा) अपनी चुनौती रखेंगी। यूथ और अंडर-22 वर्ग का फाइनल क्रमशः 6 और 7 मई को खेला जाएगा।

दीपक चाहर की चोट पर सीएसके के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने दिया अपडेट

चेन्नई, एजेंसी। चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के मुख्य कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने तेज गेंदबाज दीपक चाहर की चोट के बारे में अपडेट दिया और कहा कि 31 वर्षीय खिलाड़ी अच्छे नहीं दिखते। बुधवार को पंजाब किंग्स (पीबीकेएस) के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2024 के मुकाबले के दौरान चाहर गेंदबाजी करते समय चोट लगने के बाद मैदान से बाहर चले गए।

उन्हें दूसरी पारी का पहला ओवर दिया गया। दूसरी डिलीवरी के तुरंत बाद सीएसके के गेंदबाज ने कप्तान रुतुताज गायकवाड़ से बात की और अपने स्पेल में सिर्फ दो गेंदें फेंकने के बाद मैदान से बाहर चले गए। चाहर के स्पेल की बाकी चार गेंदें पूरी करने के लिए शार्दुल ठाकुर को बुलाया गया। मैच के बाद फ्लेमिंग ने कहा कि चाहर की चोट बहुत अच्छी नहीं थी। उन्होंने कहा कि सीएसके टीम प्रबंधन अधिक सकारात्मक रिपोर्ट की प्रतीक्षा कर रहा है। मुख्य कोच ने कहा कि तुषार देशपांडे इस समय फ्लू से पीड़ित हैं जिसके कारण उन्हें अंतिम एकादश में शामिल नहीं किया गया है। फ्लेमिंग ने कहा, दीपक चाहर अच्छे नहीं दिखते। शुरुआती अहसास अच्छा नहीं था। इसलिए हम और सकारात्मक रिपोर्ट का इंतजार कर रहे हैं। फिजियो और डॉक्टर देखेंगे।

संक्षिप्त समाचार

वास्तु दोष हटाने के नाम पर बार-बार रेप, आरोपी को गिरफ्तार

सूरत, एजेंसी। गुजरात में एक 42 साल की महिला के साथ फेसबुक पर बने उसके एक दोस्त ने हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं। आरोपी ने वास्तु दोष हटाने के नाम पर बार-बार महिला का रेप किया। उसने उसकी अश्लील तस्वीरें भी अपने फोन में खींच ली, जिसे वायरल करने की धमकी देकर वह उसे ब्लैकमेल करता रहा और अपनी हवस की आग मिटाता रहा। पुलिस ने 44 साल के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। वह खुद को वास्तु एक्सपर्ट बताया था। उसकी पहचान राहुल पांड्या के रूप में हुई है। यह सूरत का मामला है। रिपोर्ट के मुताबिक, पीड़िता और आरोपी की बातचीत साल 2021 में फेसबुक पर शुरू हुई थी। दोनों के बीच धीरे-धीरे दोस्ती हो गई। एक दिन महिला ने आरोपी राहुल पांड्या को अपनी आर्थिक समस्याओं के बारे में बताया। इस पर राहुल ने कहा कि उसे वास्तु शास्त्र की जानकारी है और वह उसकी सारी समस्याओं को दूर कर सकता है। महिला ने उस पर भरोसा कर लिया और उसे अपने घर बुलाया। राहुल पांड्या महिला के घर पहुंचा और उसे बताया कि बाथरूम और बेडरूम वास्तु के हिसाब से सही जगह पर नहीं है। फिर उसने कहा कि वास्तु दोष हटाने के लिए अनुष्ठान करना होगा। उसने महिला को बेडरूम के दरवाजे के पास खड़ा होने को कहा और दोष हटाने के लिए उसके माथे पर किस करने की कोशिश करने लगा। इसपर महिला ने आपत्ति जताई।

बॉबी देओल ने अपनी कामयाबी का श्रेय अपने पिता धर्मेंद्र को दिया!

मुंबई, एजेंसी। कामयाबी का पूरा मज़ा लेते हुए, द ग्रेट इंडियन कपिल शो अपने लॉन्च के बाद से ही हर हफ़्ते कामयाबी के झंडे गाड़ रहा है। नेटफ्लिक्स का द ग्रेट इंडियन कपिल शो आगामी शनिवार को अपने अगले एपिसोड में बॉलीवुड की सबसे मशहूर देओल भाईयों की जोड़ी (सनी और बॉबी देओल) को ला रहा है। इस एपिसोड में, देओल बंधु पुरानी यादों से लेकर अपनी आज की कामयाबियों के लिए शुक्रिया करने तक, दर्शकों से सब कुछ शेयर करते हैं, लेकिन सबसे मीठे होते हैं वो पल, जब बॉबी देओल अपने पिता धर्मेंद्र जी के बारे में एक दिल छू लेने वाली कहानी बताते हैं। कामयाबी के शानदार साल और एनिमल में अबरार के रूप में अपने शानदार अभिनय से ज़बरदस्त सराहना हासिल करने के बाद, बॉबी देओल सातवें आसमान पर हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि असल में ऐसी एक क्या बात हुई जिसने उनके दिल को छू लिया ? बॉबी एनिमल की ज़बरदस्त कामयाबी के बाद अपने महान पिता से हुई बातचीत के बारे में बताते हैं, जहाँ दिग्गज आइकन खुद को अपने बेटे की प्रशंसा करने से नहीं रोक पाये। इस घटना के बारे में बॉबी देओल कहते हैं, हर बेटा अपने पिता की आंखों में वह खुशी देखना चाहता है और मैंने हमेशा अपने पिता का बहुत सम्मान किया है... मैं एक हफ़्ते बाद घर लौटा था और पिताजी इंस्टाग्राम पर स्क्रॉल कर रहे थे, उन्होंने मुझे रोका और बोले बॉब, लोग तुम्हारे दीवाने हो गये हैं।

आधी मुंबई बनेगी एकनाथ शिंदे - उद्धव की गवाह, पहली बार कांग्रेस को वोट देंगे ठाकरे

मुंबई, एजेंसी। मुंबई की छह लोकसभा सीट पर चुनावी मुकाबलों के लिए तलवारें खिंच गई हैं, जहां एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) तीन सीट पर आमने-सामने होंगी। मुंबई की दो सीट पर चिर प्रतिद्वंद्वियों भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और कांग्रेस के बीच मुकाबला होगा जबकि एक सीट पर शिवसेना (यूबीटी) और भाजपा आमने-सामने होंगी। मुंबई के छह निर्वाचन क्षेत्रों में मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण-मध्य, मुंबई उत्तर, मुंबई उत्तर-मध्य, मुंबई उत्तर-पूर्व, मुंबई उत्तर-पश्चिम शामिल हैं। ये महाराष्ट्र की उन 13 सीट में शामिल हैं, जिन पर 20 मई को लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण में मतदान होगा। मुंबई दक्षिण, मुंबई दक्षिण-मध्य और मुंबई उत्तर-पश्चिम में शिवसेना और शिवसेना (यूबीटी) के बीच मुकाबला होगा, जबकि मुंबई उत्तर-पूर्व में भाजपा और शिवसेना (यूबीटी) आमने-सामने होंगी। मुंबई दक्षिण में, उद्धव ठाकरे की पार्टी के मौजूदा सांसद अरविंद सावंत का मुकाबला शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना की यामिनी जाधव से होगा। जाधव मुंबई के भायखला विधानसभा क्षेत्र से विधायक हैं।

दिल्ली में बारिश का अलर्ट, लोगों को भीषण गर्मी से मिलेगी निजात

नईदिल्ली, एजेंसी। दिल्ली-एनसीआर में रहने वाले लोगों को मई के पहले हफ्ते भीषण गर्मी का अहसास नहीं होगा। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) के अनुसार, तीन मई तक दिल्ली में अधिकतम तापमान 38 डिग्री सेल्सियस के आसपास रहने की संभावना है। इस दौरान 35 से 45 किलोमीटर की रफ्तार से हवाएं चलेंगी। मौसम वैज्ञानिकों का कहना है कि तेज हवा और हल्के बादलों की आवाजाही के कारण दिल्ली-एनसीआर में तापमान सामान्य के आसपास रहेगा। मौसम विभाग ने 4 मई को आंशिक रूप से बादल छाए रहने और रात में हल्की बारिश का पूर्वानुमान जताया है।

दिल्ली का अधिकतम तापमान बुधवार को गिरकर 33.7 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जो सामान्य

से पांच डिग्री कम है। आईएमडी ने यह जानकारी दी है। वहीं, न्यूनतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया जो सामान्य से चार डिग्री सेल्सियस कम है। राष्ट्रीय राजधानी में मंगलवार को अधिकतम तापमान 36.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था, जो सामान्य से तीन डिग्री कम था। वैज्ञानिक और क्षेत्रीय मौसम पूर्वानुमान केंद्र के प्रमुख कुलदीप श्रीवास्तव ने न्यूज एजेंसी पीटीआई को बताया कि दो मई के बाद राजधानी में तापमान फिर से बढ़ने लगेगा। तीन से छह मई तक आसमान में बादल छाए रहेंगे, बूंदाबांदी हो सकती है।

मौसम कार्यालय ने गुरुवार को आसमान साफ रहने और दिन के दौरान 35 से 45 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तेज हवाएं चलने का अनुमान लगाया है। आईएमडी के पूर्वानुमान के मुताबिक, शनिवार को दिल्ली में आंधी आने और हल्की बारिश होने के आसार हैं। आईएमडी के आंकड़ों के मुताबिक, 2023 में एक मई को अधिकतम तापमान 28.7 डिग्री सेल्सियस रहा था जबकि 2022 में 43.5, 2021 में 40, 2020 में 38.8 और 2019 में 44 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था।

मौसम विभाग के मुताबिक, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र समेत उत्तर भारत के ज्यादातर हिस्सों में मई का अधिकतम तापमान सामान्य से ज्यादा रहने की संभावना है। इस बार मई की गर्मी लोगों को कुछ ज्यादा ही झुलसाएगी। वहीं दिल्ली-एनसीआर में चार से छह मई के बीच बारिश, आंधी तूफान की संभावना है।

ए.एम.बी. कार्यक्रम ने मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ाया: अमीशा

अनीमिया को हराने की अमीशा की सफल यात्रा

भोपाल, एजेंसी मध्यप्रदेश के देवास जिले में युवाओं के सेहत और स्वास्थ्य के स्तर में में धीरे-धीरे सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है। इस परिवर्तन की साक्षी है जिले की एक होनहार छात्रा अमीशा जो अनीमिया मुक्त भारत (एएमबी) कार्यक्रम की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रतीक है। अमीशा की कहानी उसकी आयु की कई अन्य लड़कियों के साथ शुरू हुई, जिनके बीच अनीमिया एक अदृश्य बीमारी की तरह अपनी जड़ें जमाता जा रहा था 7 अनीमिया के लक्षण शरीर के थके रहने, पीला पड़ने, ध्यान लगाने की क्षमता में कमी के रूप में प्रकट होते हैं। अनीमिया ने अमीशा के जीवन पर गहरा असर डाला, और उनके सपनों एवं महत्वाकांक्षाओं के मार्ग को धूमिल कर दिया। लेकिन इन कठिनाइयों के बीच ए.एम.बी. कार्यक्रम आशा की एक किरण बनकर उभरा है । मध्य प्रदेश सरकार के नेतृत्व में संचालित और न्यूट्रिशन इंटरनेशनल द्वारा समर्थित अनीमिया मुक्त भारत कार्यक्रम का उद्देश्य अनीमिया से बचाव एवं रोकथाम है। अमीशा के लिए अनीमिया से लड़ने का मतलब आयरन और फोलिक एसिड (आईएफए) की नियमित खुराक लेना था। यह एक आसान लेकिन दमदार तरीका है जिससे उसकी ऊर्जा और एकाग्रता को बढ़ाया जा सकता है । अमीशा पहले साप्ताहिक आई.एफ.ए. का सेवन करने के लिए इच्छुक नहीं थी।

बंगाल की आसनसोल सीट पर कभी वामपंथियों का बोलबाला, 2019 में भाजपा जीती

आसनसोल, एजेंसी। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए दो चरणों का मतदान हो चुका है। आगामी 7 मई को तीसरे चरण का मतदान किया जाना है। पश्चिम बंगाल में इस बार भाजपा पूरा जोर लगा रही है कि 2019 से बेहतर प्रदर्शन कर सके। उधर, ममता बनर्जी की टीम की पूरी कोशिश है कि वह अपने गढ़ में भाजपा को बुरी तरह हराए। इस बार लोकसभा चुनाव में आसनसोल पश्चिम बंगाल की हॉट सीटों में एक है। इसका इतिहास काफी रोचक है। यह सीट कभी माकपा का गढ़ हुआ करती थी। अब इस सीट पर भाजपा और तृणमूल कांग्रेस के बीच वर्चस्व की जंग चल रही है। 2019 में भाजपा जरूर जीती लेकिन, 2022 उपचुनाव में टीएमसी बाजी मार गई। इस सीट पर 13 मई को मतदान होना है। आसनसोल लोकसभा सीट पर 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जीत दर्ज की थी। बाबुल सुप्रियो के भाजपा छोड़ने के बाद सीपीआई के इस किले में टीएमसी ने 2022 के उपचुनाव में सेंध लगाई। अभिनेता से नेता बने शत्रुघ्न सिन्हा इस सीट पर विजयी हुए। टीएमसी ने एक बार फिर उन पर

दांव लगाया है। वहीं उप-चुनाव में सीट गंवाने वाली भाजपा ने जीत पक्की करने के लिए भाजपा नेता एसएस आहलूवालिया को मैदान में उतारा है। दोनों दल दावा कर रहे कि वे इस बार रिकॉर्ड वोटों से जीत दर्ज करेंगे।

एसएस आहलूवालिया 2014 के आम चुनाव में दार्जलिंग और 2019 के चुनाव में बर्दवान-दुर्गापुर सीट से चुनाव जीत चुके हैं। हालांकि असानसोल लोकसभा क्षेत्र के अंतर्गत सात सीटें आती हैं। इसमें से पांडवेश्वर, रानीगंज, जमूरिया, आसनसोल उत्तर, बारबानी पर तृणमूल कांग्रेस का कब्जा है। वहीं दो सीटें कुल्टी व आसनसोल दक्षिण पर भाजपा का कब्जा है।

उधर, आसनसोल से चुनाव लड़ रहे शत्रुघ्न सिन्हा ने कहा है कि जनता मुझे रिकॉर्ड बहुमत से संसद पहुंचाएगी। मेरी जीत का पिछला रिकॉर्ड भी इस बार टूट जाएगा। आसनसोल संसदीय क्षेत्र से लगातार पिछड़ रही तृणमूल की जीत का सपना शत्रुघ्न सिन्हा ने ही साकार किया है। 2014 और 2019 के लोकसभा चुनाव में तृणमूल कांग्रेस के नेताओं ने विजेता बनने के लिए काफी मेहनत की थी। हालांकि भाजपा ने यहां बाजी मार ली थी।

ट्रेन में पैसेंजर को हुई पानी की समस्या तो सोशल मीडिया पर शेयर किया पोस्ट

नईदिल्ली, एजेंसी। भारतीय सरकार द्वारा रेलवे में मिलने वाली व्यवस्थाओं को लेकर बड़े बड़े दावे करने के बीच सोशल मीडिया ङ्क पर एक वीडियो जमकर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में एक व्यक्ति ने ट्रेन के स्टाफ द्वारा पानी नहीं देने का वीडियो पोस्ट किया है।

बता दें कि अभिनव सिंह नाम के ङ्क यूजर ने एक ट्वीट किया। जिसमें उन्होंने लिखा कि भारतीय रेलवे में पानी के लिए संघर्ष वास्तविक है। मैं अकेला नहीं था, 5 और लोगों को पानी चाहिए था। मैं दरवाजा तोड़ने वाला था फिर एक ने आकर मुझे बोतल लाके दिया!!

सिंह ने अपने ट्वीट में एक वीडियो और एक फोटो भी शेयर की। एक वीडियो में उन्हें एक रेलवे कर्मचारी से पानी मांगते हुए देखा जा सकता है, जो सिंह को पानी देने के लिए मना करता हुआ दिखाई दे रहा है। दूसरी तस्वीर में दो लोग पानी की बोतलें पकड़े हुए हैं।

ट्वीट शेयर होने के बाद से ही काफी वायरल हो गया है। इस पोस्ट को अब तक 69 हजार से अधिक बार देखा जा चुका है। इस ट्वीट को अब तक लगभग 300 लाइक्स मिल चुके हैं। लोगों ने शेयर पर प्रतिक्रिया

देते हुए तरह-तरह के कमेंट भी पोस्ट किए हैं।

भारतीय रेलवे से जुड़ी इस पोस्ट पर एक्स यूजर्स ने क्या कहा?ङ्क एक एक्स उपयोगकर्ता ने ट्वीट कर अपना गुस्सा जाहिर किया। उन्होंने लिखा, यह कैसी सेवा है? पूरी तरह से सेवा डाउनग्रेड हो गई है।

दूसरे यूजर ने लिखा, वंदे भारत में उन्होंने 1 लीटर से 500 मिलीलीटर की बोतलें शुरू कीं। पूछने पर, मैं भाग्यशाली था कि मुझे एक और बोतल मिल गई, लेकिन सह-यात्रियों में से एक को दूसरी बोतल के लिए भुगतान करने के लिए कहा गया। कोई व्यवस्था नहीं है।

तीसरे यूजर ने लिखा, वास्तव में ये बुरा व्यवहार है और मैंने अपने ?10 भी खो दिए जब उस आदमी ने मुझसे कहा कि चेंज नहीं है अभी ला के देता हूं (मेरे पास चेंज नहीं है, थोड़ी देर में लाऊंगा) लेकिन वो दोबारा आया ही नहीं।

मेक्सिको की खाड़ी में मिला दुनिया का सबसे गहरा ताम जा ब्लू होल, नहीं जा सका है कोई गोताखोर व सबमरीन

मेक्सिको सिटी, एजेंसी। मेक्सिको में दुनिया सबसे गहरा ब्लू होल मिला है। यह मेक्सिको के युकाटन प्रायद्वीप के चेतुमल खाड़ी में है। इसका नाम है 'ताम जा ब्लू होल'। अभी तक वैज्ञानिक इसकी गहराई नाप नहीं पाए हैं लेकिन शुरुआती गणना के अनुसार ये करीब 1,380 फीट गहरा है और समुद्र के नीचे की सतह में है। इससे पहले सबसे गहरे गड्ढे का रिकॉर्ड दक्षिणी चीन सागर में मौजूद ड्रैगन होल के नाम था। यह 990 फीट गहरा था। जबकि, ताम जा ब्लू होल चीन के गड्ढे से 390 फीट ज्यादा गहरा है। पिछले वर्ष छह दिसंबर को गोताखोरों ने इस गड्ढे को ढूंढ निकाला था। इस संबंध में बीते 29 अप्रैल को फ्रंटियर्स इन मरीन साइंस जर्नल में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई थी। वैज्ञानिकों ने इसकी गहराई नापने के लिए कंडक्टिविटी, टेंपरेचर एंड डेप्थ प्रोफाइलर (सीटीडी) तकनीक का इस्तेमाल किया। इससे समंदर के नीचे की सतह का रियल टाइम डेटा मिलता है। जिससे पता चलता है कि यह दुनिया का सबसे गहरा ब्लू होल है। जिसकी तलहटी तक अभी कोई गोताखोर या सबमरीन जा नहीं पाई है। सीटीडी प्रोफाइलर से यह भी पता चला है कि 1,312 फीट की गहराई में इस गड्ढे से कई गुफाएं और सुरंगें भी निकलती हैं। जो आपस में जुड़ी हुई हैं।

राफा में नरसंहार रोकने की कोशिश; नेतन्याहू को मनाने में जुटा अमेरिका, हमास भी अड़ा

राफा, एजेंसी। दक्षिण गाजा के शहर राफा में नरसंहार का खतरा लगातार मंडरा रहा है। इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू किसी भी कीमत पर हमास के खिलाफ जंग नहीं छोड़ने की बात दोहरा चुके हैं। उन्होंने अब राफा में ऑपरेशन शुरू करने की बात कही है। राफा में गाजा से भाग आए 10 लाख शरणार्थी हैं। नेतन्याहू के ऐलान के बाद अमेरिका समेत पूरी दुनिया को नए नरसंहार का डर है। इसलिए अमेरिका समेत कई देश हमास और इजरायल को मनाने में जुटे हैं। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने पहले हमास अधिकारियों को अलर्ट किया कि उनके पास डील मानने का अभी भी वक्त है। उधर, बुधवार को ब्लिंकन ने नेतन्याहू से भी मुलाकात की। दोनों नेताओं के बीच मुलाकात का मुख्य मकसद राफा में जंग रोकना है।

अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने बुधवार को इज़रायल में प्रधान मंत्री नेतन्याहू से मुलाकात की, यह पश्चिम एशिया दौरे पर उनका नवीनतम पड़ाव है। राष्ट्रपति बाइडेन इज़रायल को दक्षिणी गाजा के एक शहर राफा पर हमला करने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं, जहां लाखों फिलिस्तीनियों ने गाजा युद्ध के दौरान शरण ले रखी है। ब्लिंकन और बाइडेन

प्रशासन सिर्फ इजरायल ही नहीं हमास से भी बंधकों को मुक्त करने के लिए नई डील पर सहमत होने का आह्वान कर रहे हैं।

महीनों से चल रही वार्ता: नई डील में मुख्य बाते हैं- छह सप्ताह का युद्धविराम और कुछ फ़िलिस्तीनी कैदियों की रिहाई। अमेरिकी अधिकारियों का कहना है कि उन्हें उम्मीद है कि अस्थायी युद्धविराम से स्थायी युद्धविराम हो सकेगा। हालांकि अमेरिका की उम्मीदों को तब झटका लगा जब नेतन्याहू ने बंधकों के परिवारवालों से मुलाकात के दौरान कसम खाई कि वे जल्द ही राफा में नया ऑपरेशन शुरू करेंगे। नेतन्याहू के ऐलान से अब नए कत्लेआम का खतरा पैदा हो गया है। युद्धविराम वार्ता महीनों से रुकी हुई है और इज़रायली अधिकारियों ने कहा है कि वे अपनी मांगें कम करने पर सहमत हुए हैं। वे अब हमास से कम से कम 33 नागरिकों को मुक्त कराने पर राजी हैं, जिन्हें तत्काल मेडिकल सुविधा की आवश्यकता है।

मानवाधिकार संगठन का आरोप- सोशल मीडिया पोस्ट के लिए हुई सजा

दुबई, एजेंसी। मुस्लिम देश सऊदी अरब महिला अधिकारों के दमन को लेकर जाना जाता है। हाल के सालों में महिलाओं के लिए कई सुधार किए हैं। फिर भी काफी हद तक यह देश पीछे ही है। दरअसल, यहां एक 29 साल की फिटनेस इंस्ट्रक्टर को उसके कपड़ों और सोशल मीडिया पर पोस्ट किए जाने को लेकर 11 साल की जेल की सजा सुनाई गई है। हालांकि, इंस्ट्रक्टर के बचाव में मानवाधिकार संगठन एमनेस्टी इंटरनेशनल उतर आया है। उसने सऊदी अरब से महिला को सजा से रिहा किए जाने को कहा है। साथ ही देश की पुरुष को बढ़ावा देने वाली प्रणाली को खत्म करने का आग्रह किया है।

संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार कार्यालय के अनुरोध पर सऊदी अरब के औपचारिक जवाब सामने आने पर लंदन स्थित एमनेस्टी ने मंगलवार को कहा कि मनाहेल अल-ओतैबी को जनवरी में सजा सुनाई गई थी।एमनेस्टी और लंदन स्थित अल-क्यूस्ट का कहना है कि ओतैबी पर

आरोप लगाया गया था कि उसने सोशल मीडिया पर पुरुष संरक्षकता को खत्म करें पोस्ट किया और साथ ही उसके वीडियो सामने आए, जिसमें उसने ढंग के कपड़े नहीं पहने थे। हालांकि, इन सब पर जब एक न्यूज एजेंसी ने सऊदी अरब के अंतरराष्ट्रीय मीडिया कार्यालय से जानकारी लेनी चाहिए, तो सवालों का जवाब नहीं दिया गया। वहीं, सऊदी अरब ने संयुक्त राष्ट्र के अधिकार कार्यालय को अपने औपचारिक जवाब में इस बात से इनकार किया कि अल-ओतैबी को सोशल मीडिया पोस्ट के लिए सजा सुनाई गई थी। इसमें कहा गया कि उन्हें आतंकवादी अपराधों के लिए दोषी ठहराया गया था, जिसका उनके विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रयोग या उनके सोशल मीडिया पोस्ट से कोई लेना-देना नहीं है।

ओतैबी की बहन पर भी आरोप: एमनेस्टी के अनुसार, अल-ओतैबी की बहन फौजिया पर भी इसी तरह के आरोप लगाए गए हैं, लेकिन 2022 में पूछताछ के लिए बुलाए जाने के बाद वह सऊदी अरब से भाग गई थी। सऊदी अरब पर एमनेस्टी के प्रचारक बिसान फकीह ने कहा कि ऐसी सजाओं के चलते सऊदी ने हाल के वर्षों में महिला अधिकार सुधारों की योजना के खोखलेपन को उजागर किया है। महिलों की बात को दबाने के लिए अपनी प्रतिबद्धता का प्रदर्शन किया है।

सऊदी अरब एक कट्टर इस्लामिक देश है, जो पहले वहाबी विचारधारा का सबसे बड़ा समर्थक था। पर साल 2017 में सऊदी अरब के क्राउन प्रिंस मोहम्मद बिन सलमान ने महिलाओं की स्थिति में बदलाव लाने का वादा किया और सत्ता में आ गए। हालांकि, सत्ता में आने के बाद उन्होंने पुरुष संरक्षकता कानूनों में कुछ प्रतिबंधों में ढील दी।

चीन में सड़क धंसने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 36 हुई

शेन्ज़ेन (चीन), एजेंसी। चीन के गुआंग्डोंग प्रांत में सड़क धंसने से मरने वालों की संख्या बढ़कर 36 हो गई। समाचार एजेंसी शिन्हुआ ने गुरुवार को बताया कि सड़क धंसने से नीचे गिरे तीन और वाहनों की तलाश जारी है। चीनी मीडिया ने पहले 24 मौतों की खबर दी थी। इस क्षेत्र में कई दिनों से भारी बारिश हो रही है, जिसके चलते मेइझोउ-डाबू एक्सप्रेस वे पर मेइझोउ शहर के पास सड़क का 18 मीटर लंबा हिस्सा धंस गया। प्रत्यक्षदर्शियों ने स्थानीय मीडिया को बताया कि उन्होंने जोरदार आवाज सुनी और सड़क पर कई मीटर चौड़ा एक गड्ढा देखा, जो धंसा हुआ था। दुर्घटना के कारणों की जांच की जा रही है। बता दें कि गुआंगडोंग प्रांत में असामान्य रूप से भारी बारिश हो रही है। पर्ल नदी में बाढ़ आ गई है। गुआंगजौ के कस्बों और गांवों में बाढ़ का अलर्ट जारी किया गया है। एक सरकारी बयान के अनुसार, हादसे में 30 लोग घायल हुए हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, संपादक देवन प्रसाद द्वारा आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, ए-24, सेक्टर-8, नोएडा, उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं - बी-126, मायापुरी इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित। सह संपादकः रंजीत राय फोन नं-011-45795464 (नोटः प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा दिल्ली उच्च न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. DELHIN/2010/32488, Email: news@pratahkiran.com, मो. 9212228045, 8130691216, 9971557129